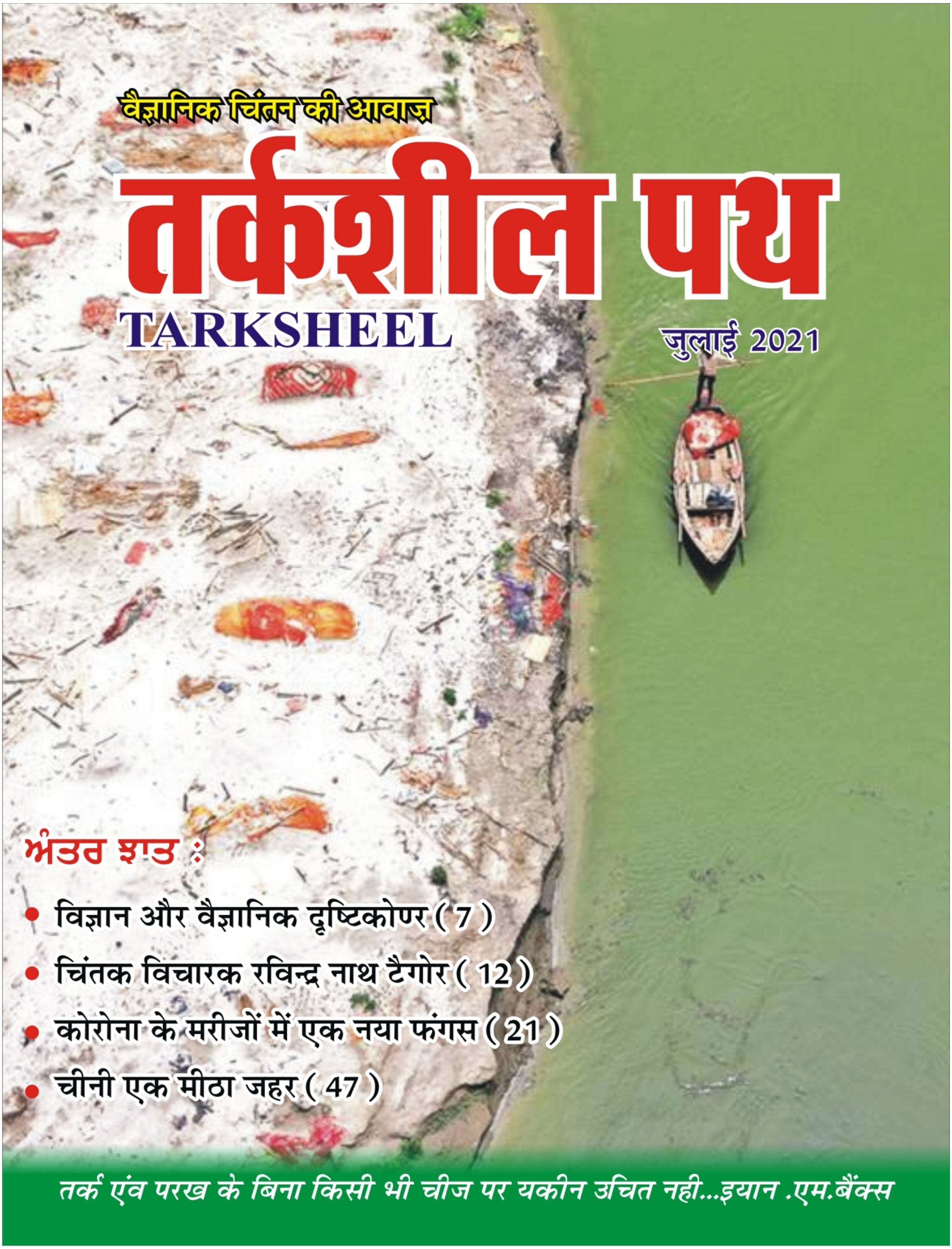


वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जुलाई 2021

ਅੰਤਰ ਝਾਤ :

तर्क एंव परख के बिना किसी भी चीज पर यकीन उचित नही...इयान .एम.बैंक्स

तुमने और हमने

-सुनील प्रेम

तुमने और हमने
मंदिर और मस्जिद बनाए
चर्च और गुरुद्वारे बनाए
इससे क्या हुआ
इनके बनने से कितने इन्सान बन पाए
धर्म युद्ध हुए
इन्सान तबाह हुए
स्त्री और बच्चे कटे
इन्सान बंटे
फिर भी हम
अपने बच्चों को धार्मिक संस्थान बनाकर
पाखण्डवाद अंधविश्वास अपनाकर
उनको मानसिक गुलाम बना रहे हें
उनके लिए जहालत की दुनिया
बनाकर दे रहे हैं
अपनी तो काट ली जिन्दगी
ऐसे तैसे
लेकिन आने वाली पीढ़ी को
मानसिक गुलामी जैसी दुनिया
बनाकर मत दो
धार्मिक संस्थानमत बनाकर दो

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क Paytm के माध्यम से मोबाईल नम्बर 9416036203 पर या कोड को स्कैन करके भी भेजा जा सकता है। शुल्क भेजने के बाद इसी मोबाइल नम्बर पर अपना पता SMS या WhatsApp करें।

Reg.No.HARHIN/2014/60580

संपादक : बलवन्त सिंह - 94163-24802

संपादक सहयोग :-

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

https://tarksheelpath.blogspot.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संकेतिका

आगामी मीटिंग के बारे

करोना महामारी के चलते तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक मीटिंग अनिश्चित है। जैसी भी स्थिति होगी, तर्कशील साथियों को समय-समय पर सूचित कर दिया जायेगा।

नोट : किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ कुरुक्षेत्र (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

सम्पादकीय

कोरोना काल मे विज्ञान की भूमिका

दिसम्बर 2019 जब से कोविड- 19 वायरस का फैलाव विश्व भर में शुरू हुआ, लोग डर के साए में जीने को विवश होते गए। मानव शरीर समेत हर प्रकार की गतिविधियों पर इसके कुप्रभाव पड़े। धर्म, ईश्वर में अटूट विश्वास रखने वाले लोग भी डगमगाने लग गए, लेकिन जिनका धंधा धर्म, ईश्वर को व्यापार बना कर चल रहा था वे भी चिंतित हो उठे। सब कुछ एक तरफ रख कर पूरे विश्व के मानव का एक ही विश्वास बना कि विज्ञान ही अब सहारा है। यह ही मानवता को बचा सकता है। सब की नजर विश्व में चलते उन वैज्ञानिक प्रयोगों की तरफ लगी रही कि कब इस महामारी से छुटकारा दिलाने की वैक्सीन बनने की खबर आए। वैज्ञानिकों, चिकित्सकों ने अथक मेहनत से कम समय में, जितना सम्भव हो सका वह कर दिखाया। किसी भी वैक्सीन के विकसित होने के अनेक चरण होते हैं जिसमें तीन साल से ज्यादा का समय लगता है, लेकिन कोविड 19 वायरस को निरस्त करने के लिए जल्द ही वैक्सीन ईजाद कर ली गई। इसके बाद इसे जन-जन तक इसे लगाने की कार्य योजना बनने लगी। लेकिन साथ ही वे तत्व जो हर समाज मे मौजूद होते हैं, अपने उसी पुरातन रूप में सामने आने लगे और वैक्सीन विरोधी प्रचार में डट गए। कुछ जाने अनजाने में इन का शिकार बन ऐसी अफवाहों को फैलाने में लग गए।

भारत के लोग भी इन अफवाहों का शिकार हुए। यह दुष्प्रचार हम चेचक व पोलियो की बीमारी के बने टीके, दवाई के खिलाफ भी हम दशकों पूर्व देख चुके हैं। चेचक को तो माता तक बना दिया गया था, लाखों लोग इसकी पूजा करने लग गए गए थे। चेचक का टीका लोग लगवाने को तैयार ही नही होते थे। सरकार ने चेचक का केस बताने वाले को ईनाम तक देने की घोषणा करनी पड़ी थी। इसी प्रकार कोरोना को भी देवी बनाने के प्रपंच कुछ लोगों ने रचे, लेकिन प्रशासन की सतर्कता से यह सब फैल न सका। ऐसा ही दुष्प्रचार पोलियो दवाई के खिलाफ भी चला था। दुष्प्रचार किया गया कि यह जनसँख्या कम करने का षडयंत्र है, इससे नपुंसकता फैलती है। कट्टर इस्लामी मुल्कों अफगानिस्तान, पाकिस्तान में आज भी पोलियो के केस आते हैं, वहां पर भी ऐसे ही दुष्प्रचार के कारण इस अभियान में लगे डाक्टरों, नर्सो पर कट्टरपंथी हमले करते हैं। भारत मे यह दुष्प्रचार ज्यादा न चल सका और सरकारें पोलियो उन्मूलन में सफल रहीं। अब कोरोना की वैक्सीन को लेकर भी दशकों पुरानी अफवाहों के साथ ही कुछ ऐसी कहानियां भी गढ़ी गईं।

अब जबकि हम इस दिशा में काफी आगे बढ़ चुके हैं, जरूरत है कि हमें विज्ञान पर भरोसा करना चाहिए। एक दिन वैज्ञानिक पद्धति से ही कोविड का भी खात्मा होगा। आने वाले समय मे वैक्सीन में और सुधार होंगे और यह ज्यादा लाभदायक बनेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व पूंजीवाद जरूर इससे लाभ उठाएगा, लेकिन फिर भी चेचक, हैजा, पोलियो, टेटनस, टी.बी. आदि इंसानी बीमारियों की तरह कोविड-19 वायरस भी समाप्त होगा।

वैज्ञानिक तथ्यः

हवन में एक चम्मच घी से कितना ऑक्सीजन पैदा होता है?

-प्रोफेसर डॉ.ऋषि आचार्य

आजकल देश के धार्मिक जगत में विज्ञान की धूम मची हुई है। हर कोई प्राचीन धर्मशास्त्रों की पुरानी बातों में नया विज्ञान ढूंढ रहा है, और असल विज्ञान न मिले तो न सही, नकल को ही असल समझा कर बेचा जा रहा है। क्या ज्योतिष, क्या वास्तुशास्त्र और क्या ध्यान-योगासन, सभी वैज्ञानिकता का बाना पहन कर नए-नए मेकअप कर मैदान में उतर रहे है। जिन बाबाओं और पीरों ने छठी कक्षा तक भी विज्ञान नहीं पढ़ा है, वे भी खुद को साईंटिस्ट बनाकर खूब जेब काट रहे है।

वायु प्रदुषण के इस भीषण संकट में एक और दावा सुर्खियों में है, हवन की वैज्ञानिकता का। हजारों साल पहले निकले इस वैदिक कर्मकांड को बारिश करवाने से लेकर वायु प्रदुषण दूर करने और जरुरत पड़ने पर एड्स, कैंसर और मधुमेह जैसी गंभीर बीमारियों तक को दूर करने वाला साबित किया जा रहा है।

हवन की वैज्ञानिकता की बात निकली तो हमारे अंधभक्त भाई-बहन न आगे देख रहे हैं, न पीछे। एक खबर के अनुसार, बीते साल मेरठ में 500 क्विंटल लकड़ियों को हवन में जलाकर एक संगठन ने जबरदस्त वाहवाही लूटी, आखिर पर्यावरण संतुलन का अचूक उपाय जो कर रहे थे।

आप लोगों को भी अक्सर व्हाट्सप्प पर ऐसे मैसेज देखने को मिल रहे होंगे, जिसमें रूस के एक वैज्ञानिक शिरोविच ने दावा किया कि हवन में लकड़ी पर एक चम्मच घी डालने से एक टन ऑक्सीजन पैदा होती है। कहीं जापान के वैज्ञानिक का दावा पेश किया जा रहा कि गाय के कंडे पर घी डालने से 2-3 किलोमीटर के हवा में से सारे बैक्टीरिया मर गए।

अब मजा यह है कि इन दावों के बारे में न तो रूस को कोई खबर है, न जापान को। विदेशों की भक्ति हमारे खून में से गई नहीं है। इसी का असर है कि जैसे ही दो-तीन विदेशी नाम देखने को मिल जाये, सारे सन्दर्भ को एक वैज्ञानिक प्रमाणपत्र अपने आप ही मिल जाता है और हम भी गर्व से सीना फुलाकर खुद से कहते है,''देखा, हम तो पहले ही से जगतगुरु है।''

लेकिन हम तर्कशील और विज्ञानवादी लोग इन सब दावों पर आँख मूँद नहीं सकते। इसलिए आइये इस लेख के माध्यम से जानें कि हवन-और यज्ञ के बारे में किये जा रहे इन दावों में कितनी सच्चाई है?

हवन की वैज्ञानिकता के इन दावों में प्रमुख बातें है

1. हवन से वायु प्रदुषण दूर होना
2. हवन से बीमारियाँ ठीक होना
3. हवन से पर्यावरण संतुलन होना

चलिए एक एक करके सभी बातों पर आते है।

दोस्तो! एक सन्देश में कहा गया कि हवन में आम की लकड़ी प्रयुक्त होती है, जो जलने पर ऑक्सीजन देती है, अब कोई 5वीं पास बच्चा भी यह बता सकता है कि किसी भी चीज के दहन में ऑक्सीजन जलती है, कभी पैदा नहीं होती। हवन में सबसे पहले लकड़ियों को जलाया जाता है, लेकिन उसके भी पहले उन लकड़ियों को जलाने के लिए जिस माचिस का प्रयोग हम करते है उस पर लगे बारूद के बारे में थोड़ा जानिए !

छोटी सी तीली और बड़ा प्रदूषणः

यह बारूद, माचिस की डिब्बियों की कीमत कम रखने के लिए एकदम निम्न दर्जे का मसाला वाला होता है। इस बारूद में फॉस्फोरस (phosphorus sesquisulfide) प्रयोग किया जाता है, जो रगड़ने पर आग पकड़ता है। लेकिन इसके जलते ही जो गैस निकलती है, वह हमारे स्वास्थ्य के लिए भयंकर हानिकारक होती है। इसके कुछ प्रमुख नुकसानों में है - आतों का इंफेक्शन, पेट में मरोड़, श्वसन तंत्र के विकार और जलन।

अब बात करते हैं, हवन में प्रयोग की जाने वाली दूसरी सामग्री 'कपूर' की।

नकल की इस दुनियाँ में कपूर भी असली और प्रकृतिक कपूर नहीं रहा। जब माँग बढ़ी तो

कंपनिया भी सस्ते और जल्दी कपूर बनाने के चक्कर में रासायनिक कपूर धड़ल्ले से बेच रही हैं। कृत्रिम कपूर तारपीन के तेल को बहुत सी केमिकल प्रक्रियाएं करने के बाद प्राप्त होता है। इसका रासायनिक फार्मूला $C_{10}H_{16}O$ है। यह पानी में अघुलनशील और अल्कोहल में घुलनशील होता है।

यह कपूर बहुत से कारखानों में प्रयोग किया जाता है, यह पालीविनायल क्लोराइड, सेलूलोस नाइट्रेट, पेंट, धुवां-रहित बारूद और कुछ खास प्रकार के प्लास्टिक, आदि के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है।

बच्चों के लिए कपूर जहर की तरह होता है। नकली कपूर के नुकसानों में त्वचा संक्रमण, श्वास की बीमारी, तंत्रिका तंत्र और किडनी की बीमारी और पेट संबधित रोग प्रमुख है। इस विषय पर अमर-उजाला नामक दैनिक अखबार 27 जुलाई 2016 को एक लेख भी छपा था जो आज भी इंटरनेटपर उपलब्ध है। इसी के चलते 1980 में ही अमेरिका ने स्थानीय बाजार में कपूर के तेल को प्रतिबंधित ही कर दिया था।

अब बात आती है हवन में प्रयोग होने वाली लकड़ी की।

यहाँ भी थोड़ी सी खोज के बाद एक बात साफ हो जाती है कि जब लकड़ी को जलाया जाता है तो भारी मात्रा में कार्बन डॉयऑक्साइड निकलती है। इसके अलावा अन्य कई विषैली गैसें जिसमें सबसे शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, मीथेन आदि भी निकलती हैं।

ये गैस कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में ग्रीनहाउस गैस के रूप में 300 गुना अधिक शक्तिशाली है और CO_2 से 21 गुना ज्यादा खतरनाक है, साथ ही यह वायुमंडल में 120 साल तक रहती है। इनका ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने में भी अप्रत्यक्ष हाथ माना गया है। सन्दर्भः एक fyad, दो L'fyad" एवं तीन L'fyad"। अब आईये देखते है कि लकड़ी के जलने पर जो धुआँ होता है उसमें क्या छुपा है?

सेहत के लिए अत्यंत हानिकारक :

धुआं गैसों और ठीक कणों के एक जटिल मिश्रण से बना होता है। जब लकड़ी और अन्य कार्बनिक पदार्थ जलते हैं, जिसमें 100 से अधिक खतरनाक रसायन होते हैं जो विषाक्त और कैंसरकारी (कैंसर पैदा करने वाले) होते हैं। जब सांस ली जाती है, तो ये महीन कण हमारे फेफड़ों में जा सकते हैं।

कुछ के लिए, यह धुँआ हृदय संबंधी समस्याओं जैसे कि एनजाइना और श्वसन संबंधी समस्याओं जैसे अस्थमा, वातस्फीति और ब्रोंकाइटिस को भी बढ़ा सकता है।

स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण को भी नुकसानः

लकड़ी का जलना, हवा में पार्टिकुलेट मैटर (PM&10) में 20प्रतिशत तक योगदान कर सकते हैं। हवा में कार्बन मोनोऑक्साइड का 15 प्रतिशत योगदान देता है। कार्बन मोनोऑक्साइड रक्त हीमोग्लोबिन के साथ बंध सकता है और ऑक्सीजन को शरीर में पहुंचने से रोक सकता है। एक गैर-प्रमाणित विधि से लकड़ी का चार घंटे तक दहन करने से उतनी कार्बन मोनोऑक्साइड का उत्सर्जन होता है जितना की एक कार को 20 मील चलाने से।

अन्य खतरनाक रसायनः

वैज्ञानिकों ने पाया है कि लकड़ी जलने से 100 से अधिक खतरनाक रसायन निकलते हैं जो विषाक्त और कैंसरकारी हो सकते हैं। इंडियन अकैडमी ऑफ साइंस के अनुसार, इनमें Carbon Monoxide 'CO½ Carbon Dioxide 'CO2', Nitrogen Oxides "NO & NO2½ , Sulfur Dioxid "SO2½ शामिल हैं।

यज्ञ पर कई वैज्ञानिक दावों की गहराई में जाकर छानबीन करने से पता लगता है कि जो लोग भी इस प्रकार के दावे कर रहे हैं, वे भी धीमी आवाज में यही कहते हैं कि यज्ञ के फायदे बहुत सी अन्य बातों पर निर्भर है जैसे कि सही लकड़ी, उसकी मोटाई, जलाने वाले हवन कुंड का आयतन, घी की शुद्धता, हवन सामग्री की गुणवत्ता, जलवायु और हवन करने की सही विधि आदि आदि।

अब आप खुद ही सोचिए धार्मिक कर्मकांड को इस प्रकार वैज्ञानिक रूप से हर बार संपन्न करना किस हद तक संभव है? दूसरी बड़ी बात आज जहाँ घर में आने वाले दूध तक में मिलावट हो रही है तो घी, लकड़ी, हवन सामग्री की गुणवत्ता और शुद्धत्ता की गारंटी कौन देगा?

यज्ञ को चिकित्सा के रूप में साबित करने वाली एक वेबसाइट का दावा है कि यज्ञ का हवा के कण आयनों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस दावे में कहा गया है कि नकारात्मक चार्ज किए गए आयनों का शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वे सेरोटोनिन

के स्तर को बढ़ाकर हमारे मनोदशा को बढ़ाते हैं, वे रक्तचाप को स्थिर करने में मदद करते हैं, शरीर की क्षारीयता को बढ़ाते हैं, हड्डियों को मजबूत करते हैं, प्रतिरक्षा को बढ़ाते हैं, शारीरिक फुर्ति में तेजी लाते हैं और हवा को शुद्ध और साफ करते हैं।

अब देखते है कि हकीकत क्या हैः

US National Library of Medicine National Institutes of Health Search Database पर इस बारे में तैंतीस अध्ययनों (1957-2012) में अवसाद, चिंता, मनोदशा की स्थिति और मनुष्यों में मानसिक कल्याण की व्यक्तिपरक भावनाओं पर वायु आयनीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन किया गया जिसमें चिंता, मनोदशा, विश्राम, नींद और व्यक्तिगत आराम उपायों पर सकारात्मक या नकारात्मक वायु आयनीकरण का कोई सुसंगत प्रभाव नहीं देखा गया। अतः ये बात भी मात्र एक छलावा साबित हुई।

एक दावा अक्सर और भी किया जाता है जिसमें गंभीर बीमारियों पर यज्ञ के द्वारा इलाज की बात की जाती है। लेकिन दुःख की बात यह है कि जो संस्थाएं 'यज्ञ-चिकित्सा' के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च कर देती हैं, वे कुछ लाख रूपये लगाकर इस बारे में न तो कोई निष्पक्ष और सही शोध करती हैं और न ही अपने दावों को किसी साइंस जर्नल में प्रकाशित करती है।

बहुत खोजने पर हमें एक मिर्गी रोग संबधित रिसर्च लिंक मिला। जहाँ घटकों के औषधीय गुणों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हवन करने की दिनचर्या शरीर में एंटी-एपिलेप्टिक तत्वों का दहलीज मूल्य रख सकती है और मिर्गी को रोकने में मदद करता है। लेकिन वहाँ भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इस परिकल्पना को साबित करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

एक वेबसाइट पर दावा किया गया है कि फ्रांस के ट्रेलो नामक वैज्ञानिक ने साबित कर दिया है कि हवन में जले हुए गुड़ से फॉर्मिक एल्डिहाइड गैस भी निकलती है। एक वैज्ञानिक TAUTLIK ने पाया कि अगर हम ऐसी जगह पर रहते हैं जहाँ पर हवन किया जा रहा हो तो एक घंटे तक टाइफाइड बुखार के कीटाणु मारे जाते हैं।

इसके बारे में सच्चाई बताती है फेमिनिस्ट सांइस ब्लॉग की लेखिका और विज्ञान की शोधार्थी, जिसमें ये साफ किया गया है कि ये सारी बातें आधारहीन भ्रम के अलावा और कुछ नहीं है। फॉर्मिक एल्डिहाइड गैस कीटाणुनाशक जरूर है जिसका इस्तेमाल कीटनाशकों में किया जाता है पर साथ ही यह अत्यंत जहरीला और कैंसरकारक भी है।

अब इस वातावरण में मनुष्य का रहना कितना लाभप्रद होगा आप खुद ही सोचें और निर्णय लें।

एक दावा और किया जाता है कि हाल के शोध प्रयोगों में दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में घर के अंदर किए गए सर्वेक्षणों में यह देखा गया कि पार्टिकुलेट मेटर ¼PH½ यज्ञ के दिन थोड़ा बढ़ा, लेकिन अंततः दूसरे दिन और उसके अगले दिन 74 प्रतिशत कम हो गया। अब आप स्वयं सोचिये की पहले दिन PH मान कितना बढ़ गया इसका कोई उल्लेख नहीं है। यहां तक कि यह 2 दिनों के बाद सिर्फ 70 प्रतिशत तक गिरा है अर्थात PH मान में 30ः वृद्धि अभी भी विद्यमान थी ?

मित्रों! इन सब बातों का निष्कर्ष यही निकलता है कि विज्ञान के नाम पर जनता को मूर्ख बनाने वाले दावों से हमें बचना चाहिए और किसी भी बात को सिर्फ इस लिए नहीं मानना चाहिए कि वो हमारे पूर्वजों ने लाखों साल पहले की थी।

आशा करते हैं, यह लेख आपको तार्किक रूप से सोचने में मदद करेगा। फिर भी हम उत्साहित हैं क्योंकि कुछ विद्वानों ने निःस्वार्थ भाव से मानवता और प्रकृति की भलाई के लिए किये जाने वाले प्रत्येक कार्य को भी 'यज्ञ' की संज्ञा दी है, और इस बात से हमें कोई आपत्ति नहीं है, बर्शते वह कार्य निःस्वार्थ हो, न कि छिपे हुए स्वार्थ के रूप में। इस रूप में यज्ञ के अंतर्गत निम्न कार्य किये जा सकते है।

1. अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाएं। पर्यावरण संतुलन के लिए इससे अधिक अच्छा यज्ञ कोई नहीं हो सकता है।

2. शाकाहार अपनाएं।

3. पेट्रोल डीजल के स्थान पर वैकल्पिक इंधनों की खोज पर समय लगाएं।

4. फैशन की दौड़ से बचें और प्राकृतिक जीवन की और मुडें।

5. रिसाइकल, रीयूज और रीड्यूस के सिद्धांत को अपनाते रहें।

विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

-नवनीत शर्मा

महामारी के इस दौर में मानव और अस्तित्व को प्राथमिक चुनौती के पश्चात सर्वाधिक खतरा ज्ञान, उसकी अवधरणाओं, संकल्पनाओं और विमर्श को है। किसे ज्ञान समझा जाए और किस ज्ञान के अनुरूप क्या कर्म वांछनीय अथवा अनुकरणीय है, हाथ धोने से लेकर अमुक समिधा कैसे महमारी से बचा सकती है, इस तक का ज्ञान आज सामाजिक विमर्श में मौजूद हैं इनमें से किसे वस्तुनिष्ठ मारना जाए और किसे आस्था अथवा परिस्थिति जन्य ज्ञान, यह एक अलग बहस को जन्म देता है। विज्ञान जनित ज्ञान की सहायता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह हमें किसी भी 'सूचना' को ज्ञान की कसौटी पर कसने में सहयता करे। किसे विशुद्ध ज्ञान समझा जाए और किसे आस्था या विश्वास का उपागम, इसका फैसला करने की दृष्टि प्रदान करे। विज्ञान ज्ञान संरचना की पद्धति है, जिसके तहत किसी भीह निर्णय या नतीजे पर पहुंचने के पहले उसका वस्तुनिष्ठ विश्लेषण और तथ्यपरक मूल्यांकन अपरिहार्य है। विज्ञान किसी स्थापित 'कथ्य' को सिर्फ इसलिए सत्य की संज्ञा नहीं देता क्योंकि यह सर्वविदित है या किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है, इसे भी सत्य नहीं मानता। विज्ञान में तर्कसंगत तथ्य ही ज्ञान है जो आगमन-निगमन की सान पर खरा उतरता है।

विज्ञान जनित ज्ञान अपनी वैधता अपने को दोहराए जाने और सुगठित होने से प्राप्त करता है। सुगठित से अभिप्राय यह है कि इस तरह की ज्ञान रचना में घुमा कर कान पकड़ने को अवैज्ञानिक माना जाता है और दोहराए जाने से तात्पर्य यह है कि यह ज्ञान, ज्ञाता, उसके लिंग, जाति, यौनिकता, वर्ण, जाति, भाषा, आयु, भौगोलिक और राजनैतिक स्थापना से विम1क्त यदि अमुक प्रक्रिय से अवलोकन करेगा और निश्चत चरणों का अनुपालन करे तो अवश्य ही 'यही' ज्ञान पुनः उत्पादित करेगा। उदाहरण के लिए, यदि विद्युत प्रवाह सुचारु है तो बटन किसने दबाया के बोध से मुक्त बल्ब कमरे को रोशनी से जगमगाएगा, और शरीर का तापमान एक निश्चत सीमा से परे है तो उक्त तमाम सामाजिक विभेदों के पश्चात भी उसे बुखार ही माना जाएगा और उसके उपचार के लिए वैयक्तिकता से परे सबके लिए बुखार-निवारक दवा ही दी जाएगी। इसके कारगर होने के प्रमाण वस्तुनिष्ठ और तथ्यपरक मूल्यांकन से उपजे हैं, यह हमें चयन और कर्म के लिए सहायता करते हैं।

विज्ञान जनित ज्ञान की प्रमुख चारित्रिकता में इसका सार्वभौमिक होना भी है, पर साथ ही यह ज्ञान सर्वकालिक होने का दावा नहीं करता। इसकी विशिष्टता यही है कि यह निरंतर प्रयोगधर्मी अवलोकन और अनुभव के आधार पर स्वयं को बदलने में कोताही नहीं करता। यह उन तमाम प्रयोगों और सिद्धांतों का स्वागत करता है जो सरलतम और स्पष्टतम समाधान प्रस्तुत करते हैं। यही उन्मुकतता इसे चिर स्थिर नहीं होने देती और नूतनता से परिपूर्ण कर परिवर्तनगामी बनाती है। ज्ञान निर्मिती की इस पद्ध से मानव और समाज की मूलतः यही सीखना है कि कोई भी ज्ञान अंतिम नहीं है। प्रत्येक ज्ञान परीक्षण उपरांत ही मान्य है और साथ ही सबसे प्रचलतम सीख यह कि सभी मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और संशय करना कतिपय कर्म नहीं है। प्रश्न करने की मनोवृत्ति जिज्ञासा ही मनुष्य में मनुजता का भाव लाती है। विज्ञान जनित ज्ञान ही हमें सत्य, मिथ्या, यथार्थ, तर्क, आस्था और हेत्वाभास में अंतर करना सिखाता है। विज्ञान ही हमें प्रकृतिक आपदाओं से बचने और सजग होने का संबल देता है। यही हमें शोषणमुक्त समतामूलक समाज का रास्ता दिखाता है। विज्ञान ही जो मनुष्यों में भेद किए बिना उन्हें एक सजीव प्राणी मात्र बनाता है। यह तमाम भेद धर्म, वर्ण, जाति, लिंग, भाषा, राजनैतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मतभेदों से उबर कर मात्र मनुष्य होने की प्रेरणा देता है। विज्ञान एक भिन्न भाषायी विमर्श भी बुनता है जिसमें पानी, वारि जल, नीर, आब को इनके सामाजिक विभिन्नताओं के बावजूद 'एचटूओ' ही समझाता है। यह समता और समानता के अभिरुपण

के अलावा सभी चुनौतियों का वस्तुनिष्ठ रूप से मुकाबला करने का अदम्य साहस देता है, चाहे फिर वह अस्पृश्यता, वर्णभेद, लिंगभेद हो या मलेरिया, कालाअजार अथवा कोरोना।

इस संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि लगभग सत्तर सालों के निरंतर शिक्षायी प्रयासों और सम्मानजनक साक्षरता दर प्राप्त कर लेने के बावजूद और शिक्षा के मौलिक अधिकर का हिस्सा बनने के एक दशक बाद भी यह दृष्टिकोण क्यों जनमानस में विलुप्त है? इसकी पड़ताल के लिए हमें विज्ञान के पाठयक्रम, शिक्षण-अधिकम और मूल्यांकन के तरीकों की विवेचना करनी होगी। साथ ही यह भी देखना होगा कि क्या अन्य विषय जैसे साहित्य, कला, गणित, सामाजिक अध्ययन इत्यादि कहीं इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के निर्माण में कोई बाधा तो नहीं पहुंचाते और विज्ञान शिक्षकों की निर्माण प्रक्रिया में हम कहां चूक रहे हैं।

इस प्रश्न का उत्तर कि क्या विद्यालय अथवा शिक्षण-अधिकम विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकता है, को तीन चरणों में देखा जा सकता है। पहला यह कि विज्ञान को प्राथमिक स्तर पर किस तरह समझा अथवा सिखाया जाता है। दूसरा, उच्च शिक्षण और शिक्षण के आने वाले क्रम में विद्यार्थियों को विज्ञान से कैसे जुड़ने की अपेक्षा की जाती है, और तीसरा यह कि किस प्रकार अन्य विषयों और उनके शिक्षण अधिगमों का उपयोग और प्रयास एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण व मानसिकता को आकार देते हैं। प्रारंभिक स्तर पर भारतीय ज्ञान अव्यवस्था अथवा विद्यालय व्यवस्था शिक्षार्थी पर ऐसा विश्वास ही नहीं रखती कि उसका स्वयं का कोई ज्ञान हो सकता है। अधिकतर शिक्षा उपक्रम और प्रक्रियाएं अनुदेशात्मक हैं जो विषय को रटे जाने को बढ़ावा देती है। इस पद्धति में अवलोकन और विश्लेषण का कोई स्थान नहीं है। अपने शैक्षणिक ढांचे में अभी हमें समस्या समाधान के तरीकों को सम्मिलित करना शेष है। विज्ञान का एक विषय के रूप में परिचय और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अप्रत्याशित रूप से विज्ञान के इतिहास से सीखे जाने के लिए छोड़ दिया गया है, जिसमें खोज और खोजकर्ता के सही मिलान, महान वैज्ञानिकों की जीवनी, प्रमुख आविष्कार किस वर्ष में हुए और पृथ्वी गोलाकार है, ये कॉपरनिकस ने बताया, आदि को रटने के सहारे किया जाना है। दूसरे चरण में विद्यार्थियों को 'प्रयोगशाला' में ले जाया जाता है, जिसके अनुसार विज्ञान जैसा जटिल विषय केवल प्रयोगशाला में ही गढ़ा जा सकता है। अब तक विज्ञान और उसके लिए अंग्रेजी में प्रवीणता को भी स्थापित कर दिया जाता है। विज्ञान-शिक्षण और पाठ्यक्रम 'ज्ञान-निर्माण' के तरीकें पर यह उम्मीद से परे है कि हम दैनिक जीवन और विज्ञान के सामंजस्य को बूझ सकें। हम सामान्य विज्ञान का व्यवहार करते हुए यह उम्मीद रखते हैं कि चमत्कारिक रूप से कक्षा कक्ष में 'वैज्ञानिक क्रांति' होगी। विज्ञान शिक्षा में बुनियादी ढांचे और प्रयोगशालाओं के अभाव को नजरंदाज कर दिया जाता है या इसे विज्ञान शिक्षण के लिए गैरजरूरी मान लिया जाता है। मनुष्य पैदाइशी 'जिज्ञासु' प्रवृत्ति का होता है। बाल स्वभाव की उत्कंठा इसकी परिचायक है। यह जानना चाहता है कि पंछी कैसे उड़ते हैं, फूल क्यों खिलते हैं, पृथ्वी गोल कैसे है आदि। परंतु ये सारे प्रश्न तो पाठ्यक्रम से बाहर और मूल्यांकन से परे हैं। इनको जानना 'व्यर्थ' है। **फिर यह भय भी रहता है कि यदि विद्यार्थी को आज ऐसे सवाल पूछने की इजाजत दे दी जाए तो भविष्य में वह जटिल सामाजिक-राजनैतिक प्रश्न करेगा और इस क्रम में यथास्थिति को चुनौती देगा।**

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए राज्य, सरकार और समाज को इसको अपना सरोकार बनाना होगा। दाभोलकर, कलबुर्गी और होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम जैसे सरोकारों को पुनर्जीवित करना और और साथ ही विज्ञान शिक्षण की प्रविधि, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन के तौर तरीकों में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। यह भारतीय परिदृश्य में जटिल इसलिए है क्योंकि तमाम समझ-बूॅझ के बावजूद 'ग्रहण' लगने पर उसे राहु-केतु का प्रभाव मान लेने की सामाजिक दीक्षा हम पर हावी है। महामारी के इस दौर में हम नियमित रूप से कोई 'चमत्कार' होने की अपेक्षा कर रहे हैं, पर यह चमत्कार मानवीय जीवन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तहत परिवर्तन लाने, निरंतर हाथ धोते रहने और दो गज की दूरी बरतने से ही संभव होगा।

(साभारः जनसत्ता)

1930 से रूस वालों ने

1930 से रूस वालों ने अपने बच्चों को यह सिखाया कि ना ही आत्मा होती है और ना ही परमात्मा होता है, पूरे 25 वर्ष लगे ये बात समझाने में तब जाकर उनकी पीढ़ी इस बात को समझी और आज रूस नास्तिक देश है, और साथ में विकसित देश है। आज यदि भारत के लोगो को कोई आत्मा, परमात्मा, चमत्कार, भूत, प्रेत के अस्तित्व के बारे में कोई कह रहा हो, तो जल्दी से उनके दिमाग मे उतरने लगता है। लेकिन इसके विपरीत कोई कुछ कह रहा है, तो उल्टा उसे पागल करार कर दिया जाता है ।

इस मुल्क ने ध्यान समाधि आत्मा और मोक्ष पर सबसे ज्यादा साहित्य रचा है। सबसे ज्यादा गुरु, शिष्य, बाबा, योगी, सन्यासी, भक्त और भगवान पैदा किये। अगर ये सारे लोग पांच प्रतिशत भी सफल रहते तो भारत सबसे अमीर वैज्ञानिक लोकतांत्रिक और समतामूलक समाज का धनी होता। क्योंकि ध्यान के जो फायदे गिनाये जाते हैं उसके अनुसार आदमी सृजनात्मक करुणावान तटस्थ और सदाचारी बन जाता है।

अब भारतीय समाज और इसके निराशाजनक इतिहास व वर्तमान को गौर से देखिये। इसकी गरीबी आपसी भेदभाव, छुआछुत, अन्धविश्वास, पाखण्ड, भाग्यवाद और गन्दगी देखकर आपको लगता है पिछले तीन हजार सालों में इसके अध्यात्म ने इसे कुछ भी क्रियेटिव करने दिया है?

पिछले बाइस सौ साल से ये मुल्क किसी न किसी अर्थ में किसी न किसी बाहरी कौम का गुलाम रहा है। मुट्ठी भर आक्रमणकारियों ने करोड़ों के इस देश को कैसे गुलाम बनाया ये एक चमत्कार है। ऐसे हजारों अध्याय इस देश में छुपे है। इसीलिये इस मुल्क ने अपना वास्तविक इतिहास कभी नही लिखा बल्कि वह लिखा जिससे मूर्खताओं के सबूत मिटते रहे। गौरवशाली इतिहास की कल्पनाओं को गढ़कर गर्व करते हैं पर वह लुटा क्यों उसकी जिम्मेदारी कभी नहीं लेते।

ये सब देखकर दुबारा सोचिये कि भारत के परलोकवादि अध्यात्म आत्मा परमात्मा और ध्यान ने इस देश के लोगों को क्या दिया है। इन्होंने अलग किस्म के आविष्कार किये, ऊपरवाला खुश कैसे होता है? ऊपरवाला नाराज क्यों होता है? स्वर्ग में कैसे जायें? नरक से कैसे बचें? स्वर्ग में क्या-क्या मिलेगा? नरक में क्या-क्या सजा है? हलाल क्या है, हराम क्या है? बुरे ग्रहों को कैसे टालें? मुरादें कैसे पूरी होती है? पाप कैसे धुलते हैं? पित्तरों को तृप्त कैसे करें ?

ऊपरवाला किस्मत लिखता है..वो सब देखता है.. वो हमारे पाप-पुण्य का हिसाब लिखता है.. जीवन-मरण उसके हाथ में है.. उसकी मर्जी बगैर पत्ता नहीं हिलता.. ऊपरवाला खाने को देता है.. वो तारीफ का भूखा है.. वो पैसे लेकर काम करता है. . मंत्रों द्वारा संकट निवारण.. हजारों किस्म के शुभ-अशुभ.. हजारों किस्म के शगुन-अपशगुन.. धागे-ताबीज.. भूत-प्रेत.. पुनर्जन्म.. टोने-टोटके.. राहु-केतु.. शनि ग्रह.. ज्योतिष.. वास्तु-शास्त्र...पंचक. मोक्ष.. हस्तरेखा..मस्तक रेखा..वशीकरण.. जन्मकुंडली. .काला जादू.. तंत्र-मन्त्र-यंत्र.. झाड़फूंक.. वगैरह.. वगैरह..इस किस्म के इनके हजारों अविष्कार हैं।

अब यूरोप को देखीये। वहां धर्म की परमात्मा की और अध्यात्म की बकवास को नकारते हुए चार सौ साल पहले व्यवस्थित ढंग से विज्ञान और तर्क पैदा हुआ। आज जो तकनीक और सुविधाएँ है वो उसी की उपज है। और मजे की बात ये है कि धर्म और सदाचार की बकवास किये बिना औसत आबादी में आपस में कहीं ज्यादा मित्रता समानता और खुलापन आया है। ट्रेन, होटल, थियेटर में सब बराबर होते हैं साथ में खाते पीते हैं।

पहली बार सबको शिक्षा स्वास्थ्य और मनचाहा रोजगार नसीब हुआ है। भारतीय माडल पर न तो कोई स्कूल खड़ा है न कालेज न कोई फेक्ट्री। न कोई तकनीक न कोई राजनितिक व्यवस्था।

विज्ञान, समाजशास्त्र, तकनीक, मेडिसिन, लोकतन्त्र इत्यादि सब कुछ विश्व के उन नास्तिकों ने विकसित किया है जिन्हें हमारे बाबा लोग रात दिन गाली देते रहते हैं।

हमने विज्ञान को इतनी तवज्जो क्यों नहीं दी? इसका जवाब ये है कि बचपन से होने वाले हमारे मन पर आस्तिक संस्कार। स्कूल हो, या घर हो, हर तरफ दैवीय शक्ति को बचपन से हमारे कच्चे मन मे बिठा दी जाती है। ऐसे संस्कारों में हम पलते है, बडे होते है और हमारे अंतर्मन में यह बैठ जाता है कि भगवान का अस्तित्व है, शैतान भी है। उसे नकारने के लिए मन तैयार नही हो पाता। इसलिए अपने उन लोगो के सामने कितना भी माथा पीटें, तो भी वे यही कहेंगे कि कुछ तो है।

आज भी टी.वी सीरियल में अंधविश्वास, काल्पनिक बातों के अतिरिक्त और कुछ भी नही दिखाया जाता। हमें बचपन से कैसे तैयार किया जाता है यह जानना बेहद जरूरी है। बचपन में माँ कहती है उधर मत जाना भो आ जाएगा.. बचपन मे माँ बताती है भगवान के सामने हाथ जोडकर बोल- 'भगवान मुझे पास कर दो'।

टीवी पर कार्टून मे चमत्कार, जादू जैसी अवैज्ञानिक बातें दिखाकर बच्चों का मनोरंजन किया जाता है, लेकिन चमत्कार और जादू की बच्चों के अंतर्मन मे गहराई तक असर होता है और बड़े होने के बाद भी इंसान के मन मे चमत्कार और जादू के लिए आकर्षण कायम रहता है.. स्कूल में जो विज्ञान सिखाया जाता है उसका संबंध रोजमर्रा की जिंदगी से न जोडना।

Law Of Monopoly eryc : 99% समाज के लोग इसी राह पर चल रहे है तो जरूर वे सही ही होंगे, हमने उनका अनुकरण करना चाहिये ये समझ।

इंसानी जीवन भाव भावनाओं की ओर उलझा होने के कारण उसमे असीम सुख और दुख की विस्मयकारक शॉकिंग मिलावट है, जो बातें उसे हिलाकर रख देती हैं और उसका चमत्कारों पर यकीन पक्का होता जाता है। हमने ये किया इसीलिये ऐसा हुआ और हमने ऐसा नहीं किया इसलिए हमारे साथ वैसा कुछ हुआ है। ऐसी कुछ योगायोग की घटनाओं को इंसान नियम समझकर जीवन भर उसका बोझ उठाता रहता है।

Law Of Repeated Audio Visual Effect- इस तत्व के अनुसार समाज में मीडिया, माउथ पब्लिसिटी, सामाजिक उत्सव इत्यादि माध्यम से जो इंसान को बारबार दिखाया जाता है, सुनाया जाता है उसपर इंसान आसानी से यकीन कर लेता है ।

'डर' और 'लोभ' ये दो नैसर्गिक भावनाएं हर इंसान के भीतर बड़े तौर पर होती हैं, लेकिन जिस दिन ये भावनाएं इंसान के जीवन पर प्रभुत्व प्रस्थापित करती हैं तब वह मानसिक गुलामगिरी मे फंसता जाता है। और अंत मे सभी में महत्वपूर्ण बात 'चमत्कार' होता है ऐसा सौ बार आग्रह से बताने वाले सभी धर्म के ग्रंथ इस बात की वजह है। इसलिए धर्म ग्रंथ मे बतायी गयी अतिरंजित बातें कैसे गलत है, ये वक्त रहते ही बच्चों को समझाने की कोशिश करें।

जो इंसान भूत प्रेत के कारण रात के अंधेरे में अकेले सोने, चलने से डरता है, समझ लेना वह सबसे ज्यादा अंधविश्वासी है। उसका मन मानता है कि भूत है और यह धारणा यह साबित करती है कि भूत पहले है। भूत है तो ईश्वर है। उसका अंधविश्वासी होना एक प्रकार के डर से है।

इसमें धार्मिक प्राणियों की कमी नहीं है, जो साइंस की हर चीज इस्तेमाल करते हैं और साइंस के विरुद्ध भी बोलते हैं। साइंस की भावनाएं आहत नहीं होती क्योंकि उसका प्रचार प्रसार नहीं करना पड़ता। सत्य का कैसा प्रचार वह तो स्वतः ही स्वीकार हो जायेगा लेकिन झूठ को प्रचार की आवश्यकता होती है। जिन अविष्कारों ने हमारे जीवन और दुनिया को बेहतर बनाया है, वे सब अविष्कार उन्होंने किये, जिन्होंने धार्मिक कर्मकांडों में समय बर्बाद नहीं किया।

आज कोई भी धार्मिक प्राणी साइंस से संबंधित चीजों के बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता, लेकिन ये साइंसदानों का एहसान नहीं मानते, ये उस काल्पनिक शक्ति का एहसान मानते हैं,

शेष पृष्ठ 17 पर..

कार्ल मार्क्स की प्रेरणा स्रोत संगिनी

जेनी वॉन वेस्टफेलन (जेनी मार्क्स)

जेनी मार्क्स को याद करने का कारण सिर्फ यह नहीं है कि वे महान कार्ल मार्क्स की पत्नी थीं, बल्कि उनके द्वारा मानवता की मुक्ति की राह के कठिन सफर में अदम्य रहते हुए मार्क्स का साथ निभाया, इस महान कार्य के प्रति उनका समर्पण और उनके द्वारा किया गया अथक संघर्ष उन्हें सम्मान से याद किए जाने का पात्र बनाते हैं।

यदि यह कहा जाए कि जेनी के साथ के बगैर मार्क्स वह कुछ ना होते जो वे थे, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। जब अपनी नौजवानी में मार्क्स मानवता की सेवा करने की राह चुनने की ओर आगे बढ़े, तो यह साफ हो गया था कि मार्क्स की जिंदगी में जायदाद, पदों, सम्मानों की खोखली खुशियों की कोई जगह नहीं होगी, बल्कि मुश्किलों, दुश्वारियों के तुफानों में से गुजरते हुई आत्म-संतुष्टि, महानता और संपूर्ण मानव के लक्ष्य की ओर बढ़ेगी तो उस वक्त जेनी ने भी इस नियति की सहभागी बनने और अपनी जिंदगी भी मानवता को समर्पित करने का फैसला कर लिया। 7 साल की सगाई के बाद 19 जून 1843 को शादी से लेकर जेनी ने आखिरी सांस तक हर निर्वासन, तकलीफ, गरीबी, अभावों और यातनाओं भरी जिंदगी में मार्क्स का कंधे से कंधा मिलाकर साथ निभाया।

उन्होंने हर संभव तरीके से मजदूर वर्ग के आंदोलन को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। उन्होंने मार्क्स की पांडुलिपियों की नकल तैयार की ताकि उन्हें दूसरे पढ़ सकें। जेनी पार्टी के कामों में हरकारे का काम करतीं, जरूरी संदेश एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाती रहीं। लंडन में जब मार्क्स परिवार खुद भूख से जूझने पर मजबूर था, लेकिन जेनी की वजह से यहाँ सभी राजनीतिक निर्वासकों को हमेशा शरण और मदद मिलती थी।

समूची मानवता के लिए अपना जीवन समर्पित करने के चलते मार्क्स को अत्यंत गरीबी की जिंदगी बसर करने पर मजबूर होना पड़ा जिसकी वजह से वे अपने बच्चों को अच्छा भोजन, वातावरण और स्वास्थ्य सुविधाएं भी ना दे सके और उनके 4 बच्चों की छोटी उम्र में ही मौत हो गई। इसके बावजूद जेनी ने मार्क्स पर अपनी जिंदगी की धुरी बदलने के लिए कोई दबाव नहीं डाला, बल्कि इन विपदाओं की घड़ियों में अपना जीवन समूची मानवता के लिए समर्पित करते हुए उनके साथ आखिरी सांस तक चलती रहीं।

जेनी का मजदूर वर्ग के लिए किए गए संघर्ष की वजह से उनकी कब्र पर फ्रेडरिक एंगेल्स ने ये शब्द कहे थे

'ऐसी अंतर्भेदी आलोचनात्मक प्रतिभा, ऐसी राजनीतिक कार्य कुशलता, ऐसा तेजस्वी और तीव्र उत्साही चरित्र और अपने संघर्षरत साथियों के प्रति ऐसी वफादारी वाली इस औरत ने लगभग चालीस साल तक आंदोलन के लिए क्या कुछ किया, आम लोग यह बात नहीं जानते, हमारे वक्त के अखबारों में इसका जिक्र तक नहीं है। इसे तो वही जान सकता है जिसे इसका अहसास हुआ हो। लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि कम्यून के प्रवासियों की पत्नियां उन्हें अक्सर याद करेंगी तो हमें भी अक्सर उनकी सुलझी हुई और अकलमंदी वाली सलाह की कमी महसूस होगी। उस सुलझी हुई सलाह की कमी, जो आडंबरहीन होती थी, वो अक्लमंदी वाली सलाह जो प्रतिष्ठा के किसी सवाल पर झुकना नहीं चाहती थी।'

'उनके निजी व्यक्तिगत गुणों की बात करना मैं जरूरी नहीं समझता। उनके दोस्त उन्हें जानते हैं और भूलेंगे नहीं। यदि दुनिया में कभी कोई ऐसी औरत हुई है, जिसका सबसे बड़ा सुख दूसरों को सुखी बनाना रहा हो तो वो यही औरत थी।'

(रवीन्द्रनाथ टैगोर के चिंतन पर एक भावपूर्ण लेख जो आज की स्थिति पर सटीक बैठता है)

चिंतक -विचारक रवीन्द्रनाथ टैगोर

-प्रेमकुमार मणि'

'आज सभी अपराधों में, राष्ट्रवाद शायद सबसे अधिक घिनौना तथा घातक अपराध है' -टैगोर'

रवीन्द्रनाथ टैगोर कवि-लेखक के साथ साथ, कई दूसरी खूबियों के स्वामी थे. वह चित्रकार -पेंटर थे, नाट्य -निदेशक थे और शिक्षाशास्त्री भी थे.'

इन सबके साथ वह एक मौलिक चिंतक -विचारक थे. उनके विचार केवल उनकी साहित्यिक कृतियों में नहीं, बल्कि अलग से भाषणों और लेखों में भी प्रकट हुए हैं.'

उनके विचार कई दफा प्रचलित मान्यताओं के विरुद्ध भी होते थे. पूरी दुनिया में जब राष्ट्रवाद और देशभक्ति विविध रूपों में अंगड़ाइयां ले रही थीं, तब उन्होंने इसके खतरों से आगाह किया.'

कवि लोग प्रायः भीरु स्वभाव के होते हैं और सीधे तौर पर कुछ कहने के बजाय, घुमा -फिरा कर अपनी बातें कहने के वे अभ्यस्त होते हैं.'

लेकिन टैगोर तो बाज दफा अक्खड़ की तरह अपनी बात रख देते हैं. सर्वविदित है कि 1913 में उन्हें जब साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला, तब अचानक से उनकी ख्याति दुनिया भर में फैल गई. वह आधुनिक जमाने के संभवतः प्रथम भारतीय थे, जिन्हे वैश्विक ख्याति मिली थी. गाँधी को यह ख्याति बहुत बाद में मिली.'

इतनी बड़ी ख्याति को संभालना सहज नहीं होता. लेकिन टैगोर ने इसका रचनात्मक उपयोग किया. वह समझ रहे थे कि उनकी बातें लोग अब ध्यान से सुनेंगे. इसका उन्होंने खूब उपयोग किया.

उन्होंने कई बार दुनिया के कई हिस्सों की यात्रा की. प्रथम विश्वयुद्ध ने पूरी दुनिया को हिंसा के लावे में झोंक दिया था. वह इस मामले में प्रथम चिंतको में से थे, जिन्होंने इस महायुद्ध के केन्द्रक अथवा मूल कारण को समझा था. वह केन्द्रक था राष्ट्रवाद. यह वह समय था, जब उनके अपने भारत में राष्ट्रवाद नई अंगड़ाइयां ले रहा था. उनके बंगाल में राष्ट्रवादी अनुशीलन समिति बीसवीं सदी के आरम्भ में ही गठित हो चुकी थी और उससे जुड़े लोग अपने राष्ट्र के लिए जान की बाजी लगाने हेतु उद्धत थे. टैगोर इन सब से बहुत प्रभावित नहीं होते. बंगाल के भद्रलोक में, इन सब के लिए उनकी अनेक स्तरों पर आलोचना हो रही थी.

इन्ही दिनों 1909 में उनका उपन्यास आता है 'गोरा' । इसमें आप टैगोर के विचारों को देख सकते हैं. गौरमोहन मुखर्जी उद्धत राष्ट्रवादी हैं, मानो तिलक की प्रतिमूर्ति. उसकी चेतना में 'राष्ट्र और ब्राह्मणत्व' एकमेव है. उसे अपने वर्णधर्म और राष्ट्र दोनों पर गुमान है. सामाजिक सुधारों का वह पूरी तरह विरोधी नहीं है. लेकिन सुधारवादियों के पश्चिमाभिमुख रुझानों का वह कट्टर विरोधी है. विदेशी नस्ल से ही उसे नफरत है. इस नफरत की गहराई को ही वह देशभक्ति की गहराई समझता है. उसे अपनी माँ से भी परेशानी है क्योंकि वह छूत-अछूत का भेद नहीं मानती. दुसाध जाति की लछमिनिया, उसके यहाँ बतौर नौकरानी है और माँ उसे अपना कहती है.

'गोरा' बंगाल के युवकों का स्वाभाविक नायक बना हुआ है, क्योंकि उसकी राष्ट्रनिष्ठा अद्‌भुत है. वह भारतमय हो चुका है.'

उपन्यास के आखिर में उसके बीमार पिता उसे बुलवाते हैं और उससे कहते हैं कि वह उसे मुखाग्नि नहीं देगा.'

गोरा के प्रश्न 'क्यों' का जवाब उसकी माँ देती है. उसे बताया जाता है कि वह तो आयरिश दम्पति का बेटा है! 1857 के गदर के समय उसके मातापिता ने उसे मेरी गोद में डाल दिया कि इसकी

रक्षा करना. उसके माता-पिता गदर की भेंट चढ़ गए थे.

तो यह है गौरमोहन की हकीकत! एकबारगी से उसका पूरा चरित्र डगमग हो जाता है. लेकिन ब्रह्मसमाज के नेता आशु बाबू, जिनसे वह घृणा करता था, के पास जब वह जाता है, तब उसे आश्वस्ति मिलती है. वह उसे देशभक्ति का एक नया पाठ देते हैं.

दरअसल टैगोर देशवासियों को देशभक्ति का इस उपन्यास के माध्यम से एक नया पाठ देते हैं.

दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि इस उपन्यास की उतनी चर्चा नहीं हुई, जितनी उनकी कविताओं की.'

1916 में टैगोर जापान जाते हैं. जापान में राष्ट्रवाद की आँधी चल रही थी. इस आँधी में टैगोर जापानवासियों को नसीहत देते हैं कि 'वे राष्ट्रवाद के खतरों को जानें.'

किसी मुल्क में जाकर उसकी 'सरकारी वैचारिकी' का विरोध!! एक कवि करे! क्या यह साधारण बात है?'

लेकिन टैगोर ने यह काम भी किया. वह ऐसे निर्भीक व्यक्ति थे.

इसी वर्ष वह वह अमेरिका भी जाते हैं और पश्चिम के राष्ट्रवाद की आलोचना करते हैं.

उनकी औद्योगिक सभ्यता मानवीयता की उपेक्षा कर रही है, इस बात की भी हिदायत देते हैं.

वह 1927 में रूस जाते हैं, जहाँ दशक भर पहले बोल्शेविक क्रांति हुई थी. वहाँ से परिवार जनों और मित्रों को वह चिट्ठियाँ लिखते हैं, जो उनकी एक किताब 'रसियार चिठ्ठी' (रूस की चिट्ठी) में संकलित है. इन चिट्ठियों में वह बतलाते हैं कि किस तरह वहाँ सार्वजानिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है. लेकिन वह किसी समाजवादी सभ्यता की तलाश की जगह मानवीय सभ्यता की ही तलाश करते हैं. उनकी चिंता केवल यह है कि किसी विचारधारा के लिए उसके मनुष्य की उपेक्षा तो नहीं हो रही है!

'मानवीय गरिमा और उसकी आजादी, रवीन्द्रनाथ की पहली चिंता होती है.'

उनका एक लेख है 'भारत में राष्ट्रवाद'. इसके आरम्भ ही वह कहते हैं 'भारत में हमारी असली समस्या राजनीतिक नहीं, सामाजिक है.'

वह लिखते है - 'इतिहास के आरंभिक काल से ही भारत अपनी एक समस्या से लगातार जूझता रहा है, और वह समस्या है-- जातिप्रथा--की.

टैगोर की मान्यता है कि यह जातिप्रथा हमें केवल यही सीख देती है कि 'विभिन्नता में एकता के आदर्श को, हम कैसे विकसित करें!'

वह पश्चिम के भारत प्रवेश का बुरा नहीं मानते, बल्कि उनका मानना है कि इससे दोनों को एक दूसरे से सीखने का अवसर मिला है.'

उनका मानना है -'जो परायों से झगड़ने व उनके प्रति असहनशीलता का भाव बनाए रखते हैं, वे विलुप्त हो जाएंगे.''

सबलोग जानते हैं कि गाँधी और टैगोर में कितनी मित्रता थी और दोनों एक दूसरे की फिक्र करते थे, लेकिन दोनों में वैचारिक भिन्नता थी. इस भिन्नता को लेकर दोनों के बीच कई बार मतभेद सामने आये.'

वैचारिक तौर पर टैगोर का विरोध गाँधी से जबरदस्त तरीके से हुआ. गाँधी के कार्यक्रमों और विचारों का विरोध बाद में बहुत लोगों ने किया. कांग्रेस में ही तिलकवादियों का एक दल, गाँधी का विरोध कर रहा था. इसके बाद कम्युनिस्टों और सोशलिस्टों ने अपने- अपने स्तर पर उनके कतिपय विचारों का विरोध किया. नेहरू ने भी अपनी आत्मकथा में गांधीवाद की तीखी आलोचना की है. मुस्लिम लीग, हिंदूमहासभा का विरोध तो था ही, डॉ. आम्बेडकर दलित प्रश्नों के साथ गाँधी का विरोध कर रहे थे.'

लेकिन यह जानना दिलचस्प होगा कि इस देश में गांधीवाद विरोध का आरम्भ टैगोर ने किया. असहयोग आंदोलन और विदेशी वस्त्रों के जलने के मुद्दे पर टैगोर बिलकुल सहमत नहीं थे, बल्कि इनके आलोचक थे. चरखा का तो उन्होंने खासा मजाक उड़ाया था और इस पर गाँधी और उनमें थोड़ा वाद -विवाद भी हुआ था.'

गाँधी की निर्णायक टिप्पणी थी--'कवियों को किसी चीज को बढ़ा -चढ़ा कर कहने की आदत होती है और कवि के स्वेच्छाचार में किसी बात को अक्षरशः नहीं मानना चाहिए.'

गाँधी -टैगोर की असली वैचारिक लड़ाई 'वर्णव्यवस्था के सवाल' पर हुई. टैगोर का मई 1927 के मॉडर्न रिव्यू में एक लेख प्रकाशित हुआ 'द शूद्र

हैबिट'. बाद में इसे बांग्ला में 'शूद्र धर्म' शीर्षक से प्रकाशित किया गया. मूल लेख बंगला में था, या अंग्रेजी में यह ज्ञात नहीं है. इस लेख में टैगोर ने 'वर्णधर्म और जातिवाद' की तीखी आलोचना की है.' यह वह समय था जब तक आम्बेडकर भी खुल कर जातिप्रथा के विरुद्ध नहीं आए थे.'

टैगोर ने लिखा 'ब्राह्मणों द्वारा आँख मूँद कर कर्मकांड की पुनरावृत्ति ने मस्तिष्क को जकड़ रखा है. इससे न तो मानसिक और न ही चारित्रिक गुणों का विकास हो रहा है, जिन आदर्शों का आरम्भ में निर्धारण किया गया था.'

टैगोर ने पूछा – 'असली क्षत्रिय भारत में कहाँ पाया जाता है?' मजाकिया लहजे में उन्होंने बतलाया-भारत में केवल शूद्रधर्म चल रहा है. दुनिया में आपको कहीं ऐसे लोग नहीं मिलेंगे जिनके धर्म ने उन्हें गुलाम बना दिया हो. इसी आदत ने भारतीयों को ब्रिटिश भारत के सबसे अच्छे नौकर के रूप में तबदील कर दिया है.'

'भारत में केवल शूद्रधर्म चल रहा है. दुनिया में आपको कहीं ऐसे लोग नहीं मिलेंगे जिनके धर्म ने उन्हें गुलाम बना दिया हो. इसी आदत ने भारतीयों को ब्रिटिश भारत के सबसे अच्छे नौकर के रूप में तब्दील कर दिया.'

इस लेख की आलोचना करते हुए गाँधी ने टैगोर के विचारों की आलोचना की थी.

प्रसंगवश यह भी जानना चाहिए कि हिंदी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने भी एक लेख लिख कर टैगोर की आलोचना की. लेकिन निर्भीक विचारक टैगोर पर इन सबका कोई असर नहीं पड़ा. वह अपनी मान्यता पर अडिग रहे.'

आधुनिककाल में जोतिबा फुले ने ब्राह्मणवाद पर जोरदार प्रहार किया था किन्तु पूरे वर्णधर्म पर सुसंगत विरोध करने वाले टैगोर संभवतः अपने जमाने में पहले व्यक्ति थे.

किसी खास जाति को खास पेशा से जोड़ देना, वर्णधर्म की पहली शर्त होती है. यहाँ पेशा चुनने का आधार व्यक्ति को नहीं, उस व्यवस्था को है, जिसे वर्णधर्म या ब्राह्मणधर्म कहा जाता है. टैगोर ने कहा – 'जन्म के आधार पर व्यवसायों के आबंटन से कार्यकुशलता नहीं आती. बल्कि यह व्यक्तिगत क्षमता से आती है. पीढ़ी दर पीढ़ी वंशानुगत धंधों में लगे रहने से लापरवाही और बोरियत होने की संभावना होती है. इससे दिमाग संकीर्ण हो जाता है.'

टैगोर ने जोतिबा फुले की तरह पौराणिकता और इतिहास पर भी विचार किया है. महाकाव्यों और दूसरे संस्कृत साहित्य पर भी उन्होंने नए सिरे से सोचा है. वाणभट्ट की कादंबरी हो, या कालिदास की कृति 'अभिज्ञान शंकुन्तलम', उन्होंने इसे अपनी ही तरह से विश्लेषित करने की कोशिश की, महाकवि वाल्मीकि को क्रौंच वध से नहीं, एक अछूत बालिका के वध से द्रवित को कर कवि होता देखा.'

उनका एक लेख है –'ए विजन ऑफ इंडिया'. उम्मीद है, आप में से बहुतों ने पढ़ा होगा. इस लेख को पढ़ने के बाद कई सवाल मन में उठते हैं. टैगोर मनु को भिन्न नजरिए से देखते हैं. यह मनु कौन था ? जिसकी स्मृति इतनी चर्चित व विवादित है. उसे ब्राह्मणवादी विचारों का आदि स्रोत बतलाया जाता है. आज तो वह प्रतिगामी सामाजिक चिंतन का आधार ही माना जाता है.'

रवीन्द्रनाथ कहते हैं 'मनु' तो स्वयं ब्राह्मण नहीं था, वह क्षत्रिय था, क्योंकि वह राजा था और राजा क्षत्रिय ही होता था. एक क्षत्रिय राजा ने स्वयं को कमतर और ब्राह्मण को श्रेष्ठतर कैसे बनाया?'

रवीन्द्र इस पर गहराई से विचार करते हैं. वह बतलाते हैं जब क्षत्रियों को सत्ता चाहिए होती थी, तब वे उनका समर्थन लेने के लिए उनकी महत्ता का समर्थन करते थे. ब्राह्मण सीधे सत्ता में नहीं होते थे. उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति और स्वार्थों की रक्षा क्षत्रिय राजा करते थे. ऐसे राजाओं को ब्राह्मण लोग मर्यादा पुरुषोत्तम कहते थे. राम ऐसे ही राजा थे. क्षत्रिय लेकिन द्विज हितकारी, विप्र सेवक. शम्बूक का शिरोच्छेद और सीता को घर निकाला देकर राम ने यह विरुद हासिल किया था.

क्षत्रियों के मोटे तौर पर दो समूह थे. एक

समूह सत्ता पसंद था, दूसरा ज्ञान पसंद. जब क्षत्रियों को ज्ञान की भूख होती थी, वे ब्राह्मणों से टकराने लगते थे. ब्राह्मण इसे पसंद नहीं करते थे. वह क्षत्रियों को कमतर मानते थे और ज्ञान जैसे क्षेत्र के लिए सर्वथा अयोग्य.

बावजूद इसके, जब क्षत्रियों ने ज्ञान के लिए अपनी जिद कायम रखी, तो ब्राह्मणों के बीच से परशु या फरसाराम उठ खड़ा हुआ. परशुराम दरअसल ब्राह्मणों की अधीरता और उनके बीच छुपी खूंखार हिंसा का परिचायक है. संभवतः यह एक प्रवृति है. क्योंकि परशुराम रामायण में भी है और महाभारत में भी.

इस तरह यह ब्राह्मणों और क्षत्रियों के एक बहुत लम्बे संघर्ष की सूचना देता है. यूँ भी इक्कीस दफा क्षत्रिय संहार का मतलब लम्बा संघर्ष ही है! संभव है परशुराम के मिथक की संरचना, क्षत्रियों ने ब्राह्मणों को नीचा और दुष्टतापूर्ण दिखाने के लिए की हो, क्योंकि इस तरह के निकृष्ट नायक की रचना, ब्राह्मणों ने स्वयं की होगी, -यह विश्वसनीय नहीं प्रतीत होता. परशुराम तो पुरंदर (इंद्र) का विकृत रूप लगता है. इतना लम्पट कि अपनी मां की हत्या करने में भी नहीं हिचकता.'

क्षत्रिय जब सत्ताप्रिय होते थे तब ब्राह्मणों -क्षत्रियों का युग्म अथवा संयुक्त मोर्चा बनता था. इस मोर्चे की मजबूती के साथ ही शूद्रों और वैश्यों के बुरे दिन आ जाते थे. जब क्षत्रिय ज्ञानप्रिय होते थे वे ब्राह्मणों से जूझते टकराते थे. ऐसी स्थिति में उनका शूद्रों और वैश्यों से संयुक्त मोर्चा बनता था. यह तथाकथित निम्नवर्णीय समूहों के लिए अनुकूल समय होता था. भारत के वर्णवादी समाज का यही आत्मसंघर्ष या अंतर्संघर्ष था.

...

इस लेख में टैगोर ने रामायण और महाभारत पर भी अपनी तरह से विचार किया है. रामायण के राम ऋषि केंद्रित समाज के नायक होना चाहते थे अथवा थे. उनके गुरु विश्वामित्र की सीख के तीन बुनियादी बिंदु थे -

1. बर्बरता का खात्मा, जिसके तहत राम ने ताड़का वध और दूसरे समाजविरोधी तत्वों का सफाया किया. आज उसे कानून का राज स्थापित करना कह सकते हैं.

2. अहल्या उद्धार - अर्थात अहल्या भूमि (अकृषिकारी भूमि) को हल्या यानि हल (जोतदार भूमि) के अधीन लाना. आज के अर्थ में कृषि पर जोर.'

3. नीचे के वर्णो से समझौता. अर्थात ब्राह्मणों की श्रेष्ठता प्रदर्शित करनेवाली वर्णव्यवस्था की अवहेलना.

राम ने अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में यह किया. निषादराज से लेकर आदिवासियों तक से उन्होंने समझौते किये. जीवन की शुरुआत ही अयोनिजा (योनि से न जन्मी यानि वर्णहीन) सीता से विवाह करके किया. जनक के दरबार में उनके भाई लक्ष्मण ने परशुराम की जम कर ऐसी-तैसी कर दी.' 'परशुराम को भागना पड़ा. वशिष्ठ की सीधी उपेक्षा करते हैं राम. परशुराम और वशिष्ठ की ही कड़ी में रावण भी है, जो राम की स्त्री का अपहरण कर लेता है. वह दक्षिण का ब्राह्मण है. (सीता की खोज में जब हनुमान लंका पहुँचते हैं, तब उन्होंने अपनी बात संस्कृत में रखनी चाही, लेकिन हनुमान को तुरत इस बात का भान हुआ कि संस्कृत तो ब्राह्मणों की भाषा है. सीता मुझे रावण का दूत मान लेंगी. इसलिए उन्होंने भाषा में बात की.) लेकिन उत्तरार्द्ध के राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बनना है. वह उन शक्तियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर देता है, जिनके विरुद्ध अब तक लड़ते रहे थे...राम का यह भयानक पतन है, जो उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बना देता है. विश्वामित्र अब चुपचाप परिदृश्य से अनुपस्थित हो जाते हैं.'

...

महाभारत को टैगोर, कौरव - पांडवों का संघर्ष नहीं मानते. यह संघर्ष कृष्ण को मानने और नहीं मानने वालों के बीच का संघर्ष था. कृष्ण का जन्म विवादास्पद है.' पांडवों का भी यही हाल है.'

दुर्योधन का तो यही कहना था कि ये सब पाण्डु की जायज संतान नहीं हैं. जन्म और वर्ण की शुद्धता -अशुद्धता के मुद्दे पर, यह संघर्ष हुआ, जिसमे कृष्ण ने वर्ण और जन्म के मुकाबले मनुष्यता का पक्ष लिया. टैगोर का यह दृष्टिकोण महाभारत को एक नया अर्थ दे जाता है.

कन्नड़ लेखक भैरप्पा ने महाभारत को लेकर जो उपन्यास 'पर्व' लिखा है, उसकी प्रेरणा

संभवतः टैगोर के इस ष्टिकोण से ही मिली है.

...

कुल मिला कर यह कि टैगोर हमारे विचारों को झकझोरते हैं. आश्चर्य होता है अनेक प्रश्नों पर वह अपने समय से बहुत आगे के दिखते हैं.

उन्होंने भारतीय दर्शनशास्त्रऔर प्राचीन संस्कृत वाङ्गमय का गहन अध्ययन किया था. लेकिन वह उसी का हिस्सा नहीं बन गए.'

अपने चिंतन से उसे नए अर्थ और गति दी. उसे आधुनिक विश्व साहित्य की ऊंचाइयां प्रदान की.'

वह जितनी गहराई से संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य से जुड़े थे, उतनी ही गहराई से बाउल और भक्ति गीतों से भी.

अपनी माटी के कबीर और लालन फकीर के जातिमुक्त समाज के आग्रह को उन्होंने अपनी संवेदना से संवारा और उनके आधुनिक अर्थ दिए. समाज, राजनीति और साहित्य को मनुष्य के निकष पर देखना संवारना एक विचार ही है, टैगोर ने इसे संभव किया.'

7 मई 1861 को कोलकाता में जन्मे टैगोर ने पूरी मानव जाति और उसकी चेतना को अपने साहित्य से समृद्ध किया. उन्होंने भारत को सांस्कृतिक ऊंचाइयां दी. मानव जाति को आजादी के नए अर्थ दिए.

'जब तुम्हारी बात कोई नहीं सुने, तब उसे अकेले चलने' का मंत्र दिया.

आज उनकी शब्द हमारी धड़कनों और वजूद के हिस्सा बन गए हैं. उनके जन्मदिन पर उनका नमन.

किसी ने कलम से कहा, देखना, कहीं सच न लिख देना वरना सिर कलम हो जायेगा।

आगे से कलम ने जवाब दिया, अरे पगले, सिर कलम करा कर ही तो मैं कलम बनी हूं।

पृष्ठ 10 का शेष.. (विज्ञान और....)

जिसने मानव के विकास में बाधा डाली है। जिसने मानवता को टुकड़ों में बांटा है। साइंसदान, अक्सर नास्तिक होते हैं। लेकिन धार्मिक प्राणी कहेंगें, 'साइंसदानों को अक्ल तो हमारे प्रमात्मा ने ही दी है।'

लेकिन ऐसे मूर्ख इतना नहीं सोचते कि उनके परमात्मा ने सारी अक्ल नास्तिकों को क्यों दे दी, धार्मिक प्राणियों को इतना मन्दबुद्धि क्यों बनाया ?

पिछले 150 साल में, जिन अविष्कारों ने दुनिया बदल दी, वे ज्यादातर नास्तिकों ने किये या उन आस्तिकों ने किये जो पूजा-पाठ, इबादत नहीं करते थे। अंधविश्वास और कट्टरता से भरे किसी भी धर्म वालों ने ऐसा कोई अविष्कार नहीं किया, जिससे दुनिया का कुछ भला होता है। हाँ यह जरूर है कि ये अपनी किताबों में विज्ञान जरूर खोजते रहते हैं लेकिन अगली खोज क्या होगी यह नहीं बताएंगे जबतक अगली खोज सफल न हो जाये उसके बाद कहेंगे यह तो हमारी किताब में पहले से ही मौजूद थी।

इन्सान को उसके विकसित दिमाग ने ही इन्सान बनाया है, नहीं तो वह चिंपैंजी की नस्ल का एक जीव ही है, जो इन्सान अपना दिमाग प्रयोग नहीं करते, वे इन्सान जैसे दिखने वाले जीव होते हैं पूर्ण इन्सान नहीं होते। अपने दिमाग का बेहतर इस्तेमाल कीजिये अंदर जो अंधविश्वासों का कचरा भरा है, मान्यताओं को साइड कीजिए, पूर्वाग्रहों को जला दीजिये, अंधेरा मिट जायेगा। आपके अंदर रौशनी हो जायेगी।

आस्था से नहीं विज्ञानं से देश आगे बढ़ेगा अध्यात्म, आस्था को अलग करके यदि किसी भी देश में केवल शिक्षक वर्ग धर्मनिर्पेक्ष हो जायें खासकर विज्ञान के शिक्षक तो यकीन कीजिए उस देश का मुकाबला पूरी दुनिया में कोई नहीं कर सकेगा। क्योंकि बाकी पीढ़ियां शिक्षकों से सीखती है और एक शिक्षक का तथ्यात्मक होने की बजाय भावनात्मक होना या विचारधाओं के एवज में झूठ परोसना कई पीढ़ियों को अज्ञानी ही नहीं मानसिक अपंग भी बना सकता है।   .

क्रमिक विकास का सिद्धांत
(Theory of evolution)

क्रमिक विकास का सिद्धांत (Theory of evolution) विज्ञान के इतिहास में अब तक प्रतिपादित कुछ सबसे प्रसिद्ध, बेहतरीन और प्रमाणिक सिद्धांतों में से एक है जो विज्ञान की तमाम शाखाओं जैसे जीवाश्म विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, अनुवांशिकी इत्यादि द्वारा उपलब्ध कराये गए अनेकों अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध है। यह सिद्धांत बेहद रोमांचक है क्योंकि यह हमारी कुछ आदिम जिज्ञासाओं का जवाब देता है....हम कहाँ से आये ? जीवन कहाँ से आया ? ये जैव विविधता कैसे उत्पन्न हुयी ?

सदियों से मनुष्य के पास इन सवालों का कोई तर्कसंगत उत्तर नहीं था सिवाय कुछ धर्मजनित दार्शनिक सिद्धांतों के, जो कितने सत्य हैं कोई नहीं जानता था। इस सिद्धांत ने मानवता के इतिहास में पहली बार न केवल मानव को अपने अस्तित्व स्रोत तलाशने का मार्ग दिखाया बल्कि यह भी बताया कि पृथ्वी पर मौजूद सम्पूर्ण जैव विविधता आपस में सम्बंधित है और यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया के परिणामस्वरूप अस्तिव में आई है। यह लेख आपको क्रमिक विकास के मूलभूत सिद्धांतों से आपका परिचय कराने के साथ-साथ वे कैसे कार्य करते हैं यह भी समझने में मदद करेगा।

डार्विन ने सन 1859 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ऑन द ओरिजिन ऑफ स्पिशीज' में इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार प्राकृतिक वरण ही जीवों में बदलावों को गति देता है जिसके कारण लम्बे समय अन्तराल में नयी जैव प्रजातियों का विकास होता है। इस सिद्धांत के तीन प्रमुख बिंदु हैं।

1. किसी एक परिवेश में रहने वाले किसी जीव प्रजाति के सदस्य न केवल शारीरिक रूप से बल्कि गुण व्यवहार इत्यादि से परस्पर आंशिक रूप से भिन्न होते हैं।

2. जिन सदस्यों के गुण उन्हें उस परिवेश में अपनी ही प्रजाति के सदस्यों पर बढ़त प्रदान करते हैं उनके बचे रहने और संतानोत्पत्ति की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसी को प्राकृतिक चुनाव अथवा वरण कहा जाता है।

3. इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी प्राकृतिक चुनाव के कारण उन गुणों का निरंतर विकास होता है और एक इसी के कारण एक लम्बे अंतराल में एक बिल्कुल नयी जैव प्रजाति अस्तित्व में आती है।

डार्विन ने जब इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया था तब तक अनुवांशिकी और डीएनए के बारे में कोई खोज नहीं हुयी थी, अतः जीवों में विभिन्नताएं किस कारण से आती हैं इसको समझा नहीं जा सका था। परन्तु आज हम जानते हैं जीवों में भिन्नताएं डीएनए और उसमें कालांतर में होने वाले म्युटेशन के कारण आती हैं।

डीएनए अणुओं की एक चेन जैसी जटिल संरचना होती है जो जेनेटिक सूचनाओं का स्रोत होती है। डीएनए में मौजूद जेनेटिक सूचनाएं ही किसी जीव के शारीरिक विकास, अंगों की बनावट, उनकी कार्यप्रणाली, संतति और व्यवहार को निर्धारित करती है। जीव के शरीर की हर कोशिका में यह डीएनए मौजूद होता है। जब भी कोई कोशिका विभाजित होती है तो वह कोशिका इस डीएनए की कॉपी तैयार करती है। कॉपी तैयार करने की यह प्रक्रिया बेहद कुशल होती है लेकिन फिर भी इसमें अशुद्धि आने की सम्भावना बनी रहती है। हालाँकि अधिकांश मामलों में डीएनए इन अशुद्धियों को स्वतः ठीक कर लेता है। लेकिन फिर भी कुछ मामलों में ये अशुद्धियाँ डीएनए का ही हिस्सा बन जाती हैं इन्हीं अशुद्धियों को म्युटेशन कहा जाता है।

इन म्युटेशन के कारण जीव के शारीरिक अंगों और व्यवहार में कुछ बदलाव आते हैं। ये बदलाव दो प्रकार के हो सकते हैं हानिकारक और लाभदायक। अधिकांश बदलाव हानिकारक ही होते हैं लेकिन कुछ बदलाव लाभदायक भी होते हैं जो उस जीव को अपने परिवेश में अन्य जीवों पर प्रतिस्पर्धा में बढ़त प्रदान करते हैं जिसके कारण उस जीव के बचे रहने और संतति उत्पन्न की संभावनाएं

बढ़ जाती हैं और इस तरह वह म्युटेशन आगे की पीढ़ियों में प्रसारित होता जाता है। जबकि हानिकारक म्युटेशन जीव को प्रतिस्पर्धा में पछाड़ देते हैं जिसके कारण उस जीव के बचे रहने और संतति पैदा करने की संभावनाएं कम हो जाती हैं, फलस्वरूप वे म्युटेशन आगे की पीढ़ियों में नहीं जा पाते और इस तरह प्राकृतिक चुनाव उन्हें चलन से बाहर कर देता है।

जिन जीवों में लैंगिक प्रजनन होता है वहां यह प्रक्रिया और दिलचस्प हो जाती है। चूँकि लैंगिक प्रजनन में दो जीवों के डीएनए आपस में संयुक्त होकर भावी संतति को जन्म देते हैं अतः इस प्रक्रिया में अधिक विविधताओं को जन्म लेने का अवसर प्राप्त होता है, और इसके साथ ही प्रकृति को प्रयोग करने के लिए बड़ा कैनवास मिल जाता है। इस तरह प्राकृतिक चुनाव पीढ़ी दर पीढ़ी जीवों को आकार देता जाता है। किसी जीव प्रजाति में बदलावों का यह सिलसिला एक लम्बे कालांतर में एक बिल्कुल ही नयी जीव प्रजाति को विकसित कर देता है जो दिखने, आकार, प्रकार, व्यवहार में पूर्व प्रजाति से काफी भिन्न होती है। यही क्रमिक विकास है जिसे हम प्रकृति के अदृश्य हाथों की संज्ञा दे सकते हैं जिसने धरती पर अनगिनत जैव विविधताओं को आकार दिया है।

प्राकृतिक चुनाव किस तरह जैव विविधताओं को आकार देता है इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण हमारे एकदम पास में मौजूद है। मनुष्य का सबसे भरोसेमंद दोस्त जिसकी वफादारी की मिसालें दी जाती हैं, जी हाँ कुत्ते। दुनिया भर में मौजूद कुत्तों की तमाम प्रजातियां 'जो दिखने में आकार, प्रकार, व्यवहार में एकदूसरे से बहुत भिन्न प्रतीत होती हैं' वास्तव में एक ही प्राचीन पूर्वज की संतानें हैं।

कुत्तों का विकास लगभग 50 हजार वर्ष पूर्व भेडियों की एक प्रजाति से हुआ था जो कि अब लुप्त हो चुकी है। शिकार में उपयोगी होने के कारण कुत्ते धीरे-धीरे प्राचीन काल में मौजूद दुनिया के सभी मानव समूहों में पहुँच गए और भिन्न भिन्न स्थानों के पर्यावरण और मानवीय हस्तक्षेप (सेलेक्टिव ब्रीडिंग) ने उन्हें समय के साथ इतने भिन्न-भिन्न रंग रूप और आकारों में ढाल दिया। मानव द्वारा अंजाम दी गयी सेलेक्टिव ब्रीडिंग के कारण कुत्तों की बहुत सी प्रजातियाँ तो मात्र पिछले कुछ 200 वर्ष के दौरान ही विकसित हुयी हैं। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि जिस तरह कृत्रिम चयन के कारण जीवों में बेहद कम समय में नाटकीय बदलाव आ सकते हैं ठीक उसी तरह प्राकृतिक चयन भी जीवों को आकार दे सकता है।

हमारे पालतू जानवर और वे वनस्पतियाँ जिनका हम उपभोग करते हैं को हमारे चयन ने इतना बदल दिया है कि वे आज बिल्कुल ही भिन्न रूप में हमारे सामने हैं। अधिक दूध के उत्पादन के कारण दुधारू नस्लों को लगातार बढ़ावा दिए जाने के कारण आज हमारे दुधारू पशु न केवल अपने शिशु की दैनिक आवश्यकता से बहुत अधिक दूध देते हैं बल्कि शिशु की दूध पर निर्भरता खत्म हो जाने के बावजूद दूध देते रहते हैं। दुनिया का कोई भी स्तनपायी जीव अपने शिशु के लिए उसकी आवश्यकता से इतने अधिक दूध का उत्पादन नहीं करता। सेलेक्टिव ब्रीडिंग ने केलों से बीजों को गायब कर दिया है जबकि केले की जंगली प्रजाति में आज भी बीज पाए जाते हैं। बंदगोबी कभी एक लम्बा पत्तेदार पौधा था जो अब एक ग्लोब जैसा बन चुका है। जंगली स्ट्रॉबेरी की तुलना में हमारे द्वारा उगाई जाने वाली संकर स्ट्रॉबेरी लगभग 10 गुना बड़ी है और अधिक मीठी भी।

इसी तरह हमारे दैनिक उपभोग की लगभग सभी जैविक वस्तुएं आज जिस रूप में हैं जब हमने उनका उपभोग करना प्रारंभ किया था तब वे वैसी नहीं थीं। यही नहीं हमने सेलेक्टिव ब्रीडिंग द्वारा उनकी तमाम किस्में भी विकसित कर ली हैं जो गुण-धर्म में एक दुसरे से एकदम भिन्न हैं। तो जब इतने कम समय में मानवीय हस्तक्षेप सैकड़ों जैव प्रजातियों को आकार दे सकता है तो जरा सोचिये अरबों वर्ष के अंतराल में प्रकृति कितनी जैव विविधताओं को जन्म दे सकती है?

आज दुनिया में मौजूद कुत्तों की प्रजातियाँ एक दूसरे से इतनी भिन्न हैं कि वे देखने में बिल्कुल ही भिन्न जीव लगते हैं। दुनिया का सबसे छोटा कुत्ता टी कप पडल मात्र आधा किलो का है तो तिब्बतियन मेस्टिफ 90 किलो का है। लेकिन बावजूद इसके वे एक ही जीव प्रजाति के अंतर्गत आते हैं।

क्योंकि इतना भिन्न दिखने के बावजूद उनका डीएनए बहुत भिन्न नहीं है।

कुत्तों की दो प्रजातियों में आकार व्यवहार के फर्क के कारण भले ही प्राकृतिक रूप से उनका सहवास करना संभव न हो लेकिन यदि कृत्रिम गर्भधान कराया जाए तो मादा एकदम स्वस्थ पिल्लों को जन्म दे सकती है। इससे पता चलता है कि कुत्तों में दो भिन्न प्रजातियों के डीएनए आज भी इतने भिन्न नहीं हैं कि वे जुड़कर एक स्वस्थ भ्रूण का निर्माण न कर सकें। लेकिन जब एक ही जीव की दो भिन्न प्रजातियाँ विकासक्रम के एक लम्बे सफर पर अलग-अलग विकसित होती हैं तो एक लम्बे कालांतर में एक समय ऐसा आता है जब कि उनके डीएनए में इतनी भिन्नताएं आ जाती हैं कि वे जुड़कर एक स्वस्थ भ्रूण का निर्माण नहीं कर सकते। इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है खच्चर।

खच्चर असल में कोई जीव प्रजाति नहीं है बल्कि यह दो भिन्न जीवों के संयोग से निर्मित है। घोड़े और गधे के कृत्रिम गर्भधान से खच्चर का जन्म होता है। लेकिन खच्चर स्वयं अपनी संतति नहीं पैदा कर सकता, क्योंकि यह नपुंसक होता है। घोड़ा और गधा एक ही प्राचीन पूर्वज की दो भिन्न वंशबेलें हैं जो कि विकासक्रम में इस अवस्था पर पहुँच चुके हैं जबकि उनका डीएनए आपस में संयुक्त होकर एक स्वस्थ भ्रूण को जन्म नहीं दे सकता।

इसी तरह एक लम्बे कालांतर के बाद ये भिन्नताएं इतनी ज्यादा हो जाती हैं कि तब शुक्राणु भी अंडे को निषेचित नहीं कर पाता। शेर और बिल्ली ये दोनों एक ही संयुक्त पूर्वज की भिन्न-भिन्न वंशबेलें हैं। लेकिन ये दोनों अपने विकास के पथ पर इतना आगे निकल चुके हैं कि कृत्रिम गर्भधान द्वारा भी गर्भधारण नहीं हो सकता।

लेकिन यहाँ एक सवाल पैदा होता है, कि आखिर वह क्या कारण है जिसकी वजह से एक ही प्राचीन पूर्वज से उत्पन्न संतानें विकासक्रम में भिन्न-भिन्न मार्गो पर विकसित होती हुयी दो भिन्न प्रजातियाँ बन जाती हैं?

इसका प्रमुख कारण है पृथक्कीकरण। यानी एक ही प्रजाति के दो समूहों के मध्य आया कोई ऐसा अवरोध जो उन्हें आपसी संपर्क से वंचित कर दे। ऐसा दो प्रमुख कारणों से हो सकता है। भौगोलिक कारणों से और ऐच्छिक अथवा व्यहवारगत कारणों से।

भौगोलिक पृथकक्कीकरण में एक ही प्रजाति के दो समूहों के बीच कोई भौगोलिक अवरोध आ जाता है, जिसके कारण वे आपसी संपर्क से वंचित हो जाती हैं और अलग-अलग विकसित होती हैं। एक लम्बे समय अंतराल के बाद उनके डीएनए में इतनी भिन्नताएं आ जाती हैं कि भौगोलिक अवरोध न रहने के बावजूद भी वे आपसी संपर्क के इच्छुक नहीं रहते, और यदि संपर्क हो भी जाए तो भी एक स्वस्थ संतति को जन्म देने में असमर्थ होते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि टेक्टोनिक प्लेटों के सरकने के कारण पृथ्वी पर लम्बे कालखंड में मुख्यभूमि से अलग होकर नए महाद्वीपों के बनने और समुद्र में ज्वालामुखीय गतिविधियों के कारण नए द्वीपों के बनने की घटनाएं होती रही हैं जिसकी वजह से कई बार जीव प्रजातियों को भौगोलिक पृथक्कीकरण का सामना करना पड़ा है। इसके साथ ही पर्वतों और घाटियों के बनने और नवीन जलधाराओं द्वारा जमीन के दो हिस्सों को अलग कर देने की घटनाएं भी घटती रही हैं। कई बार भौगोलिक दूरियां भी पृथक्कीकरण का काम करती हैं। डार्विन के मन में क्रमिक विकास के सिद्धांत का विचार जिन जीवों के अध्ययन की वजह से आया उनके भीतर आयी विभिन्नताओं का कारण भौगोलिक पृथक्कीकरण ही था।

गैलापोगस द्वीप समूह 'जो कि दक्षिणी अमेरिका के निकट प्रशांत महासागर में स्थित छोटे-छोटे द्वीपों का एक समूह है' की यात्रा के दौरान डार्विन ने पाया कि हर द्वीप पर मौजूद कछुओं और चिड़ियों की प्रजाति एक दुसरे से भिन्न है। उन्होंने यह भी पाया कि वहां के स्थानीय लोग किसी कछुए अथवा चिड़िया को देखकर यह बता देते थे कि यह किस द्वीप की निवासी है। बाद में अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि द्वीपों पर मौजूद भोजन के प्रकार और उस पर पाए जाने वाले जीवों में सीधा सम्बन्ध है।

जैसे निर्जन और पथरीले द्वीपों पर पायी जाने वाली कछुओं की प्रजाति का कवच काठी के आकार का था वहीं उर्वर द्वीपों पर रहने वाली कछुओं की प्रजाति का कवच गुम्बदाकार था। निर्जन

द्वीपों पर चूँकि भोजन के नाम पर केवल कैक्टस के फल ही मौजूद थे अतः उन तक पहुँचने के लिए कछुओं को अपनी गर्दन को ऊँचा उठाना पड़ता था, गुम्बदाकार कवच जिसमें बाधा था अतः प्राकृतिक चयन ने उन कछुओं को प्राथमिकता दी जो अपनी गर्दन को ऊँचा उठा सकते थे, जिसने कालांतर में काठी के आकार वाले कवच के कछुओं को विकसित किया। आज हम जानते हैं कि डार्विन का सोचना एकदम दुरुस्त था क्योंकि जेनेटिक मैपिंग ने यह सिद्ध कर दिया है कि गैलापोगस द्वीप पर पायी जाने वाली कछुओं की विभिन्न प्रजातियाँ वास्तव में एक ही प्राचीन प्रजाति से विकसित हुयी हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि जीवनयापन के लिए नए अवसरों की तलाश में कोई जीव समूह किसी नए परिवेश अथवा व्यहवार को अपना लेता है, उसकी भावी संततियां भी उसी परिवेश के अनुकूल खुद को ढाल लेती हैं और कोई भौगौलिक बाधा न होते हुए भी अपनी प्रजाति के अन्य समूहों से उनका संपर्क खत्म हो जाता है। हालाँकि इस पर वैज्ञानिकों में मतभेद रहा है, लेकिन पिछले कुछ वर्षो में ऐसे कई उदाहरण सामने आये हैं।

जैसे अभी हाल ही में उत्तरी अमेरिका में सेबों में अंडे देने वाले वाली एक फल मक्खी में इस व्यवहार को खोजा गया है। सेब के वृक्ष उत्तरी अमेरिका में प्रवासी वृक्ष हैं जिनको 19वीं सदी में बाहर से लाकर रोपित किया गया था। वैज्ञानिकों ने पाया कि इन वृक्षों के फलों में अंडे देने वाली एक फल मक्खी वास्तव में वहां पाए जाने वाले एक फल हाथोर्न में अंडे देने वाली एक फल मक्खी की वंशज है। अभी तक कीटों पर हुए शोध यह बताते हैं कि हर कीट का एक विशेष वृक्ष से सम्बन्ध रहता है। इनका जीवनचक्र उसी वृक्ष विशेष पर निर्भर करता है। यानी हर फल मक्खी किसी विशेष फल पर ही अंडे देती है। लेकिन हाथोर्न फल में अंडे देने वाली एक मक्खी ने नए अवसरों की तलाश में सेब के फल को चुना और उसकी संततियां भी उसी सेब के वृक्ष पर आश्रित हो गयीं और कालांतर में एक नयी प्रजाति के रूप में विकसित हो गयीं।

अब जब चूँकि हम ये जान गए हैं कि किस तरह प्राकृतिक चुनाव नयी जैव प्रजातियों को विकसित करता है तो मन में ये विचार सहज ही आता है कि क्या पृथ्वी पर मौजूद सम्पूर्ण जीवन आपस में सम्बंधित हो सकता है? डार्विन के क्रमिक विकास के सिद्धांत का दूसरा चरण यही कहता है जिसकी पुष्टि पिछले 150 वर्षो में तमाम वैज्ञानिक शोधों में समय-समय पर होती रही है। यानी धरती पर मौजूद सम्पूर्ण जैव विविधता एक ही आदि जीव के क्रमिक विकास के फलस्वरूप अस्तित्व में आयी है।

दुनिया की सम्पूर्ण जैव विविधता को यदि हम वर्गीकृत करें तो हमें जीवन के विकास का एक विशाल वृक्ष मिलता है जिसमें तमाम शाखाएं उप-शाखाएं हैं। इस वृक्ष की दो भिन्न शाखाओं का उद्‌गम खोजते हुए यदि हम ऊपर से नीचे आयें तो एक स्थान पर हम पायेंगे कि दोनों शाखाओं का उद्‌गम एक ही है। यानी धरती पर मौजूद हर जीव किसी दुसरे जीव के साथ कोई संयुक्त पूर्वज साझा करता है। ठीक उसी तरह जैसे आपके दादा जी आपके सगे भाइयों, चचेरे भाइयों, आपके पिता, चाचा, ताया के संयुक्त पूर्वज हैं।

पृथ्वी पर मौजूद जीवन के दो प्रारूप परस्पर कितने ही भिन्न हों लेकिन वे दूर के सम्बन्धी हैं। हम अपनी बात करें तो जीवन के वृक्ष पर चिम्पांजी हमारा निकटतम सम्बन्धी है, उसके बाद गोरिल्ला, ओरेंगोटेन। निकटतम सम्बन्धी होने का अर्थ है कि धरती पर वर्तमान में मौजूद जीव प्रजातियों में चिम्पाजी वह जीव है जिसके साथ मानव सर्वाधिक निकट संयुक्त पूर्वज साझा करता है। लेकिन जीवन के वृक्ष पर जब हम निकटतम संयुक्त पूर्वज की बात करते हैं तो निकटतम का अर्थ भी हजारों से लाखों वर्ष पूर्व हो सकता है।

मानव की वंश शाखा वानर प्रजाति से लगभग 60 लाख वर्ष पूर्व अलग हुयी और विकास क्रम में विभिन्न मानव प्रजातियों से होती हुयी वर्तमान मानव के रूप में विकसित हुयी। एक समय था जब धरती के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न मानव प्रजातियाँ मौजूद थीं। लेकिन वे सभी विभिन्न कारणों से समय के साथ लुप्त हो गयीं और वर्तमान प्रजाति यानी होमोसेपियंस यानी हम बचे रहने में कामयाब रहे।

-अर्पित द्विवेदी जी के सौजन्य से

कोरोना के मरीजों में एक नया फंगस

-नवमीत

ब्लैक फंगस, वाइट फंगस के बाद अब एक और फंगस असपरजिलोसिस कोरोना से उबर रहे मरीजों में सामने आ रहा है।

ये आखिर हो क्या रहा है? क्यों इनके मामले बढ़ रहे हैं और ये कोरोना के मरीजों में ही क्यों हो रहे हैं? ये भारत में ही ज्यादा क्यों हो रहे हैं? क्या इसके पीछे भी कोई साजिश है? बिस्वरूप चौधरी के विद्वान शिष्यगण व फैनगण इस पर भी जरूर प्रकाश डालेंगे।

खैर। फफूंद के ये तमाम संक्रमण आमतौर पर होने वाले संक्रमण नहीं हैं। इस तरह के इन्फेक्शन को ऑपर्चुनिस्टिक इन्फेक्शन यानि अवसरवादी संक्रमण कहा जाता है। ये कब होते हैं? असल में कोई भी बीमारी या इस केस में कहें संक्रमण तब होता है जब एजेंट (यानि बीमारी फैलाने वाला सूक्ष्म जीव), होस्ट (यानि हम) और एनवायरनमेंट (यानि हमारा वातावरण), इन तीनों का संतुलन बिगड़ जाता है। वह कैसे? वह ऐसे कि अगर एजेंट नया हो, या अपना स्वरूप बदल ले, या संख्या में ज्यादा हो जाए। होस्ट कमजोर हो जाए, किसी बीमारी की वजह से या चोट की वजह से या फिर किन्हीं दवाओं की वजह से। वातावरण खराब हो जाए। या फिर तीनों हो जाएं। तब हमें इन्फेक्शन लग जाता है। तो ये अवसरवादी संक्रमण क्या होता है? हमारे शरीर और आसपास के वातावरण में असंख्य सूक्ष्म जीव जिसमें बैक्टीरिया, वायरस, प्रोटोजोआ और फफूंद सब विद्यमान होते हैं। लेकिन हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता यानि इम्युनिटी इतनी मजबूत होती है कि वह इनमें से ज्यादातर को हमारे शरीर पर हमला नहीं करने देती। लेकिन अगर किसी वजह से शरीर की इम्युनिटी कमजोर हो जाए तो? जैसे किसी संक्रमण से। या चोट से। या लम्बी बीमारी जैसे कि डायबिटीज से। ज्यादातर यह एड्स के रोगियों में होता है। (दीगर बात ये है कि बिस्वरूप और उसके विद्वान शिष्यगण एड्स को भी साजिश मानते हैं)। तो ऐसे मरीजों पर ये सूक्ष्मजीव अवसर का फायदा उठाकर हमला बोल देते हैं। इसे अवसरवादी संक्रमण कहा जाता है। बहरहाल एड्स के अलावा भी यह हो सकता है। जैसे कि किन्हीं खास दवाओं के सेवन से। वे दवाएं जो इम्युनिटी को दबाने के लिए दी जाती हैं। मसलन स्टेरॉइड्स। या कैंसर की दवाएं। इनमें से स्टेर इड्स सस्ती भी होती हैं। और धड़ल्ले से इस्तेमाल भी की जाती हैं। कोरोना महामारी के दौरान तो ये सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाली दवाएं हैं। लेकिन इस तरह की दवाएं दुधारी तलवार होती हैं। ये बीमारी से रिकवरी तो करवाती हैं साथ में इम्युनिटी को भी दबा देती हैं। तो इसकी वजह से ऑपर्चुनिस्टिक इन्फेक्शन यानि अवसरवादी संक्रमण होने का खतरा बढ़ जाता है। जैसे ब्लैक फंगस, वाइट फंगस, टीबी ब्जी हाँ टीबी भीऋ। लेकिन फिर आप सवाल कर सकते हैं कि स्टेरॉइड्स तो अन्य बीमारों में भी देते हैं जैसे सोरायसिस में। उनमें तो नहीं होता। तो इसके जवाब के लिए हमें फिर से एजेंट, होस्ट व एनवायरनमेंट के त्रिकोण का रुख करना पड़ेगा। कोरोना के केस में सिर्फ होस्ट नहीं बल्कि एनवायरनमेंट भी गड़बड़ में है। साफ सफाई की कमी, बिना साफ किये हुए ऑक्सीजन मास्क व अन्य सामान भी इसके प्रसार में भूमिका निभाते हैं। फिर सोरायसिस या अन्य बीमारियां इतने बड़े पैमाने पर एकदम से नहीं फैल रही। जबकि कोरोना का तो एक तरह से विस्फोट हुआ है जिसकी वजह से फंगस के शिकार मरीजों का प्रतिशत कम होते हुए भी असल संख्या बहुत ज्यादा हो गई है। इसके अलावा डायबिटीज एक ऐसी बीमारी है जो न केवल इम्युनिटी को कमजोर करती है बल्कि बीमारी व चोट से उबरने का समय भी बढ़ा देती है। (मजे की बात ये है कि बिस्वरूप साहब डायबिटीज को भी साजिश बताते हैं और तीन दिन में डाइट से इसे ठीक करने का दावा करते हैं।)

तो ये काफी सारे फैक्टर्स हैं जो इस तरह की स्थिति पैदा कर रहे हैं।

...शेष पृष्ठ 35 पर..

सच क्या है-छाप दिया

-आर. पी. गांधी

हमारे दैनिक जीवन की भाषा में कुछ ऐसे वाक्य हैं जिनका प्रायः प्रयोग होता रहता है। उदाहरण के लिए 'होनी अटल है, वह हो के रहती है', 'भाग्य बलवान है जिसके आगे किसी की नही चलती, हम लाख चाहे जब तक ईश्वर की सहमति नही होती कुछ नही हो सकता।' गुरू नानक देव जी भी कहते है 'करे करावै आपे आप मानुस के नही कुछ भी हाथ। हमारा सनातन चिन्तन भी हमें ये बताता है कि हम सब कठपुतलियां हैं, जिसकी डोरियां ऊपर वाले के हाथ में है। और जैसा वह चाहे हमें नचाता है और हम उसके सामने विवश है। अगर हम ऊपर कही गई बातों को सच माने लें तो दुनिया की हर अच्छाई व बुराई ऊपर वाले के साथ जुड़ जाती है। अगर किसी के भाग्य में कत्ल होकर मरना था तब कातिल दोषी नही बनता। भाग्य लिखने वाला ही दोषी कहलाएगा। हर रोज कितने ही लोग आपसी झगड़ो, दुर्घटनाओं व बिमारियों में मर जाते है। तब प्रश्न उठता है कि जिसको लोग ईश्वर मानते है क्या वह इन सब बातों के लिए जिम्मेदार है। देश के हर शहर के न्यायालय में प्रतिदिन कितने ही मुकद्मे लड़े जाते हैं। अगर सब कुछ करने वाला वह ऊपर वाला है, तब इन अदालतों, जजों और वकीलों की क्या आवश्यकता है। दुनिया में हमारा देश जनसख्ंया की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर है परन्तु ओलम्पिक खेलों में हम छोटे-छोटे देशो से भी फिसड्डी साबित होते हैं। क्या सरकारी नीतियां या हमारे खिलाड़ियों की कमजोरी कहीं भी जिम्मेवार नहीं है? जीवन के हर मोड़ पर हम पुरातन विचारों से इतने ओत-प्रोत हैं कि हम पुरू-पुरातन विचारों को श्रद्धा के रूप में देखते हैं और सच जानने का प्रयास नही करते। लाखो वर्ष हमने चेचक को भी शीतला मां बना के पूजा है। जबकि यह रोग कुरूपता अन्धापन और मौत का कारण बनता था। परन्तु जब विज्ञान ने उन्नति की तो पाया कि एक विशेष प्रकार का वायरस इस बिमारी का कारण है। वायरस को नष्ट करने का तरीका ढूंढा गया और इस कष्टदायक बिमारी से मुक्ति मिली। आज गर्भवती मां को ही भिन्न-भिन्न टीके लगा दिए जाते हैं जिससे होने वाले बच्चे को पहले ही कुछ रोगों से सुरक्षा मिल जाती है। अब भी खसरा छोटे-छोटे लाल दानों के रूप में शरीर पर दिखाई देता है। उसे भी हम मां का प्रवेश मान कर पूजा करते हैं। जबकि कोई भी रोग देवी-शक्ति न होकर रोग होता है। हमें उसके समाधान के लिए वैज्ञानिक रास्ता अपनाना चाहिए न कि पूजा। एक समय था जब प्लेग जैसी बीमारी को भी हम मृत्यु देवी का नाम देकर पूजा करते रहे हैं। पोलियो का रोग जो एक वायरस द्वारा पैदा होता है। इससे बचाव के लिए अब बचपन में ही बच्चे को कुछ बूंदों का सेवन करा दिया जाता है। इससे बच्चा इस रोग से सुरक्षित हो जाता है। जबकि अतीत में अनगणित लोग अपंग होकर अधूरा जीवन जीने को मजबूर होते रहे हैं। श्रद्धा हमारे जीवन के किसी भी हिस्से में काम नही आती। कारण इसमें 'क्यों' की व्यवस्था नही होती। जबकि विकास की जननी 'क्यों' है। अवैज्ञानिक चिन्तन हमें रूढ़िवादी सोच की ओर धकेलता है जबकि हमारा यह दायित्व बनता है कि हर होने वाली घटना को जानने का प्रयास करें जिससे हमें समाधान मिल सके। धरती का मानव बुद्विजीवी होने के उपरान्त भी प्राकृतिक घटनाओ के पीछे किसी दैवी-शक्ति का अनुमान लगाकर पूजा, श्रद्धा, और भक्ति द्वारा उसका समाधान ढूढता है। सूर्य पूजा, पेड़-पूजा आदि ज्यादा पुरानी बातें नहीं है। इन्ही की पूजा से वह अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढता रहा। मनुष्य के हाथों निर्मित मूर्तियां जिनमे कोई शक्ति नही होती। नहीं वे हमें कोई लाभ या हानि पहुंचा सकती है। आए दिन ऐसी पूजा के चक्र में कितने ही लोग भगदड़ अथवा दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं।

मूलशंकर (दयानन्द) जब 14 वर्ष का था तो इसने शिवरात्रि का व्रत रखा और मन्दिर में जागता रहा। आधी रात के करीब उसने देखा एक चूहा शिव की मूर्ति पर चढ़ गया। उसने मूर्ति पर पेशाब कर दिया और मूर्ति पर चढ़ाया गया प्रसाद

भी खाने लगा। मूलशंकर सोचने लगा कि शिव जो शिव चूहे से अपनी रक्षा न कर सका वह हमारी क्या रक्षा करेगा? तब उसने पुजारी को जगाया और उससे यहीं प्रश्न पूछा कि जो शिव चूहे से अपनी रक्षा नही कर सकता वह हमारी क्या रक्षा करेगा? पुजारी का उतर था अपने पिता से पूछो। जिस पर मूल शंकर ने जवाब दिया 'यहां के पुजारी तुम हो मेरे पिता नही'। जिस पर मूलशंकर ने पुजारी पर दवाब बनाया, जिस पर पुजारी ने उत्तर दिया कि यह केवल मूर्ति है यह सच्चा शिव नहीं है। तब मूलशंकर ने पुजारी को कहा कि मै तो सच्चे शिव की तलाश में हूं। यहां क्या कर रहा हूं? इतना कह कर वह वापिस अपने घर आ गया और विचलित रहने लगा। घर वालों ने उसे उलझन में देख उसकी शादी करनी चाही परन्तु मूलशंकर घर से भाग गया। इधर-उधर भटकने के बाद वह मथुरा में स्वामी विरजानन्द के पास पहुंचा। इसने जब विरजानन्द का दरवाजा खटखटाया तो स्वामी जी ने पुछा कौन है? जिस पर मूलशंकर का उतर था 'यही जानने तो मै आपके पास आया हूं'। इस पर विरजानन्द ने पूछा 'कुछ पढ़े-लिखे हो? मूलशंकर का उतर था 'मेरे पास कुछ किवंदतिया हैं। जिस पर स्वामी जी ने कहा 'अगर कुछ नया सीखना है तो इनको यमुना में फैंक आओ। अब वह स्वामी दयानन्द बन गया। स्वामी दयानन्द ने जीवन पर मूर्ति पूजा के विरोध में प्रचार किया और पुरातन-पंथियों ने इसे जहर देकर कई बार मारना चाहा मगर वह जहर को उल्टी करके निकाल देता। अन्त में जोधपुर शहर से ही ये मृत्यु को प्राप्त हुए। स्वामी दयानन्द ने सामाजिक सुधार के अनेक कार्य किए। मुख्य रूप से नारी शिक्षा, विधवा विवाह, सति प्रथा का विरोध, बाल-विवाह का विरोध और अछूत उद्धार आदि। स्वतन्त्रता-प्राप्ति में भी आर्य समाज का विशेष योगदान रहा।

आज भी हमारे गांवों-शहरों में खेड़ा की पूजा की जाती है जिसमें गुलगुले और लड्डू आदि प्रसाद के रूप में बांट बांटे जाते हैं। जबकि खेड़ा हमें न लाभ पहुंचा सकता है और न हानि। यह हजारों साल पुराना अन्ध-विश्वास है जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता रहता है। जब तक हम वैज्ञानिक सोच नही अपनाते इन पुरानी परम्पराओं से बाहर नहीं आ सकते। दुख तो तब होता है जब हम देखते हैं कि पढ़े-लिखे लोग भी इन बेकार की बातों में ग्रस्त हैं। सच जानने के लिए तीन बातों की आवश्यकता पड़ती है। तर्क, प्रमाण और परख। जो बात इन तीनों बातों पर खरी उतरती है उसे सच माना जा सकता है। दीर्घ काल से मनुष्य सच की खोज में भटक रहा है। जब जब किसी वैज्ञानिक ने जनता के सामने सच लाने का प्रयास किया है तब तब उसको इसकी कीमत चुकानी पड़ी है। विरोध के अतिरिक्त उसको अनेक परेशानियां झेलनी पड़ी। कॉपरनिक्स ने जब सच बताया कि पृथ्वी गोल है तो उन्हे जिन्दा जला दिया गया। कॉपरनिक्स पोलैंड़ के निवासी थे। उसकी मृत्यु के 40 वर्ष बाद गैलीलियो जो इटली के निवासी थे, ने यह बात कही कि पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है तो उस समय के शासकों ने उसको फांसी की सजा सुना दी। वह जेल की अधेंरी कोठरी में साढ़े 6 वर्ष तक कैद रहा और अन्त में जेल मे ही मर गया। ऐसे ही ब्रुनो ने कॉपरनिक्स के विचारों पर पुस्तक लिखी तो उसे कई तरह के दण्ड़ दिए गए। अन्त में सलीब पर चढ़ा कर इसे जिन्दा जला दिया गया। ऐसी कितनी ही घटनाएं हैं कि जब जब किसी ने सच को उजागर किया तो उसे इस सच को उजागर करने की कीमत चुकानी पड़ी और कई मामलों मे तो जीवन से हाथ धोना पड़ा। आज भी धार्मिक कट्टर लोग अन्ध-विश्वास की आलोचना सुनना पसन्द नही करते। अभी हाल में सच के अनुयायी ड़ा० नरेन्द्र दाभोलकर जो लोगों में सच का प्रचार कर रहे थे और अन्ध-विश्वास का विरोध करते थे, उनको दो सिरफिरे नवयुवकों की गोली का शिकार होना पड़ा।

पुरातन समय में रड़िढ बृहस्पति जिसके दर्शन का नाम चार्वाक है, एक भौतिकवादी दार्शनिक था। इसको जिक्र दयानन्द की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में भी मिलता है। इसके शिष्य लोकायत कहलाते थे जिनका साहित्य जला दिया गया और इनको मार दिया जाता था। कारण चार्वाक दर्शन ईश्वर के असितत्व के विरूद्ध है। जिसकी बड़ी वजह उस समय की राजशाही थी। जिसके द्वारा यह प्रचार किया जाता था कि राजा ईवश्र के दूत हैं जिनको जनता पर राज करने के लिए ईश्वर द्वारा भेजा गया। इससे भाग्यवाद का जन्म होता है जो हर प्रकार की क्रान्ति के लिए रुकावट बनता है। आज भी ईश्वर के नाम पर कई प्रकार की लूट-खसूट की

जाती है। यह कहकर सन्तुष्ट किया जाता है कि यह तुम्हारे पिछले कर्मो का फल है। जो तुम भुगत रहे हो। जबकि विज्ञान ने आज यह सिद्व कर दिया है कि आवागमन की कल्पना एक झूठ है। न हमारा पहले कोई जन्म था, न भविष्य में होगा। जो जीवन हम वर्तमान में जी रहे है वही सच्चाई है। सभी धर्म श्रद्वा और अकीदत के नाम पर आदमी को अन्ध-विश्वासी बनाते है और क्यों, कैसे पर पाबन्दी लगा दी जाती है। आध्यात्मवादी सोच में तर्क करने की अनुमति नहीं है। वे नहीं चाहते कि पुरातन ग्रन्थों पर किसी प्रकार का तर्क हो तथा जनता रूढिवादी सोच की दास बनी रहे। शहीद-ए-आजम भगत सिंह ने भी अपनी पुस्तक 'नास्तिक' में इस बात को माना है कि मेरा पहले कोई जन्म नहीं था और न ही मृत्यु के बाद कोई जन्म होगा। भगत सिंह अल्पायु में ही एक अच्छे दार्शनिक थे। पिछले दिनों स्टीफन हाकिन्स जो कि शारीरिक रूप में अशक्त थे और दुनिया के माने हुए खगोलविद थे उन्होने अपनी पुस्तक 'THE GREAT DESIGNER' में वर्णन किया है कि इस ब्रहाण्ड़ का कोई रचनाकार नहीं है। यह सब कुछ विज्ञान में अटल सिद्वान्तों का परिणाम है। यह एक खुली सच्चाई भी है। ब्रहाण्ड़ में हर चीज पदार्थ द्वारा निर्मित है। पदार्थ जिसकी न उत्पति होती है और न ही विनाश होता है जो निरन्तर बना रहता है। जहां तक हमारी दृष्टि नहीं पहुंचती और न ही दूर दर्शी यन्त्र से देखा जा सकता है। वहां भी सिवाय पदार्थ के और कुछ नहीं है।

आध्यात्मवाद मात्र अनुमान कल्पना और अन्ध-विश्वास की उपज है। इसलिए आध्यात्मवादी श्रद्वा की बात करते हैं, तर्क की नहीं। परन्तु भौतिकवादी चिन्तन एक वैज्ञानिक सोच है जो 'क्यों' को खुली छुट देता है और न ही उसे 'परख' से इनकार है जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि पदार्थ ही एक सच है जो यह मानता है कि सृष्टि स्वयं से है। इसका कोई रचनाकार नहीं। अगर हमने फालतू किस्म के आडम्बरों से बचना है तो हमें पदार्थवादी सोच को अपनाना होगा। भाग्य-वाद जो हमें निष्क्रिय करता है उससे बचना अति आवश्यक है। फिल्म जागृति का एक गीत 'मुट्ठी में है तकदीर' के भावों को आचरण में लाना होगा। अमीरी गरीबी ईश्वरीय

आस्तिकता में बुद्धि की जरूरत नहीं होती..

'आस्तिकता सबसे सरल काम है। यह एक परिवारप्रदत्त संस्कार है, जिसे लगभग सभी बच्चे सहज ही सीख लेते हैं। ईश्वर के अस्तित्व को मानने के लिए किसी विद्या-बुध्दि, किसी चिन्तन-मनन, किसी काम में कुशलता की आवश्यकता नहीं है। मंदिरों-मस्जिदों में प्रार्थना-नमाज अदा करते अपने अपने मां-बाप को देखते हुए बच्चे सहज ही आस्तिक हो जाते है। पर नास्तिक बनने के लिए अच्छी-खासी तर्क-बुध्दि, अच्छे-खासे जागृत विवेक और अच्छे-खासे साहस की जरूरत होती है। परम्परा और संस्कार के बोझ को हटाकर सत्य को सत्य कहने में गज़ब का साहस चाहिए। यह साहस गम्भीर अध्ययन-मनन और आत्म-चिन्तन से ही आ सकता है।

ईश्वर में विश्वास का एक नुकसान यह भी है कि मनुष्य ईश्वर के बहाने अपने उत्तरदायित्व से मुक्ति पा लेता है। गलत काम करेगा खुद और उसके अनिच्छित परिणाम सामने आने पर कहेगा-क्या कर सकते हैं, जैसी प्रभु की इच्छा! एक ही वाक्य में वह अपने कार्य-व्यवहार या निर्णय की जिम्मेदारी से भी मुक्त हो गया और ईश्वर के आदेश की नम्रतापूर्वक स्वीकार करने वाले उसके भक्त होने की भूमिका भी उसने अदा कर ली। पर वह यह नहीं सोचता कि इस प्रक्रिया में उसकी मनुष्यता कितनी क्षरित हुई ? एक मनुष्य के रूप में उसका कितना अवमूल्यन हुआ, एक जिम्मेदार इन्सान के रूप में वह कितना दयनीय, कितना नाचीज़ साबित हुआ। एक आदमकद इन्सान की जगह एक बौना अवमानव!

ईश्वर अवधारणा के साथ ही जुड़ी हुई है, स्वर्ग-नरक या परलोक की धारणा। और देहान्त के बाद आत्मा के इन लोकों में जाने की कल्पना। हिन्दुओं में परलोक की यह कल्पना वैदिक काल के वाङ्मय में नहीं मिलती। इसका कारण सम्भवतः यह है कि वैदिक सभ्यता विजेता आर्यो की सभ्यता थी........'

-डॉ रणजीत की पुस्तक
'भारत के प्रख्यात नास्तिक' में से।

महाविस्फोट सिद्धांत

(The Bing Bang Theory)

1929 में एडवीन हब्बल ने एक आश्चर्य जनक खोज की, उन्होने पाया की अंतरिक्ष में आप किसी भी दिशा में देखे आकाशगंगाये और अन्य आकाशीय पिंड तेजी से एक दूसरे से दूर हो रहे है। दूसरे शब्दों मे ब्रह्मांड का विस्तार हो रहा है। इसका मतलब यह है कि इतिहास में ब्रह्मांड के सभी पदार्थ आज की तुलना में एक दूसरे से और भी पास रहे होंगे। और एक समय ऐसा रहा होगा जब सभी आकाशीय पिंड एक ही स्थान पर रहे होंगे, लेकिन क्या आप इस पर विश्वास करेंगे?

तब से लेकर अब तक खगोल शास्त्रियों ने उन परिस्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है कि कैसे ब्रह्मांडीय पदार्थ एक दूसरे से एकदम पास होने की स्थिती से एकदम दूर होते जा रहे है। इतिहास में किसी समय, शायद 10 से 15 अरब साल पूर्व, ब्रह्मांड के सभी कण एक दूसरे से एकदम पास पास थे। वे इतने पास पास थे कि वे सभी एक ही जगह थे, एक ही बिंदु पर। सारा ब्रह्मांड एक बिन्दु की शक्ल में था। यह बिन्दु अत्यधिक घनत्व (infinite density) का, अत्यंत छोटा बिन्दु (infinitesimally small) था। ब्रह्मांड का यह बिन्दु रूप अपने अत्यधिक घनत्व के कारण अत्यंत गर्म (infinitely hot) रहा होगा। इस स्थिति में भौतिकी, गणित या विज्ञान का कोई भी नियम काम नहीं करता है। यह वह स्थिति है जब मनुष्य किसी भी प्रकार अनुमान या विश्लेषण करने में असमर्थ है। काल या समय भी इस स्थिति में रुक जाता है, दूसरे शब्दों में काल और समय के कोई मायने नहीं रहते है।' इस स्थिति में किसी अज्ञात कारण से अचानक ब्रह्मांड का विस्तार होना शुरू हुआ। एक महा विस्फोट के साथ ब्रह्मांड का जन्म हुआ और ब्रह्मांड में पदार्थ ने एक दूसरे से दूर जाना शुरू कर दिया।

महाविस्फोट के 10-43 सेकंड के बाद, अत्यधिक ऊर्जा (फोटान कणों के रूप में) का ही अस्तित्व था। इसी समय क्वार्क, इलेक्ट्रान, एन्टी इलेक्ट्रान (positron) जैसे मूलभूत कणों का निर्माण हुआ। इन कणों के बारे हम अगले अंकों में जानेंगे।

10-34 सेकंड के पश्चात्, क्वार्क और एन्टी क्वार्क जैसे कणों का मूलभूत कणों के अत्याधिक उर्जा के मध्य टकराव के कारण ज्यादा मात्रा मे निर्माण हुआ। इस समय कण और उनके प्रति-कण (1) दोनों का निर्माण हो रहा था, इसमें से कुछ एक कण और उनके प्रति-कण (2) दूसरे से टकरा कर खत्म भी हो रहे थे। इस समय ब्रम्हांड का आकार एक संतरे के आकार का था।

10-10 सेकंड के पश्चात, एन्टी क्वार्क क्वार्क से टकरा कर पूर्ण रूप से खत्म हो चुके थे, इस टकराव से फोटान का निर्माण हो रहा था। साथ में इसी समय प्रोटान और न्युट्रान का भी निर्माण हुआ।

1 सेकंड के पश्चात, जब तापमान 10 अरब डिग्री सेल्सीयस था, ब्रह्मांड ने आकार लेना शुरू किया। उस समय ब्रह्मांड में ज्यादातर फोटान, इलेक्ट्रान, न्युट्रीनो (३) और उनके प्रतीकणों के साथ मे कुछ मात्रा मे प्रोटॉन तथा न्युट्रॉन थे।

प्रोटान और न्युट्रान ने एक दूसरे के साथ मिल कर तत्वों (elements) का केन्द्र (nuclei) बनाना शुरू किया जिसे आज हम हाइड्रोजन, हीलीयम, लिथियम और ड्युटेरीयम के नाम से जानते है।

जब महा विस्फोट के बाद तीन मिनट बीत चुके थे, तापमान गिरकर 1 अरब डिग्री सेल्सीयस हो चुका था, तत्व और ब्रह्मांडीय विकिरण (cosmic radiation) का निर्माण हो चुका था। यह विकिरण आज भी मौजूद है और इसे महसूस किया जा सकता है।

आगे बढ़ने पर 300,000 वर्ष के पश्चात, विस्तार करता हुआ ब्रह्मांड अभी भी आज के ब्रह्मांड से मेल नहीं खाता था। तत्व और विकिरण एक दूसरे से अलग होना शुरू हो चुके थे। इसी समय इलेक्ट्रान, केन्द्रक के साथ में मिल कर परमाणु का निर्माण कर रहे थे। परमाणु मिलकर अणु बना रहे थे।

इस के एक अरब वर्ष पश्चात, ब्रह्मांड का एक निश्चित सा आकार बनना शुरू हुआ था। इसी समय क्वासर, प्रोटोगैलेक्सी (आकाशगंगा का प्रारंभिक रूप), तारों का जन्म होने लगा था। तारे हाईड्रोजन जलाकर भारी तत्वों का निर्माण कर रहे थे।

आज महा वस्फोट के लगभग 14 अरब साल पश्चात की स्थिति देखे ! तारों के साथ उनका सौर मंडल बन चुका है। परमाणु मिलकर कठिन अणु बना चुके है। जिसमे कुछ कठिन अणु जीवन (उदा; 'Amino Acid' के मूलभूत कण है। यही नहीं काफी सारे तारे मर कर श्याम विवर (black hole) बन चुके है।

ब्रह्मांड का अभी भी विस्तार हो रहा है, और विस्तार की गति बढ़ती जा रही है। विस्तार होते हुये ब्रह्मांड की तुलना आप एक गुब्बारे से कर सकते है, जिस तरह गुब्बारे को फुलाने पर उसकी सतह पर स्थित बिन्दु एक दूसरे से दूर होते जाते है उसी तरह आकाशगंगाये एक दूसरे से दूर जा रही है। यह विस्तार कुछ इस तरह से हो रहा है जिसका कोई केन्द्र नहीं है, हर आकाश गंगा दूसरी आकाशगंगा से दूर जा रही है।

वैकल्पिक सिद्धांत (The Alternative Theory)

इस सिद्धांत के अनुसार काल और अंतरिक्ष एक साथ महा विस्फोट के साथ प्रारंभ नहीं हुये थे। इसकी मान्यता है कि काल अनादि है, इसका ना तो आदि है ना अंत। आये इस सिद्धांत को जाने। आकाशगंगाओ (Galaxy) और आकाशीय पिंडों का समुह अंतरिक्ष में एक में एक दूसरे से दूर जाते रहता है। महा विस्फोट के सिद्धांत के अनुसार आकाशीय पिण्डों की एक दूसरे से दूर जाने की गति महा विस्फोट के बाद के समय और आज के समय की तुलना में कम है। इसे आगे बढाते हुये यह सिद्धांत कहता है कि भविष्य मे आकाशीय पिंडों का गुरुत्वाकर्षण इस विस्तार की गति पर रोक लगाने मे सक्षम हो जायेगा। इसी समय विपरीत प्रक्रिया का प्रारंभ होगा अर्थात संकुचन का। सभी आकाशीय पिंड एक दूसरे के नजदीक और नजदीक आते जायेंगे और अंत में एक बिन्दु के रुप में संकुचित हो जायेंगे। इसी पल एक और महा विस्फोट होगा और एक नया ब्रह्मांड बनेगा, विस्तार की प्रक्रिया एक बार और प्रारंभ होगी। यह प्रक्रिया अनादि काल से चल रही है, हमारा विश्व इस विस्तार और संकुचन की प्रक्रिया में बने अनेकों विश्व में से एक है। इसके पहले भी अनेकों विश्व बने है और भविष्य में भी बनते रहेंगे। ब्रह्मांड के संकुचित होकर एक बिन्दु में बन जाने की प्रक्रिया को महासंकुचन (The Big Crunch) के नाम से जाना जाता है। हमारा विश्व भी एक ऐसे ही महा संकुचन में नष्ट हो जायेगा, जो एक महा विस्फोट के द्वारा नये ब्रह्मांड को जन्म देगा। यदि यह सिद्धांत सही है तब यह संकुचन की प्रक्रिया आज से एक खरब 50 अरब वर्ष पश्चात प्रारंभ होगी।

यथास्थिति सिद्धांत (The Quite State Theory)

महाविस्फोट का सिद्धांत सबसे ज्यादा मान्य सिद्धांत है लेकिन सभी वैज्ञानिक इससे सहमत नहीं हैं । वे मानते है कि ब्रह्मांड अनादि है, इसका ना तो आदि है ना अंत। उनके अनुसार ब्रह्मांड का महा विस्फोट से प्रारंभ नहीं हुआ था ना इसका अंत महा संकुचन से होगा। यह सिद्धांत मानता है कि ब्रह्मांड का आज जैसा है वैसा ये हमेशा से था और हमेशा ऐसा ही रहेगा। लेकिन सच्चाई इसके विपरीत है।

कुछ नहीं होता

–डॉ॰ रणजीत

नहीं होता
कुछ नहीं होता अभी भी
विचार-विमर्श से
बहस-मुबाहसे से
समझाने-बुझााने से
अनुनय-विनय से
औचित्य और न्याय के सारे तर्कों से
कुछ नहीं होता
पांच हज़ार के
सारे सांस्कृतिक विकास के बाद भी
जिसकी लाठी है, उसी की भैंस है
गज़ब की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति
के बाद भी
आदमी का सबसे कारगर हथियार
अभी भी डण्डा ही है
कितनी बुरी बात है
कि चाँद पर पहुंच जाने के बाद भी आदमी
अभी डण्डे से ऊपर नहीं उठ पाया है

साहित्य लोगों के बीच पुल का काम करता है

मैंने पांच साल की उम्र में पढ़ना सीखा था। यह मेरे साथ हुई सबसे महत्वपूर्ण घटना है। लगभग सत्तर साल बाद मुझे अच्छी तरह याद है कि कैसे किताबों में शब्दों को छवियों में बदलने के जादू ने मेरे जीवन को समृद्ध किया। पढ़ने से सपने जीवन बन गए और जीवन सपने में बदल गया और साहित्य का संसार लड़कपन में ही मेरी पहुंच के भीतर हो गया। मेरी मां ने मुझे पहली बात यह बताई कि मैं पढ़ी हुई कहानियों को आगे बढ़ाऊं, क्योंकि उनका अंत मुझे उदास कर दिया करता था या मैं उसे बदलना चाहता था और शायद मैंने बिना इस बात का अहसास किए इसे साकार करने में अपना जीवन गुजार दियाः जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, परिपक्व, और वृद्ध हुआ, जिन कहानियों ने मेरे बचपन को उमंग और रोमांच से भर दिया था, उनके समय को आगे बढ़ाता गया। अपने पूरे जीवन में मैंने अपने साथ ऐसे लोगों को खड़े पाया, जो मुझे प्यार करते थे और प्रोत्साहित करते थे। अगर साहित्य के पनपने के लिए पहले यह शर्त होती है कि समाज उच्च्य संस्कृति, स्वतंत्रता, समृद्धि और न्याय प्राप्त कर ले, तो यह कभी अस्तित्व में नहीं होता। अगर हमने अच्छी पुस्तकें न पढ़ीं होतीं, तो हम बदतर और ज्यादा कट्टरपंथी होते, इतने बेचैन नहीं होते, अधिक विनीत होते और आलोचनात्मक भाव भी मौजूद नहीं होता, जो कि हमें प्रगति की ओर अग्रसर करता है। लेखन की तरह पढ़ना भी जीवन की आर्याप्ताओं का विरोध करना है। हम कथाओं का आविष्कार ऐसे कई जीवन जीने के लिए करते हैं, जो हम जीतना चाहते हैं। जबकि हमें जीने के लिए मुश्किल से एक जिंदगी मिली है। साहित्य के बिना हमें जीवन को जीने योग्य बनाने वाली आजादी के महत्व के बारे में कम जानकारी होती। जब तानाशाह द्वारा विचारधाराएं या धर्म को रौंद डाला जाता है, तब जीवन नर्क में बदल जाता है। वे सब लोग जो नहीं मानते हैं कि साहित्य न हमें सिर्फ सौंदर्य और खुशी के सपने में डुबो देता है, बल्कि हमें हर प्रकार के उत्पीड़न के प्रति सजग करता है।

उन्हें स्वयं से पूछना चाहिए कि सभी शासन जो पलने से कब्र तक नागरिकों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कृतसंकल्प होते हैं, वे साहित्य से इतना क्यों डरते हैं कि उसे दबाने के लिए सेंसरशिप लागू करते हैं और स्वतंत्र लेखकों पर कड़ी नजर रखते हैं। अच्छा साहित्य विभिन्न लोगों के बीच पुल का काम करता है और हमें आनंद, पीड़ित, या आश्चर्य महसूस कराकर हमें अलग करने वाले भाषाओं, विश्वासों, आदतों, रीति रिवाजों और पूर्वाग्रहों को लांघ कर एकजुट कर देता है। साहित्य मानवी विविधताओं के भीतर भाईचारा बनाता है और अज्ञान, विचारधाराओं, धर्मो, भाषाओं और मूर्खता के कारण पुरुषों और महिलाओं के बीच खड़ी की गई दीवारें को तोड़ देता है। हम लेखन करके और साहित्य पढ़कर इस परम जीवन की खोज करने लायक बन सकते हैं।

साभारः अमर उजाला

ईश्वर की लाश सड़ रही है

–कपिल भारद्वाज

ईश्वर की लाश सड़ रही है
न ही कोई इष्टदेव
जिनमें सुख की कामना कर सकूं
आत्महंताओं के इस युग में
जब हर आदमी
देवता बनने का ख्वाब बुनता
अपनी पुत्री के नितम्बों से छेड़छाड़ करता
रसहीन, गन्धहीन, रूपहीन
जीवन की व्यापकता से व्याकुल
सिरे से खारिज
तब ईश्वर से घृणा स्वाभाविक है
'ईश्वर की लाश सड़ रही है
दफ्न करो या जला दो
लेकिन मुंह से रुमाल हटाने का तरीका खोजो
कपटी धर्म योद्धाओं।'

अंधविश्वास के चलते

मां का सिर काटा, चढ़ाया देवी पर
पी गया खून, खाता रहा मांस

नवभारत ब्यूरो। कोरबा,

पुलिस के हत्थे चढ़े हत्यारे कथित तांत्रिक दिलीप यादव ने रोंगटे खड़े कर देने वाला खुलासा किया है। पहले तो उसने मां के गले पर कुल्हाड़ी से हमला कर सिर को घड़ से अलग कर दिया, उसका खून पीने के बाद सिर को देवता पर चढ़ा दिया। इसके बाद तीन दिनों तक मांस को कच्चा व भूनकर खाता रहा। मामले का खुलासा होने से पहले वह भाग निकला था। चार जनवरी से पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। अब उसे गिरफ्त में लिया गया है।

घटना पाली थानांतर्गत ग्राम रामाकछार की है। चार जनवरी की शाम एक महिला ने दिलीप यादव नाम युवक द्वारा अपनी मां सुमरिया बाई की हत्या किए जाने की सूचना दी। पुलिस ने उसके घर में खून के छींटे देखे और प्रारंभिक जांच में तत्र-मंत्र की बात भी सामने आई थी। शव को बरामद करके पुलिस ने तलाश प्रारंभ की। शनिवार को पुलिस ने आरोपी को उसके रिश्तेदार के घर ग्राम रोदे में दबोच लिया। पूछताछ में उसने जो खुलासा किया है वह रोंगटे खड़े कर देने वाला है।

15 दिन बाद हुआ गिरफ्तार

दरअसल आरोपी दिलीप तंत्र सिध्दि के लिए देवी का पूजा अर्चना करता था। उसने तांत्रिक सिध्दि हासिल करने मां की बलि देने का फैसला कर लिया। 31 दिसंबर की सुबह करीब 10.0 बजे मां के गले में कुल्हाड़ी से हमला कर धड़ को अलग कर दिया। इसके साथ ही उसके खून को पीता रहा। थोड़ी देर बाद आरोपी अपनी मां के सिर व धड़ को कमरे के भीतर ले गया। जहां उसने सिर को देवता पर चढ़ा दिया जबकि धड़ के टुकड़े कर लिए। इन टुकड़ों को कई दिनों तक कच्चा व भूनकर खाता रहा।

थाईलैंडः मोक्ष की ख्वाहिश में बलि,

बौद्ध भिक्षु ने अपना सिर धड़ से अलग किया

68 साल के भिक्षु थम्मार्कोन वांगप्रीचा कई साल से तैयारी कर रहे थे

एजेंसी। बैंकॉक

थाईलैंड में एक बौद्ध भिक्षु ने मोक्ष पाने की इच्छा से भगवान बुद्ध को अपनी बलि चढ़ा दी। उन्होंने अपने सिर को एक यंत्र (इनसेट) से इस उम्मीद में काट दिया ताकि उनका अगला जन्म बेहतर हो और वे अपने नए जीवन में आध्यात्म के नए स्तर को छू सके और निर्वाण को प्राप्त कर सकें। बताया गया है कि 68 साल के भिक्षु थम्माकोर्न वांगप्रीचा पिछले पांच सालों से इस प्रक्रिया की तैयारी कर रहे थे।

वांगप्रीचा का मानना था कि अपने देवता के लिए खुद को त्यागने से उनकी मेरिट अच्छी होगी और उन्हें अगला जीवन और भी बेहतर साबित होगा....वांगप्रीचा उत्तर-पूर्वी थाइलैंड केनॉन्ग लंफू प्रांत के एक मंदिर में पिछले 11 सालों से सेवा कर रहे थे। उनके पार्थिव शरीर को सबसे पहले एक रिश्तेदार ने देखा था। मंदिर के मुताबिग, वांगप्रीचा ने अन्य पुजारियों को इस बारे में बता दिया था कि वे जल्द ही मंदिर से अपनी सेवाएं खत्म करने जा रहे हैं। लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया था कि वे ऐसा कुछ करने जा रहे हैं।

'स्वर्ग-जन्नत पर यकीन करने वाले लोग भी अजीब होते हैं.. जब इनक स्वर्ग-जन्नत जाने का समय आता है, तब ये अस्पताल चले जाते हैं

कोरोना भगाने का अंधविश्वास पुजारी ने दी मानव बलि

नवभारत न्यूज नेटवर्क

भुवनेश्वर, कटक जिले के नरसिंहपुर में एक मंदिर के पुजारी ने एक शख्स को मारकर देवी मां को इसलिए चढ़ा दिया कि कोरोना संकट थम जाएगा। बुधवार रात नरसिंहपुर बंधहुडा गांव में ब्राह्मणी देवी मंदिर परिसर के अंदर एक व्यक्ति का शव मिला। स्थानीय पुलिस ने हत्या में शामिल हथियार को जब्त कर लिया है। पुलिस ने शव को पोस्टामर्टम के लिए भेज दिया है। पुजारी ने अपना अपराध भी कबूल कर लिया है।

सपने में मिला आदेश

पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर जांच शुरू कर दी है। आरोपी का नाम संसारी ओझा है और उम्र 72 वर्ष है। एसपी कटक ने इस मामले पर कहा है कि पुरानी प्रतिद्वंद्विता के चलते ऐसी घटना हुई है। मामले की जांच जारी है। मृतक की पहचान सरोज कुमार प्रधान के तौर पर हुई है। आरोपी के मुताबिक मंदिर में बलि को लेकर मृतक के साथ उसकी बहस हुई। जब हालात बिगड़ गए तो आरोपी ने प्रधान को काट डाला और घटनास्थल पर ही मार डाला। आरोपी ने पूछताछ में कहा कि उसे सपने में भगवान से आदेश मिला था कि अगर नरबलि दी जाए तो कोरोना वायरस संकट थम जाएगा।

इटावा में श्रद्धालुओं से भरा वाहन पलटा। 12 की मौत

उदी (इटावा)। हिन्दुस्तान संवाद

बेटे के जन्म की खुशी में आगरा से लखना कालका मंदिर में झंडा चढ़ाने आ रहे श्रद्धालुओं से भरी डीसीएम हादसे का शिकार हो गई। आगरा-चकरनगर रोड पर हुए इस हादसे में 12 श्रद्धालुआ की मौत हो गई, जबकि 30 से अधिक घायल हो गए। आठ गंभीर घायलों का जिला अस्पताल से सैफई मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। सभी श्रद्धालु पिनाहट आगरा के रहने वाले हैं।

सीएम ने दो-दो लाख की मदद का किया ऐलानः सीएम योगी आदित्यनाथ ने दुर्घटना में लोगों की मृत्यु पर गहारा शोक व्यक्त किया है।

उन्होंने मृतकों के आश्रितों को दो-दो लाख रुपये की आर्थिक सहयता देने के निर्देश दिए हैं।

कुल देवी को खुश करने के लिए दे दी पत्नी की बलि

शक्ति नगर (सोनभद्र)। सीमावर्ती जिले सिंगरौली (मध्यप्रदेश) के बसौड़ा गांव में बुधवार रात एक तांत्रिक ने कुल देवी को खुश करने के लिए बच्चों के सामने ही अपनी पत्नी की बलि चढ़ा दी। कुल्हाड़ी से सिर काटकर हत्या करने के बाद पत्नी का शव कमरे में दफना दिया और कटा सिर कुल देवी के समीप गाड़ दिया।

बृहस्पतिवार को पुलिस ने आरोपी पति को खुटार गांव के समीप से गिरफ्तार कर लिया। निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त कुल्हाड़ी भी बरामद कर ली गई है। तांत्रिक बृजेश केवट ने पत्नी बिट्टी देवी (45) की कुल्हाड़ी से हत्या की तब उसे दो बच्चे सुबंद्र कुमार (10) और मनोकेवट (8) कमरे में ही मौजूद थे। मां की चीख सुनकर भयभीत दोनों बच्चे वहां से भागे और छिप गए। सुबह होने पर बच्चों ने जानकारी गांव वालों को दी तो पुलिस को सूचना दी गई। उसके बाद पुलिस पहुंची। घटना के 24 घंटे के अंदर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। एसपी वीरंद्र सिंह ने बताया कि आरोपी ने सारे राज उगल दिए हैं। क्या आरोपी को किसी ने उकसाया, यह पता लगाया जा रहा है। (संवाद)

कोरोनाकाल-कई परिवारों को लगा अंधविश्वास का वायरस

वेंटिलेटर का बंदोबस्त किया, बावजी ने 'पाती' नहीं दी तो गवांनी पड़ी जान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

राजसमंद। शहर से कुछ दूर एक गांव की 60 साल की कोरोना संक्रमित महिला को बड़ी मुश्किल से आर के जिला अस्पताल में ऑक्सीजन बेड पर भर्ती किया गया। हालत में सुधार नहीं होने पर 21 मई की सुबह 9 बजे वेंटिलेटर की जरूरत पड़ गई।

परिजनों ने चिकित्सकों के कहने पर सेंटिलेटर के बंदोबस्त इधर-उधर फोन लगाए। अस्पतालों में भर्ती रोगियों के लिए मददगार एक सोशल ग्रुप से जुड़े कार्यकर्ता नाथद्वारा चिकित्सालय में सम्पर्क किया, जहां आइसीयू बेड खाली था। बाद में बड़ी मुश्किल से उदयपुर के ईएसआईसी हॉस्पिटल में वेंटिलेटर उपलब्ध होने पर परिजनों को सूचित किया कि तत्काल रोगी को वहां शिफ्ट करना होगा। .....उसी ग्रुप के एक सदस्य को कांकरोलनी से आर के अस्पताल में इस रोगी के पास भेजा गया तो वहां पता चला कि परिजन इसलिए राजी नहीं हैं, क्योंकि बावजी ने वेंटिलेटर के इस्तेमाल की पाती (अनुमति) नहीं दी है। दोपहर करीब 12 बजे पता चलता है कि महिला की समय पर वेंटिलेटर नहीं मिलने से मौत हो गई है। भाटिया और उनके समूह के सदस्य इसलिए मायूस हो जाते हैं कि इलाज मुहैया होने की स्थित में भी महिला को वैंटिलेटर पर शिफ्ट नहीं करवाया गया। जिला अस्पताल में उपचाररत महिला को वेंटिलेटर की आवश्यकयता पड़ी तो राजसमंद के एक सोशल ग्रुप के जरिए वेंटीलेटर नाथद्वारा अस्पताल में उपलब्ध करवाया गया लेकिन परिजनों ने अंधवियश्वास के चलते रैफर करवाने से मना कर दिया।

<u>वैक्सीनेशन में भी आ रही परेशानी</u>

कई स्वास्थ्यकर्मियों ने बताया कि पिछड़े वगैर में बड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी है, जो लाभांवितों के दायरे में आने के बावजूद वैक्सीनेशन करवाने से कतरा रहे हैं। यहां तक कि गांवों में बड़े पैमाने पर टीकाकरण को लेकर जनजागरण अभियान भी चलाया गया, लेकिन दुगर्म बस्तियों में एसे भी लोग हें, कारोना के टीके का नाम तक लेने से बिदकते हें।

<u>मददगार, डॉक्टर परेशान</u>

ग्रामीण क्षेत्र से शहरी अस्पतालों में रैफर हो रहे या सीधे भर्ती होने आ रहे या सीधे भर्ती होने आ रहे कई मामलों में परिजनों की रूढ़ीवादिता और अंधविश्वासों से न केवल चिकित्साकर्मी और स्टॉफ अनेक मौकों पर परेशान होता है बल्कि मदद के आगे आ रहे सामाजिक कार्यकर्ता भी असमंजस में पड़ जाते हैं।

थाईलैंडः मोक्ष की ख्वाहिश में बलि

बौद्ध भिक्षु ने अपना सिर धड़ से अलग किया

68 साल के भिक्षु थम्मार्कोन वांगप्रीचा कई साल से तेयारी कर रहे थे

एजेंसी। बैंकॉक

थाईलेंड में एक बौद्ध भिक्षु ने मोक्ष पाने की इच्छा से भगवान बुद्ध को अपनी बलि चढ़ा दी। उन्होंने अपने सिर को एक यंत्र (इनसेट) से इस उम्मीद में काट दिया ताकि उनका अगला जन्म बेहतर हो और वे अपने नए जीवन में आध्यात्म के नए स्तर को छू सके और निर्वाण को प्राप्त कर सकें। बताया गया है कि 68 साल के भिक्षु थम्माकोर्न वांगप्रीचा पिछले पांच सालों से इस प्रक्रिया की तैयारी कर रहे थे।

वांगप्रीचा का मानना था कि अपने देवता के लिए खुद को त्यागने से उनकी मेरिट अच्छी होगी और उन्हें अगला जीवन और भी बेहतर साबित होगा....वांगप्रीचा उत्तर-पूर्वी थाइलैंड केनॉन्ग लंफू प्रांत के एक मंदिर में पिछले 11 सालों से सेवा कर रहे थे। उनके पार्थिव शरीर को सबसे पहले एक रिश्तेदार ने देखा था। मंदिर के मुताबिग, वांगप्रीचा ने अन्य पुजारियों को इस बारे में बता दिया था कि वे जल्द ही मंदिर से अपनी सेवाएं खत्म करने जा रहे हैं। लेकिन उन्होंने यह नहीं बातया था कि वे ऐसा कुछ करने जा रहे हैं।

खोज-खबर

नयी खोज का मतलब है कि इंसान के पूर्वज समझे जाने वाले होमो सेपियन्स के धरती पर होने के सबूत 2 लाख नहीं बल्कि 3 लाख साल पहले से मौजूद हैं.

मोरक्को के पास एक पुरातात्तविक भूभाग पर शोधकर्ताओं को एक खोपड़ी, चेहरे और जबड़े की हड्डियां मिली, जिनकी पहचान 315,000 साल पहले के होमो सेपियन्स के तौर पर की गयी है. अभी तक की खोज के अनुसार होमो सेपियन्स का उद्‌भव 2 लाख साल पहले पूर्वी अफ्रीका का माना जाता रहा है, लेकिन नयी खोज के मुताबिक 3 लाख साल पहले ही होमो सेपियन्स के उत्तर अफ्रीका में विकास के सबूत मौजूद हैं.

एक बार फिर से सदर्न क्रॉस यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों ने अपनी अत्याधुनिक तकनीकों के जरिये डायरेक्ट-डेटिंग की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाई है. डायरेक्ट डेटिंग वह प्रक्रिया होती है जिसमें पुरातत्व-जीव विज्ञान में जंतुओं और पौधों के प्राप्त अवशेषों के आधार पर जीवन काल या समय चक्र का निर्धारण किया जाता है.

विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में छपी इस रिपोर्ट के मुताबिक इस खोज का यह मतलब नहीं है कि होमो सेपियन्स का उद्‌भव उत्तर अफ्रीका में हुआ बल्कि इसे ऐसे समझा जाना चाहिए कि शुरुआती होमो सेपियन्स का विकास और फैलाव इस पूरे महाद्वीप में हुआ था. इस खोज के लिए एक पूरी रिसर्च टीम ने काम किया जिसका नेतृत्व प्रोफेसर जाँ जाक हुबलिन और डॉक्टर अब्दल्लाउद बेन नासर ने किया. प्रोफेसर जीन जर्मनी के लाइपजिग शहर में माक्स प्लांक इंस्टीट्यूट फॉर इवोल्यूशनरी एन्थ्रोपोल जी में प्रोफेसर हैं और डॉक्टर बेन मोरक्को के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्कियोलॉजी एंड हेरिटेज में काम कर रहे हैं. दोनों शोधकर्ताओं ने जेब इरहाउंड में मिली होमो सेपियन्स की हड्डियों पर काम किया है.

हुबलिन पहली बार 1980 में जेब इरहाउन्ड पहुंचे थे, जब उन्हें वहां से मिली बच्चे की जबड़े की हड्डी का एक हिस्सा दिखाया गया था. वहां 1961 में इंसान की एक पूरी खोपड़ी खोजी जा चुकी थी. कुछ समय बाद वहां खुदाई करने पर खोपड़ी की कुछ और हड्डियां और पत्थर के औजार और मानव उपस्थिति के कुछ और सबूत भी मिले थे.

डॉक्टर हुबलिन के अनुसार वो हड्डियां इतनी पुरानी थीं कि उन्हें देखकर पहली बार में कुछ भी समझना मुश्किल था. उस बारे में कई अंदाजे लगाए थे और पहली बार में सोचा गया था कि वे हड्डियां 40 हजार साल पुरानी हैं.

अभी तक की जानकारी के मुताबिक सबसे पुराने इंसानी जीवाश्म 196,000 और 160,000 साल पुरानी इंसानी खोपड़ियां हैं. लेकिन इस रिसर्च टीम में शामिल शोधकर्ता रेनो जॉन बोयो ने ऐसी कार्यप्रणाली विकसित की जिसने प्राप्त जीवाश्म के एकदम सटीक जीवन काल पता लगाया और रिपोर्ट में यह बात सामने आई कि हुबलिन की रिसर्च टीम ने जो जीवाश्म खोजे हैं वो दरअसल सबसे पुराने और 3 लाख साल पुराने हैं।

-पंकज ह्यूमन.

pankajparmar1491@gmail-com

'परियों के हाथ का पानी' पीने जुटी भीड़, कोरोना नियमों की उड़ाई खुलकर धज्जियां

भोपाल, 3 जून (इंट)/ परियों के हाथ का पानी पीने की अफवाह सुनकर हजारों की तादाद में ग्रामीण कोरोना गाइडलाइन दरकिनार कर मध्य प्रदेश में राजगढ़ के चाटूखेड़ा गांव में जुट गए। अफवाह यह थी कि इन महिलाओं के शरीर में देव परियां आ गई हैं। कहा गया कि उनके हाथ से पानी पीने से किसी को कोरोना वायरस छू भी नहीं सकता। जिन्हें कोरोना है, वे ठीक हो जाएंगे।

सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने के बाद कलैक्टर ने सख्त कदम उठाते हुए पुलिस को दोषियों के खिलाफ मामला दर्ज करने के आदेश दिए। पुलिस ने भीड़ जुटाकर अंधविश्वास फैलाने वाली दोनों महिलाओं व 2 पुरुषों पर मामला दर्ज किया है।

(पी.के.: 4-6-2021)

डेंगूः लोग बेहाल, 'डॉक्टर मालामाल तथा सरकार... 'डाक्टरों' के साथ

– डा. अमृत

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी डेंगू देश के बहुत से शहरों, कस्बों में फैला हुआ है तथा आम लोगों में दहशत फैली हुई है। किसी को कोई भी बुखार हुआ नहीं कि डेंगू का भय उसके मन में बैठ जाता है। फिर डरे हुए व्यक्ति से डॉक्टर क्या कुछ नहीं करवा सकता, डेंगू इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। धड़ाधड़ लैब टेस्ट किये जा रहे हैं, लोगों के सैल कम आ रहे हैं। फिर जो जाल में फंस गया (100 में से 90-95 फंस ही जाते हैं।), उस को अस्पताल में बेड पर डाल कर ग्लूकोज़ लगा देते हैं तथा दो-चार हजार रुपये रोगी की जेब से 'डाक्टर' की जेब में 'ट्रांस्फर ' हो जाते हैं। जो कोई जहां पर भी बैठा है, मोटी कमाई कर रहा है। अमीरों, मध्यम श्रेणी के इलाकों में प्राईवेट अस्पताल, क्लीनिक तथा मजदूर-गरीब इलाकों एवं गांवों में झोलाछाप डॉक्टर, सभी का 'सीजन' चल पड़ा है, सभी प्रसन्न हैं। सरकारें ऐलान पर ऐलान कर रही हैं, परंतु आम आदमी परेशान हैं, बेहाल है। मंहगाई ने पहले ही जीना दूभर कर रखा है, ऊपर से बीमारी का खर्च एवं काम से छुट्टी। आखिर यह 'सेल' कम होने का चक्कर क्या है? क्या प्रत्येक बुखार डेंगू ही होता है, और यह ग्लूकोज़, यह कौन सी 'संजीवनी जड़ी' जो प्रत्येक बुखार का इलाज है? इन प्रश्नों पर हम चर्चा करेंगे। सेल कम होने का क्या अर्थ है तथा इसके लिए क्या करना होता है?

जन साधारण द्वारा 'सेल' कही जाने वाली वास्तव में व्यक्ति के रक्त में विद्यमान अनेक प्रकार की कोशिकाओं में से एक कोशिका है तथा चिकित्सीय भाषा में इन का नाम है 'प्लेटलेट' जब कभी हमें चोट लग जाती है अथवा चीरा लगता है तो खून 'बहाव को रोकने के लिए सर्वप्रथम यही 'प्लेटलेट' सरगर्म होते हैं तथा चोट के स्थान पर रक्त का थक्का बना कर रक्त का बहना रोक देते हैं। यदि इन की संख्या कम हो जाए तो खून का थक्का बनने में देरी होगी अथवा थक्का बनेगा ही नहीं। इस लिए खून बहता रहने से व्यक्ति का ब्लड प्रैशर कम हो जाएगा, बेहोशी आएगी तथा कोई इलाज न मिलने की दशा में व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है। साधारणतया व्यक्ति में इन की औसत संख्या 1.50.000 से 4.50.000 प्रति माईक्रोलिटर होती है। परंतु ऐसा नहीं है कि प्लेटलेट्स 150000 से कम होते ही व्यक्ति की जान को खतरा हो जाता हो। वास्तव में, यदि प्लेटलेट्स कोशिकाओं में कोई अन्य खराबी नहीं है तो इन कोशिकाओं की संख्या 50000 से ऊपर होने पर किसी प्रकार की कोई समस्या नहीं होती तथा व्यक्ति के जीवन कोई खतरा नहीं होता और घबराने की कोई जरूरत नहीं होती। यदि प्लेटलेट्स की संख्या 50000 से नीचे हो परंतु 25000 से ऊपर हो तो आमतौर पर ऐसे व्यक्ति कुछ दिनों के पश्चात् ठीक हो जाते हैं, ऐसे लोगों को केवल देखरेख में रखने की जरूरत होती है। यदि, इन की संख्या इस से नीचे चली जाए तो ऐसे व्यक्ति को तुरंत अस्पताल में दाखिल करवाना चाहिए तथा प्लेटलेट्स कम होने के कारण और इससे उत्पन्न लक्षणों को ध्यान में रख कर इलाज करना होता है।

परंतु हमारे यहां क्या हो रहा है? जिन लोगों की प्लेटलेट्स की संख्या 50,000 से ऊपर होती है, यहां तक कि 80-90 हजार होती है, उनको भी 'सेल कम होना' कह कर डरा दिया जाता है तथा इसके इलाज के लिए ग्लूकोज लगाना जरूरी बताया जाता है। जो कि सरेआम धोखाधड़ी है, लूट है तथा चिकित्सा विज्ञान से पूर्णतः विपरीत है। इस खेल में गली-मोहल्ला में बैठे झोलाछाप एवं दवाइयों की दुकानें चलाने वाले कई कैमिस्ट तो शामिल हैं ही, बल्कि बहुत से बाकायदा मैडिकल की शिक्षा ग्रहण किये हुए 'डॉक्टर' भी शामिल हैं। क्योंकि इस में मोटी कमाई है और खतरा भी कोई नहीं, बस लोगों की अज्ञानता का लाभ उठा कर मरीजों को थोड़ा सा डराना होता है। इस प्रकार से ऐसे डाक्टरों की जेबें नोटों के साथ भरती चली जाएंगी और तो और, वे सभी रोगी जिन के सेल

कम होने की रिपोर्ट आती है, को डेंगू का नाम लेकर डरा दिया जाता है। जहां पर रोगी उसकी बीमारी बारे सही जानकारी एवं डॉक्टर की हमदर्दी की जरूरत होती है, वहां पर ही उसके साथ धोखाधड़ी की जाती है।

सेल कब कम होते हैं?

सेल अर्थात् प्लेटलेट्स न केवल डेंगू में, बल्कि अन्य बहुत से बुखारों में भी कम हो जाते हैं जिनमें चिकनगुनिया बुखार, खसरा, चिकनपॉक्स, टाईफाईड तथा अन्य अनेक प्रकार के वायरल बुखार शामिल हैं। यहां तक कि अनेक मामलों में तो एक साधारण जुकाम भी 'सेल' कम कर सकता है। बहुत सी अन्य बीमारियां एवं दवाइयां इस प्रकार की होती हैं जो प्लेटलेट्स कम कर देती हैं। परंतु यहां पर इन का वर्णन आवश्यक नहीं है, क्योंकि हमारी चर्चा का विषय डेंगू एवं अन्य बुखारों तक ही सीमित है। इस लिए 'सेल' कम हो जाने का तात्पर्य डेंगू बिल्कुल भी नहीं है। और तो और सेल कम होने के बहुत कम मामलों में ही रोगी को डेंगू होता है, बुखार के प्रत्येक रोगी का तो टेस्ट करवाना भी जरूरी नहीं होता। एक शिक्षित डाक्टर 'बशर्ते कि वह अपनी पढ़ाई का उचित प्रयोग कर रहा हो तथा उसकी नज़र रोगी की जेब के बजाए रोगी पर केंद्रित हो) आसानी से जान लेता है कि कौन-कौन से रोगी को टेस्ट की जरूरत है, कब जरूरत है तथा कितनी बार टेस्ट करवाने की जरूरत है। वास्तव में, डेंगू के सीज़न में टेस्ट करवाने के पीछे चिकित्सीय जरूरत कम, रोगी को डराने एवं नोट कमाने की जरूरत अधिक होती है। वैसे भी डॉक्टरों का लेबोरेटरी के साथ आधो-आध का हिस्सा होता है, अर्थात यदि टेस्ट की कीमत 160 रुपये है तो 80 लेबोरेटरी के और 80 भेजने वाले डॉक्टर के, तो फिर क्यों न प्रत्येक रोगी का टेस्ट करवा ही लिया जाए? ऐसा ही एक अन्य मामला, जो बहुतायत में देखने को मिलता है, वह है टाईफाइड के टेस्ट, जिस का नाम 'विडाल टेस्ट' (**Widal Test**) है, का भी है-जिसकी रिपोर्ट आमतौर पर पॉजिटिव आ जाती है, तथा एक बार टाईफाइड हो जाने पर लम्बे समय तक, यहां तक कि एक साल तक भी, पॉजिटिव बनी रहती है। इतना ही नहीं, भारत में बहुत से लोगों में यह टेस्ट अन्य बुखारों में वैसे ही पॉजिटिव आ जाता है। यह टेस्ट विदेशों में तो किया ही नहीं जाता, तथा भारत में भी जब इसका प्रयोग होता है तब इस टेस्ट को कैसे देखना है, यह केवल डॉक्टरी की पढ़ाई एवं ट्रेनिंग हासिल कर चुके डॉक्टर ही जानते हैं। यह टेस्ट पॉजिटिव आने पर झोला छाप डाक्टर एवं बहुत से शिक्षित डॉक्टर भी महंगे तथा अनावश्यक टीके लगाना आरम्भ कर देते हैं, साथ ही ग्लूकोज़ की बोतलें चढ़ाना शुरू कर देते हैं। इसलिए इस लूट एवं शोषण से भी सावधान!!!

डेंगू के लक्षण क्या हैं?

पहली बात तो यह कि अगस्त-नवम्बर के दौरान होने वाले सभी बुखार डेंगू नहीं होते, इनमें से बहुत थोड़े ही डेंगू के मामले होते हैं। शेष बुखार कई प्रकार के वायरल बुखार होते हैं। मजदूर-गरीब इलाकों में टाईफाइड एवं मलेरिया भी बुखार का कारण हो सकते हैं। डेंगू बुखार एक प्रकार के मच्छर द्वारा काट लिए जाने से होता है, जो दिन के समय में काटता है तथा यह साफ रुके हुए पानी पर पलता है। इस के लक्षण होते हैं-सिर दर्द, खास तौर पर आखें के पीछे होने वाला दर्द, तेज बुखार, कई बार आंखों का लाल हो जाना, शरीर में बहुत अधिक दर्द होना खासतौर पर पीठ में जिसे 'हड्डियां तोड़ने वाला' दर्द कहा जाता है। बुखार के सातवें दिन त्वचा पर एक विशेष प्रकार के छोटे-छोटे लाल धब्बे बनना, जो पेट से शुरू होते हैं और टांगों, बाजुओं एवं चेहरे पर फैल जाते हैं। जहां पर भी डेंगू होना का संदेह होता है, उस रोगी का डेंगू टैस्ट करवाना पड़ता है ताकि यह तय हो सके कि रोगी को डेंगू है अथवा नहीं। परंतु हमारे यहां पर इसके विपरीत होता है, प्रायः डेंगू टैस्ट करवाया ही नहीं जाता, केवल प्लेटलैट्स टैस्ट करवा कर डेंगू के होने का ऐलान कर दिया जाता है। दूसरा, डेंगू बुखार का खतरा सेल कम होना नहीं होता, बल्कि इसका खतरा यह है कि डेंगू के कुछ मामले डेंगू हेमोरेजिक फीवर एवं डेंगू शॉक सिंड्रोम तक पहुंच जाते हैं। ऐसे रोगियों में त्वचा के नीचे, आंतों में अथवा शरीर के किसी अन्य भाग में खून का रिसाव शुरू हो जाता है। ऐसे रोगियों को डॉक्टर अपने क्लीनिक में ही 'टार्नीक्यूएट टैस्ट' अथवा त्वचा पर पड़े हुए लाल धब्बों से भी कुछ हद तक पहचान सकता है। ज्यादा

गंभीर मामलों में, रक्तचाप (ब्लड प्रैशर) का कम होना, नब्ज का तेज गति से चलना, फेफड़ों एवं पेट में पानी का भर जाना, जिगर का बड़ा हो जाना, त्वचा के नीचे खून के रिसाव से बड़े-बड़े धब्बे बन जाना, आंतड़ियों में से खून का बहना शामिल है। ऐसे मरीजों को ही ग्लूकोज की जरूरत होती है तथा साथ ही ऑक्सीजन एवं अन्य डॉक्टरी देखरेख की भी जरूरत होती है जो कि अच्छे बड़े अस्पताल में ही संभव होती है। यह भी एक तथ्य है कि डेंगू हैमोरेजिक फीवर एवं डंगू शॉक सिंड्रोम के रोगियों की पहचान, इलाज एवं निगरानी के लिए प्लेटलेट्स संख्या केवल एकमात्र पैमाना नहीं है तथा न ही सब से कारगर पैमाना है। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई पैमाने हैं जो कि प्लेटलैट्स की संख्या के पैमाने बेहतर माने जाते हैं।

ऐसे बुखारों का इलाज कैसे हो?

जिस रोगी में डेंगू के लक्षण नहीं हैं तथा हल्का अथवा थोड़ा अधिक सिर दर्द, शरीर दर्द, बुखार एवं जुकाम हो अथवा डेंगू हैमोरेजिक फीवर एवं डेंगू शॉक सिंड्रोम के बगैर डेंगू हो तो आमतौर पर केवल क्रोसिन की गोली से ही काम चल जाता है। साथ ही कुछ दिनों तक आराम, पौष्टिक भोजन तथा पर्याप्त मात्र में नींबू पानी लेना ही पर्याप्त है। सेलों की संख्या 50 हज़ार से ऊपर हो तो, इतने से इलाज के साथ रोगी ठीक हो जाता है। सेल कम होने पर सिर दर्द एवं शरीर के दर्द के लिए साधारण तौर पर प्रयोग में आने वाली दर्द निवारक जैसे कि डिस्प्रिन, वोवर्न, ब्रूफेन आदि दवाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये हानि पहुंचा सकती हैं।

ग्लूकोज़ कब लगाया जाता है?

डेंगू बुखार में ग्लूकोज़ कब लगाया जाता है, इस बारे बात तो पहले आ ही चुकी है। झोला-छाप डॉक्टरों, केमिस्टों एवं छोटे क्लीनिकों में ग्लूकोज़ लगाना दो प्रकार से अनुचित है। पहली बात तो यह हे कि ये लोग ग्लूकोज़ तब लगाते हैं जब रोगी को इस की जरूरत नहीं होती। तथा दूसरी बात यह है कि जब रोगी को ग्लूकोज़ लगाने की जरूरत पड़ेगी तो ऐसे स्थानों पर ऐसे गंभीर रोगियों का इलाज संभव नहीं है, क्योंकि रोगी को ग्लूकोज़ के बिना और भी बहुत सी डॉक्टरी देखरेख की जरूरत होती है, जो ये लोग रोगी को प्रदान नहीं कर सकते। इस प्रकार से इन लोगों द्वारा डेंगू के नाम पर ग्लूकोज़ लगातार पूर्ण तौर पर शोषण करने का धंधा हैं प्रायः यह भी देखने में आता है कि किसी भी बुखार, दस्त, पेचिश में भी बगैर किसी चिकित्सीय आवश्यकता के ग्लूकोज़ लगा देना साधारण सी बात है। यह भी लूट एवं धोखाधड़ी का कार्य है। ग्लूकोज़ आमतौर पर केवल तब लगाया जाता है जब व्यक्ति का रक्तचाप (ब्लड प्रैशर) इतना कम हो कि ओ.आर.एस. का घोल अथवा घर में बनाए जा सकने वाले चीनी-नमक के घोल के साथ बढ़ न सका हो, रोगी बेहोश हो, रोगी अत्यधिक उल्टियां कर रहा हो, जिसके कारण उसे मुंह द्वार कुछ खाने पीने में परेशानी पैदा हो रही हों और तो और गली-मोहल्ले में बैठे कई 'डाक्टर' शरीर में 'ताकत डालने' के लिए ही ग्लूकोज़ लगा देते हैं जो कि सरासर अनुचित है। वास्तव में ग्लूकोज़ के बारे में लोगों को जानकारी ही नहीं है कि यह है क्या? ग्लूकोज़ और कुछ भी नहीं, केवल नमक-चीनी की खास मात्रा (कई बार तो केवल चीनी ही) का पानी की विशेष मात्रा में बनाया गया घोल है जो कि बोतल में पैक होता है। इसके अतिरिक्त ग्लूकोज़ की एक किस्म में नींबू में लिने वाला पोटाशियम होता है। बस यही है ग्लूकोज़ का रहस्य जिसे इधर-उधर बैठे झोला-छाप एवं दूसरे डॉक्टर भी शरीर में ताकत भरने वाली दवाई बना कर प्रस्तुत करते हैं तथा लोगों से मोटी रकमें प्राप्त कर लेते हैं। जरूरत पड़ने पर यह घोल सीधे भी पीया जा सकता है, तथा मुंह द्वारा पीने से इसका लाभ भी अधिक होता है।

सरकार क्या कर रही हैं?

ठीक-ठीक कहा जाए तो सरकारें डेंगू की बीमारी एवं साथ ही इसका डर भी, फैलाने में तथा 'डाक्टरों की कमाई' बढ़ाने में उनकी खूब सहायता करती हैं क्योंकि सरकार का कर्तव्य है कि वह लोगों को रोग के बारे में उचित जानकारी प्रदान करे तथा बीमार होने से रोकने के लिए प्रबंध करे, सरकारें इनमें से कोई भी कार्य नहीं करती। इसका अर्थ यह है कि रोग को फैलाने एवं जनता की बदहाली एवं शोषण में पूरी तरह से शामिल है। जानकारी के नाम पर कुछ पर्चे इधर-उधर दो-चार स्थानों पर चिपका दिये जाते हैं जो एक तो वैसे ही बहुत छोटे

होते हैं और ऊपर से अक्षरों का आकार इतना छोटा होता है कि बहुत निकट जाकर ही पता चलता है कि यह तो डेंगू के बारे में 'सरकारी' जानकारी है। मच्छरों को मारने के लिए दवाई का छिड़काव करना तो सरकार भूल ही चुकी है, खास तौर पर गरीबों एवं मजदूरों के क्षेत्रों में। झोला-छाप डाक्टरों एवें कैमिस्टों द्वारा (एवं 'शिक्षित' डाक्टरों द्वारा भी) की जा रही लूट को स्वास्थ्य विभाग कैसे रोक सकता है क्योंकि इससे स्वास्थ्य विभाग के अधिकरी एवं ये लोग भूखे मरने शुरू हो जाएंगे। रोग के फैलने पर इसके साथ निपटने के लिए अस्थई कलीनिक, डिस्पैंसरियां तथा डेंगू एवं प्लेटलैट्स टैस्ट करने की सस्ती अथवा मुफ्त सुविधा प्रदान करने के लिए अस्थाई लेबोरेटरी बनाई जा सकती है। साथ ही ऐसे समय प्रभावित क्षेत्रों में डॉक्टर एवं अन्य स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों की डियूटी भी लगाई जानी चाहिए। परंतु यह भी संभव नहीं क्योंकि पहले तो सरकार चाहती ही नहीं तथा न ही उसके पास आम लोगों के लिए खजाने में पैसे होते हैं क्योंकि पैसा तो सारे पूंजीपतियों की तिजोरियों एवं नेताओं, अधिकारियों की जेबों में चला जाता है। दूसरे बहुत से डॉक्टर भी नहीं चाहेंगे कि उनको गरीबों की बस्ती में जा कर रात गुजारनी पड़े। मामला साफ है कि डेंगू के रोग एवं डेंगू का डर लोगों में फैलता रहेगा जब तक आम मेहनतकश लोग स्वयं एकजुट होकर सरकार एवं स्वास्थ्य विभाग को होश में लाने के लिए 'ग्लूकोज़' नहीं लगाएंगे।

एक बात और, डेंगू एवं इसके साथ जुड़ा हुआ पूरा मामला एक बार फिर से यह दर्शाता है कि पूंजीवाद में ईलाज का उद्देश्य मुनाफा कमाना है तथा चिकित्सा विज्ञान मुनाफाखोरों की रखैल बन चुका है तथा जो विज्ञान संपूर्ण मानवता के लिए है, वह कुछ लोगों के लिए बन गया हैं और तो और अपनी ढेरों बुराइयों के साथ-साथ इस ढांचे ने जो अच्छी चीजें हैं उनका भी इस आदमखोर ढांचे ने विपरीत रूप में बदल दिया है अथवा बदल देना है। पूंजीवाद की समाप्ति आज चिकित्सा विज्ञान की सुरक्षा का ही नहीं, बल्कि पूरे विज्ञान की सुरक्षा का मामला बन चुका है।

'ललकार'-तबदीली पसन्द नौजवानों की पत्रिका से साभार।

हिन्दी अनुवादः बलवन्त सिंह लेक्चरार

पृष्ठ 21 का शेष..(कोरोना के मरीजों..)

अब सवाल ये है कि इससे कैसे बचा जाए? इसके लिए हमें उसी एजेंट होस्ट एनवायरनमेंट के त्रिकोण पर ध्यान देना होगा।

होस्ट यानि मरीज को डॉक्टर की सलाह के बिना स्टेरॉइड्स नहीं लेने चाहिए। डॉक्टरों को भी स्टेर इड्स देते समय डोज व अवधि का पूरा ध्यान रखते हुए मॉनिटर करना चाहिए। अगर स्टेर इड्स की हाई डोज बिलकुल ही जरूरी है तो साथ में एंटीबायोटिक व एन्टी फंगल दवाओं का कवरेज देना चाहिए ताकि एजेंट को काबू किया जा सके (तमाम काबिल डॉक्टर ऐसा आलरेडी कर रहे हैं)। इन संक्रमणों के शुरुआती लक्षणों का ध्यान रखना चाहिए और ऐसा कोई भी लक्षण आते ही उचित जांच व इलाज शुरू कर देना चाहिए।

स्टेरॉयड थेरेपी के दौरान ब्लड शुगर का खास ध्यान रखना होता है। ब्लड शुगर को लगातार म निटर करना व इसे लिमिट के अंदर रखना यह सबसे जरूरी चीज है।

इसके अलावा मरीज के एनवायरनमेंट की साफ सफाई का तो बहुत ज्यादा ध्यान रखना चाहिए। खासतौर पर ऑक्सीजन के पूरे सेटअप का। इसके अलावा मरीज के बेड, चद्दर व अन्य सामान की सफाई भी रोज होनी चाहिए।

और एक अन्य जरूरी बात। षड्यंत्र सिद्धान्तकारों से दूर रहें। ये आपके शारीरिक ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक हैं। किसी भी विज्ञान की तरह मेडिकल साइंस भी लगातार विकसित हो रही है। तमाम गलतियों व कमियों के बावजूद यह लगातार खुद को ठीक करते हुए आगे बढ़ रही है। मुनाफे पर आधारित व्यवस्था ने इसे पंगु बनाया हुआ है। अगर लोग मर रहे हैं, दवा इलाज नहीं है, अस्पतालों व दवा कंपनियों ने लूट मचाई हुई है तो वह व्यवस्था का कसूर है। विज्ञान का नही।

तर्कशील हलचल

'तर्कशील सोसायटी की निशुल्क करोना हेल्पलाइन' पिताजी के बचने की सूरत नजर नहीं आ रही थी, लेकिन...' निःशुल्क हेल्पलाइन की कहानी

'मुझे व्यक्तिगत तौर पर आप सब लोगों का तहे दिल से शुक्रिया अदा करना है। पिछले एक महीने में मुझे स्वास्थ्य व्यवस्था की ओर से मायूसी ही मिल रही थी। डॉक्टर्स जिनको इस समय पर लोगों की मदद करनी चाहिए वहां हर कोई अनाप-शनाप पैसे मांग रहा है। लेकिन वहीं दूसरी तरफ ऐसा भी देखा कि लोग पैसे को एक किनारे रख कर दूसरों की मदद के लिए आ रहे हैं। मैं आप सब डॉक्टर्स का उन तमाम लोगों की तरफ से शुक्रिया करना चाहती हूं जिन लोगों की भी आपने मदद की है। मेरे पिताजी की बचने की कोई भी सूरत नजर नहीं आ रही थी, लेकिन अब वो स्वस्थ हैं।'

ये उद्‌गार कोरोना से पीड़ित रहे एक मरीज के हैं जिसे निःशुक्ल परामार्श देने वाले डॉक्टरों की ओर से जीवनदान मिला।

कोरोना महामारी से बेहाल जनता को मदद पहुंचाने के लिए साइंस फॉर सोसायटी और तर्कशील सोसायटी की ओर से चल रही हेल्पलाइन के मार्फत अबतक सैकड़ों मरीजों का इलाज किया जा चुका है।सोसायटी की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि कोरोना संक्रमित व बुखार, जुखाम, सांस फूलना, बदन दर्द, गंध व स्वाद न आना, खांसी आदि के मरीजों के लिए निःशुल्क एलोपैथिक डॉक्टर से सलाह के लिए तीन मई को हेल्पलाइन नंबर 6398067708 जारी किया गया था, तबसे लेकर अबतक करीब 400 मरीजों का इलाज सफलता पूर्वक किया गया है।साइंस फॉर सोसायटी के संयोजक मदन महता ने कहा कि अब महिलाएं तथा कोरोना से उबरने के बाद मानसिक अवसाद आदि से ग्रस्त मरीज भी चिकित्सीय परामर्श ले रहे हैं।उन्होंने बताया कि इस हेल्प लाइन पर अब महिलाएं, महिलाओं से संबंधित बीमारियों के लिए प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉक्टर से निःशुल्क सलाह ले सकती हैं तथा कोरोना से उबरने के बाद मानसिक अवसाद से ग्रस्त मरीज भी अब मनोचिकित्सक से परामर्श कर सकते हैं।फॉर सोसाइटी के हेम आर्य ने बताया कि हेल्प लाइन पर अब प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से रात को 11 बजे तक 14 डॉक्टर उपलब्ध हैं। इसमें एम.बी.बी.एस, एम.डी, सर्जन, प्रसूति रोग विशेषज्ञ, बाल रोग विशेषज्ञ तथा मनोचिकित्सक निःशुल्क सेवाएँ मरीजों को दे रहे हैं। देश का कोई भी व्यक्ति हेल्पलाइन पर संपर्क कर डॉक्टर से निःशुल्क परामर्श ले सकता है।इस पूरे अभियान में बड़ी भूमिका निभाने वाले समाजवादी लोकमंच के मुनीष कुमार ने वर्कर्स यूनिटी को बताया कि अप्रैल में हरिद्वार में हुए महाकुंभ के बाद00 उत्तराखंड में जब महामारी अचानक बढ़ने लगी तो दूर दराज के लोगों की मदद के लिए ये हेल्पलाइन शुरू की गई और पहाड़ के गांवों में लोगों का इलाज करने के लिए दवाओं और जांच उपकरणों की किटें पहुंचाई गईं।

वो कहते हैं कि इस हेल्पलाइन के मार्फत जो लोग ठीक हुए, उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस पहलकदमी की तारीफ की।इस हेल्पलाइन के मार्फत लोगों ने निजी चिकित्सा व्यवस्था की मुनाफाखोरी से भी पर्दा उठाया। ऊषा पटवाल ने ऐसे मुनाफाखोरों से पर्दा उठाते हुए लिखा है, 'मेरा खुद का अनुभव अभी एक ही महीने में दो डॉक्टरों के साथ हुआ जिन्होंने ऑनलाइन पैसे ले लिये लेकिन एक बार बात करने के बाद दोबारा फोन भी नहीं उठाते और फिर से फीस भरने की बात करते हैं। इस वक्त उनको ये भी एहसास नहीं हो रहा है कि शायद कोई इमरजेंसी भी हो सकती है या किसी जान बच सकती है।'

'लेकिन वहीं जब आपके जैसे लोग सामने आकर खड़े हुए तो कितने लोगों को आपके इस कदम से एक हौसला और जीने की उम्मीद नजर आई होगी। जो लोग पैसे नहीं दे सकते उनको भी कितना सहारा मिला होगा। आप लोगों को शुभकामनाएं।'

गोरखपुर की सची दुबे ने लिखा है कि आज के समय में जब डॉक्टर्स मरीजों को लूट रहे हैं, आप लोगों की ओर से निःशुल्क परामर्श दिलाना बहुत अच्छा काम है। जितनी तारीफ की जाए उतना कम है।

ठीक हुए लोगों ने उन डॉक्टरों की तारीफ की जिन्होंने संवेदनशील होकर मरीज से बात की और बाद में फॉलोअप लेते रहे। या जब जरूरत पड़ी उन्होंने बिना निर्धारित समय के परामर्श दिया।

मुनीष कुमार कहते हैं कि ऐसे सैकड़ों संदेश लोगों ने भेजे हैं। कुछ नम्बर ऐसे हैं जहां से लगातार पेशेंट अपना इलाज करवा रहे हैं। ठीक होने के बाद अपने फोन से दूसरे मरीजों को भी हेल्पलाइन के जरिए परामर्श दिलवा रहे हैं।वे बताते हैं कि डॉक्टर्स व्यस्त कई बार व्यस्त होते हैं लेकिन वे बाद में खुद ही मरीज से संपर्क कर लेते हैं। सभी डॉक्टर्स का टाइम शेड्यूल है लेकिन शेड्यूल से बाहर भी वे मरीजों के कॉल अटेंड कर लेते हैं।

www-workersunity-com

विमान संशोधक **विल्बर राईट स्मृतिदिन**

स्मृतिदिन - 30-5-1912'

ऑर्विल राईट और विल्बर राईट को राईट बंधू कहा जाता है जो सयुंक्त राज्य अमेरिका के रहने वाले थे। इन्हें हवाई जहाज का अविष्कारक कहा जाता है। राईट बंधुओ ने 17 दिसम्बर 1903 को हवा में भारी विमान को कुछ समय तक उड़ाकर इतिहास रचा दिया।

विल्बर राईट का जन्म 16 अप्रैल 1867 और अ र्विल राईट का 19 अगस्त 1871 को डॉयटन में हुआ।

इनके पिता बिशप मिल्टन राईट इनके लिए तरह-तरह के खिलौने लाते थे। एक बार वे मशीनी हेलीकाप्टर लेकर आये, जिसे देखकर राईट बन्धु बहुत प्रभावित हुए। कुछ समय ऑर्विल ने पतंग बनाने का काम किया और उड़न मशीन बनाने के बारे में सोचने लगे। उन्होंने अपना एक अखबार निकाला और इसी दौरान ऑर्विल ने अपनी डिजाईन की एक प्रिंटिंग प्रेस बना डाली।

सन 1892 में अमेरिका में साइकिल बहुत लोकप्रिय थी। राईट बन्धु स्वयं अच्छे चालक और मैकेनिक भी थे। उन्होंने साइकिल के धंधे में हाथ आजमाने की सोची और आर्डर पर खुद साइकिल बनाकर बेचने लगे। उनकी साइकिल ब्रैंड 'वैन क्लीव', 'राईट स्पेशल' और 'सेंट क्लेयर' नाम से खूब बिकी और सपने साकार करने के लिए उन्होंने पर्याप्त धन इकठ्ठा कर लिया।

इसके बाद वे पक्षी उड़ान, ग्लाइडिंग इत्यादि पर अध्ययन करने लगे। उन्होंने हवाई जहाज के कई डिजाईन भी बनाये। 17 दिसम्बर 1903 को ऑर्विल ठीक 10 बजकर 35 मिनट पर सुबह अपने बनाये वायुयान में सवार हुए। उन्होंने 12 सैकंड तक उसे उड़ाया और 120 फीट की दूरी तय की। उसी दिन चौथी टेस्ट लाइट में विल्बर 59 सैकंड तक हवा में रहे और उन्होंने 852 फीट की दूरी तय की।

राईट बंधुओं ने अपने प्रयोग जारी रखे और राईट कम्पनी की स्थापना की। 30 मई 1912 को विल्बर की मृत्यु हो गई। अपनी विरासत को आगे बढाते हुए ऑर्विल ने उड़ान व्यवसाय लगा दिए। 1916 में उन्होंने अपनी राईट कम्पनी बेच दी और स्वयं को वायुयान से जुड़े अविष्कारों में लगा दिया, जिनसे उन्हें पहचान मिली थी। उन्होंने एक एयरोनाटिक लैब भी स्थापित की।ऑर्विल राईट National Advisory Committee for aeronautics के संस्थापक सदस्य थे। उन्होंने 28 साल तक वहा नौकरी की। सन 1958 में NACAका नाम बदलकर NASANational Aeronautics and Space Agency कर दिया गया।

वैज्ञानिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए अ रविल को अनेक पुरुस्कार मिले। प्रथम डेनिएल गुगेनहेम मेडल उन्हें 8 अप्रैल 1930 को दिया गया। राईट बंधुओ को वैज्ञानिक जगत सदा उनका आभारी रहेगा। वे डॉयटन, ओहियो के जिस घर में रहे उसका डिजाईन भी दोनों भाइयो ने मिलकर तैयार किया था, लेकिन दुर्भाग्य से उसके पूरा होने से पहले ही विल्बर की मृत्यु हो गयी। इसी घर में 30 जनवरी 1948 को ऑर्विल राईट ने अंतिम सांस ली।

संकलक - दिपक तरवडे

युगांडा में 'नरबली' प्रथा के खिलाफ कानून पारित

महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति का मार्गदर्शन लिया गया

युगांडा देश में हाल ही में 'नरबली' प्रथा के खिलाफ कानून पारित हुआ है। उल्लेखनीय है की इस कानून का प्रारूप बनाने के लिए युगांडा के सांसद बर्नार्ड अटिक्यू द्वारा महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती (शहीद डॉ. नरेंद्र दाभोलकर द्वारा वर्ष 1989 में स्थापित) इस संगठन की सहायता ली गयी। यह संगठन महाराष्ट्र राज्य में अंधविश्वास उन्मूलन का कार्य कर रहा है तथा अन्य राज्यों में काम कर रहे बुद्धिवादी संघटनों और व्यक्तियों के साथ तालमेल रखते हुए अंधविश्वास उन्मूलन का कार्य देशव्यापी करने के लिए प्रयास कर रहा है। इसी संगठन द्वारा 9 अगस्त 2019 को मुंबई में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय तर्कशील सम्मेलन में देश के विविध राज्यों और विदेशों से आये हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

युगांडा के सांसद बर्नार्ड अटिक्यू 'युगांडन पार्लियामेंटरी फोरम फॉर चिल्ड्रन्स' के अध्यक्ष है। वे और फोरम के आठ सदस्य नरबली की कुप्रथा का उन्मूलन करने के लिए प्रयासरत थे। इस विषय पर अधिक जानकारी पाने के लिए जब उन्होंने खोज शुरू की तब उन्हें यह पता चला की भारत देश के महाराष्ट्र राज्य में नरबली और जादूटोना के खिलाफ कानून पारित हुआ है और इस में महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति इस संगठन का काफी योगदान रहा है। तब, उन्होंने महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती के प्रधान सचिव माधव बावगे से फोन पर संपर्क किया। बाद में समिती के कार्याध्यक्ष अविनाश पाटिल ने महाराष्ट्र में कानून पारित करने के लिए डॉ. नरेंद्र दाभोलकर के नेतृत्व में किया हुआ निरंतर संघर्ष, सरकार को प्रस्तुत किया हुआ कानून का प्रारूप, पारित किया गया कानून, कानून के अंतर्गत दायर अपराध, आदि जानकारी दी। बर्नार्ड के सचिव एनी एक्या ने संगठन के आंतराष्ट्रीय समन्वयक प्रो. डॉ. सुदेश घोड़ेराव के सात लगभग चार साल संवाद साधते हुए महाराष्ट्र के कानून का प्रारूप, निर्माण का इतिहास, कानूनी दिक्कतें, संसदीय प्रणाली तक का

शेष पृष्ठ 46 पर

लड़कियों की जिंदगी बरबाद करने वाली सामाजिक कुप्रथा 'आटा-साटा'

आटा-साटा ने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी..

नारगौर। नागौर जिले के नावां थाने के ग्राम हेमपुरा में एक 21 वर्षीय शादीशुदा युवती ने कुएं में कूद कर अपनी जान दे दी। उसकी मौत के बाद एक सुसाइड नोट वायरल हो रहा है। इस सुसाइड नोट में उसने लिखा कि सामाजिक कुप्रथा आटा-साटा ने लाखों लड़कियों की ज़िंदगी बर्बाद कर दी है। हालांकि परिवार की ओर से दी रिपोर्ट में बताया कि वह मानसिक रूप से परेशान थी।

ग्राम हेमपुरा निवासी नारुराम ने पुलिस को रिपोर्ट पेश कर बताया कि मेरे भाई नानूराम की पुत्री सुमन को शादी भूणी में हुई थी। उसका पति विदेश में रहता है। सुमन आठ महीनों से हमारे पास ही रह रही थी। सुमन गत चार पांच दिनों से मानसिक रूप से परेशानी थी जिसके कारण वह हमारे घर के पास के एक कुंए में गिर गई। जिसे नावां अस्पताल लाने पर डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।

युवती ने सुसाइड नोट में लिखा था कि मुझे पता है कि सुसाइड करना गलत है पर सुसाइड करना चाहती हूं। मेरे मरने की वजह मेरा परिवार नहीं, पूरा समाज है, जिसने आटा-साटा नाम की कुप्रथा चला रखी है। इसके कारण लड़कियों को जिंदा मौत मिलती है। इसमें लड़कियों को समाज के समझदार परिवार अपने लड़कों के बदले बेचते हैं।

आप समाज के लोगों की नजरों में तलाक लेना गलत है, परिवार के खिलाफ शादी करना गलत है, तो फिर यह आटा-साटा भी गलत है। आज इस प्रथा के कारण हजारों लड़कियों की जिंदगी और परिवार पूरे बर्बाद हो गए हैं। इस प्रथा के कारण पढ़ी-लिखी लड़कियों की जिंदगी खराब हो जाती है। **इसी प्रथा के कारण 17 साल की लड़की की शादी 70 साल के लड़के से कर दी जाती है। केवल अपने स्वार्थ के कारण।**

मैं चाहती हॅ, मेरी मौत के बाद यह मेरी बातें बनाने की जगह, मेरे परिवार वालों पर उंगली उठाने की जगह इस प्रथा के खिलाफ आवाज उठाएं।

केस रिपोर्ट

तांत्रिक क्रियाओं की दहशत दूर की

–बलवंत सिंह, लेक्चरार

सुरजीत सिंह वन विभाग से रिटायर होकर अपने परिवार में आनन्ददायक जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके दो बेटे और दो बेटियां थीं। अपने बेटे-बेटियों की शादी उसने अपनी रिटायरमेंट से पहले ही कर दी थीं। बेटियां अपने ससुराल में सुखी जीवन बिता रही थीं। उसके दोनों बेटों ने अपना अलग-अलग का धंधा शुरू कर लिया था। सुरजीत सिंह ने पहले ही अपने दोनों बेटों के नाम से उनके अलग-अलग मकान बना दिये थे। अतः दोनों बेटे अपने-अपने परिवार के साथ अलग-अलग रहने लग गये थे। उसका एक बेटा तो उसी गली में अलग मकान में रहता था परंतु उसके दूसरे बेटे ने अपना वह मकान किराये पर चढ़ा दिया था और स्वयं शहर के दूसरी ओर एक किराये के मकान में अपने परिवार समेत रहने लग गया था। उसके दोनों बेटे समय मिलने पर कभी कभार अपने मां-बाप के पास मिलने के लिए आ जाया करते थे। अपने पुश्तैनी मकान में अब सुरजीत सिंह व उसकी पत्नी दोनों ही रह रहे थे।

अचानक उनके घर में से पैसे गुम होना शुरू हो गये। एक बार सुरजीत सिंह ने अपने एक मित्र को जरूरत पड़ने पर 38000 रुपये उधार में दिये थे। कुछ समय के पश्चात् वह मित्र उसे वे उधार के रुपये वापिस कर गया। सुरजीत सिंह ने 2000 रुपये अपनी जेब में से मिला कर 40000 रुपये पूरे कर अपनी अलमारी में रख दिये। कुछ दिनों के पश्चात् जरूरत पड़ी तो और उसने अल्मारी खोलकर वे रुपये निकालने लगा तो वह यह देख कर हैरान रह गया कि अलमारी में उस जगह पर 40000/- की बजाए केवल 6000 रुपये ही पड़े थे। उसने अपनी पत्नी से रुपये के बाबत पूछा तो वह कहने लगी कि न तो उसे कोई पैसों की जरूरत पड़ी और न ही उसने कोई पैसा निकाला है। दोनों ही हैरान थे कि आखिर वे पैसे गये तो गये कहां।

उसके बाद वे थोड़ा चौकस हो गये। अब वे अपने पेसों को अल्मारी के बजाए कभी बेडों में तो कभी कहीं तो कहीं रखने लग गये। परंतु उनके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उन्होंने देखा कि बेडों में रखे गये 4000 रुपये भी एक दिन गुम हो गये। फिर उन्होंने जगह बदल कर दूसरी जगह पर पैसों को रख दिया। परंतु कुछ ही दिनों के पश्चात् वहां से 5000 रुपये गुम हो गये। इस प्रकार वे जगह बदल-बदल कर अपने पैसे रखते रहे परंतु प्रत्येक जगह से एक बार 2400 रुपये एक बर 1500 रुपये दोबार 3500-3500 रुपये गायब हो गये। फिर एक बार 1350 रुपये गायब हो गये। फिर उन्होंने एक छोटा ट्रंक लिया और पैसे उसी में रखने शुरू कर दिये। ट्रंक में पैसे रख कर ताला लगा देने के पश्चात् घर में से पैसे गायब होने लगभग एक महीना बंद रहे। इसी दौरान वे किसी तांत्रिक के पास इलाज के लिए गये थे। उस तांत्रिक ने एक काले धागे में कुछ मंत्र पढ़ते हुए उस पर कुछ गांठें लगा कर उनको दे दिया तथा उसे ट्रंक के कुण्डे में बांध देने के लिए कहा। तांत्रिक ने पूजा-पाठ के नाम पर उनसे 2100 रुपये लिये और उन्हें घर भेज दिया। घर आ कर उन्होंने ट्रंक के कुण्डे में उस 'पवित्र' धागे को बांध दिया। जिससे उनके कथनानुसार एक महीने तक घर में पैसों की सुरक्षा बनी रही। परंतु उनकी हैरानी की सीमा न रही जब एक दिन सुरजीत सिंह बाजार में किसी जरूरी कार्य के लिए गया हुआ था। उसकी पत्नी अपने घर के काम में व्यस्त थी। जब सुरजीत सिंह घर वापिस आया तो देखा कि उस ट्रंक का कुण्डा टूटा हुआ था और उस में रखे हुए लगभग 16000 रुपये गायब थे।

दरअसल उनका एक रिश्तेदार तांत्रिक क्रियाएं करता रहता था। उसका दावा था कि वह अभी तांत्रिक सिद्धियां प्राप्त कर रहा है, पूर्णतः सिद्धियां प्राप्त करने में धन की कमी आड़े आ रही है। एक बार ऐसे संपूर्ण सिद्धियां प्राप्त हो गईं तो वह अपनी मनमर्जी के मुताबिक 'कुछ भी' कर दिया करेगा। सुरजीत के वन विभाग में नौकरी होने के कारण वह प्रत्येक महीने की दो या तीन तारीख को

उसके पास आ धमकता था तथा उसको तांत्रिक सिद्धियों की शक्तियों के चमत्कारों के सब्जबाग दिखा कर उससे पांच-सात हजार ऐंठ कर ले जाता था। सुरजीत सिंह के सामने वह कई बार तांत्रिक क्रियाएं करते हुए कभी मुर्गे की बलि कभी सुअर के बच्चे की बलि कभी बकरे की बलि दिया करता था। इससे सुरजीत सिंह के मन में उसकी तांत्रिक क्रियाओं के कारण एक दहशत सी बैठ गई थी। अतः वह उसके मांगने पर उसे पैसे देने से कभी इनकार नही किया करता था। सुरजीत सिंह के रिटायर होने के पश्चात् भी उस तांत्रिक की आदतें वैसी ही बनी हुई थीं। अभी भी वह पैसे मांगने के लिए आ धमकता था। हर बार उसका यही कहना होता था कि 'बस शक्तियों में थोड़ी सी कमी रह गई है, कुछ और सिद्धियां प्राप्त करने की जरूरत है। एक बार सभी शक्तियों प्राप्त होगई तो मैं तुम्हें भी मालामाल कर दूंगा।'

उसकी इन चिकनी-चुपड़ी बातों से अब सुरजीत सिंह परेशान हो चुका था। वह अन्दर ही अन्दर से उससे डरता भी था। परंतु उससे अपना पीछा भी छुड़ाना चाहता था। फिर एक दिन जब उस तांत्रिक क्रियाओं के लिए 11000 रुपयों की मांग की तो उसने अपना हौसला कायम रखते हुए उसे पैसे देने से बिल्कुल इनकार कर दिया था। इससे वह तांत्रिक क्रोध में आकर सुरजीत सिंह को यह कह कर चला गया कि 'कोई बात नहीं, अगर तुम अब मुझे पैसे नहीं भी दोगे तो फिर क्या बात है, पैसे तो मेरे पास अपने आप चल कर आ जाएंगे।' साथ वह यह धमकी भी दे गया कि 'तुम्हें मेरी शरण में तो आना ही पड़ेगा। यदि तुम मेरी शरण में नहीं आओगे तो तुम्हें बर्बाद होने से कोई भी नहीं बचा सकता।'

इस घटना के कुछ महीनों के पश्चात् जब उनके घर से पैसे गायब होना शुरू हो गये तो सुरजीत सिंह व उसके परिवार वालों के मन में यह बात पूरी तरह से घर कर गई कि यह सब कुछ वही तांत्रिक अपनी तांत्रिक क्रियाओं के द्वारा कर रहा है। तंग आकर सुरजीत सिंह ने उस तांत्रिक के पास क्षमा-याचना करने का प्रयास भी किया, परंतु वह तांत्रिक और अधिक अकड़ में आ गया। उस तांत्रिक ने सुरजीत सिंह को उसके घर में क्षमा-याचना के लिए आये हुए को दुत्कार कर भगा दिया। अब तो सुरजीत सिंह को पक्का यकीन हो गया कि उन के घर में हो रही सभी घटनाओं के पीछे इसी तांत्रिक का ही हाथ है। अब उसने अपने नजदीकी रिश्तेदारों को बीच में डाल कर उससे ऐसी घटनाएं बन्द करवाने के लिए भी अनुरोध किया। परंतु उसने उन रिश्तेदारों के सामने भी सुरजीत सिंह को धमका दिया।

इधर सुरजीत सिंह के घर में पैसे गायब हो जाने की घटनाएं लगातार जारी थीं। ऐसे में समाज के अन्य परेशान व्यक्तियों की भांति सुरजीत सिंह भी अन्य स्यानों, बाबाओं, तांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों की शरण में जाता रहा। परंतु समस्या का समाधान कहीं से भी नहीं हो पाया। हां, एक तांत्रिक ने जब उसे एक 'अभिमंत्रित धागा' ट्रंक को बांधने के लिए दिया और एक महीना तक घर में पैसे गायब होने की कोई घटना नहीं हुई तो उसे काफी हद तक विश्वास हो गया कि अब उन्हें इन समस्याओं से छुटकारा मिल जाएगा। अभी वे उस तांत्रिक के पास उसका धन्यवाद करने के लिए तथा उसके चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पण करने के लिए एक-दो दिन में जाने की योजना बना ही रहे थे कि उनके घर में पैसों वाले ट्रंक का ताला टूट गया और उसमें रखे हुए सारे ही पैसे गुम हो गये। इस घटना से सुरजीत सिंह का परिवार और अधिक दहशत में आ गया।

उन्होंने अपने मन में शांति के लिए अपने घर के एक कमरे को पूजा-पाठ का कमरा बनाया हुआ था। उस पूजा-रूम में वे दोनों पति-पत्नी रोजाना पूजा-पाठ भी किया करते थे। उस कमरे में उन्होंने एक छोटी सी गुल्लक भी रखी हुई थी। वे रोजाना ही उस गोलक में भगवान के नाम पर कुछ न कुछ पैसे डाल दिया करते थे। लम्बे समय से उस गुल्लक में पैसे डालते रहने के कारण वह गुल्लक मुंह तक भर चुकी थी और उसके वज़न भी काफी बढ़ चुका था। एक दिन उन्होंने उसका ताला खोल कर उसमें जमा सारे पैसों की गिनती की। छोटे-बड़े सिक्के वे नोट मिला कर उसमें 8000 से भी अधिक की राशि थी। उन्होंने उसमें से सभी सिक्के निकाल लिया तथा उनकी जगह पर बड़े नोट गिन कर उस गुल्लक में रख दिये। कई दिनों के पश्चात जब उन्होंने उस गुल्लक को दोबारा खोला तो वह

गुल्लक भी खाली थी। उनका कथनानुसार उस तांत्रिक ने अपने तंत्र-मत्र द्वारा 'भगवान के पैसे' भी उड़ा लिये थे।

वे सभी प्रकार के बाबाओं, ओझाओं, तांत्रिकों, गुल्ला-मौलवयिों के पास जा-जा कर अपने हजारों रुपये लुटा चुके थे और निराश होकर अपनी किस्मत को कोसते हुए घर में बैठ चुके थे।

एक दिन तर्कशील सोसायटी के जनहित के कार्यो से परिचित उनके एक जानकार ने उनको मेरा पता बताया और सुरजीत सिंह को लेकर मेरे पास आ गया। मैंने उनकी सारी व्यथा सुनी और उनकी समस्या के समाधान के लिए उनके घर में जाने का समय उनको दे दिया। निश्चित दिन पर उनके घर में जाकर पूरी जांच-पड़ताल की और उनकी समस्या का हमेशा के लिए समाधान कर दिया।

कैसे होता था यह सबः

शुरू में जब मैंने उनकी सारी समस्या सुनी तो उनके कथनानुसार वे दोनों पति-पत्नी ही उस घर में रहते थे। अतः इस हिसाब से उन दोनों में से ही कोई दोषी होना चाहिये था। मैंने दोनों के साथ अलग-अलग से लम्बी मनोवैज्ञानिक तौर पर काऊंसलिंग की, परंतु वे दोनों पूरी तरह से निर्दोष साबित हो रहे थे। जब मैं उन दोनों के साथ बारी-बारी से काऊंसलिंग कर रहा था तब मैंने देखा कि 10-11 साल का एक लड़का उनके घर में घूमता फिर रहा था। जब मैंने उन्हें उस लड़के के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि यह उनका पोता है और कभी-कभी उनके घर में आ जाया करता है। मेरे संदेह की सूई उस लड़के की तरफ घूम गई। फिर मैंने उनसे सहमति लेकर उस लड़के से बातचीत करनी चाही। उन्होंने सहर्ष इसके लिए सहमति प्रदान कर दी। फिर मैंने उस लड़के से अलग से बातचीत की और फिर मनोवैज्ञानिक काऊंसलिग द्वारा उसके अंदर से सारी सच्चाई निकलवा ली। मनोवैज्ञानिक काऊंसलिंग के दौरान उसने स्वीकार किया कि उसक घर से सारे पैसे धीरे-धीरे करके उसी ने चुराए थे। वह अपने दादा-दादी के पास खेलने के लिए अक्सर आ जाया करता था। एक दिन उसके सामने ही सुरजीत सिंह का एक परिचित 38000 रुपये देकर गया था। उसके सामने ही सुरजीत सिंह उनमें दो हजार रुपये और मिला कर उन पैसों के अलमारी में रख दया था। अल्मारी में ताला नहीं लगाया गया था। अब वह लड़का खेलने के बहाने उनके घर में बार-बार आने लग गया था। जब उसका दादा बाहर अथवा बाजार में गया होता और उसकी दादी अपने घर के काम में व्यस्त हो जात तो वह अल्मारी खोल उसमें से कुछ नोट खिसका लेता रहा। इस प्रकार कुछ ही दिनों उसने 40000 में से केवल 5-6 हजार ही शेष रहने दिये बाकियों को वह उड़ा गया। सुरजीत के दिमाग में उनके रिश्तेदार तांत्रिक की कही हुई बातें कौंध गई। अतः उसने वैज्ञानिक ढंग से इसकी जांच पड़ताल करने की बजाए उसे तांत्रिक रिश्तेदार द्वारा तांत्रिक सिद्धियों द्वारा किया गया क्रियाकलप ही मान लिया। उन्होंने अब जगह बदल-बदल कर पैसे रखना शुरू कर दिया। परंतु उनका पोता उनके घर में खेलते रहने के बहाने इस बात की पूरी निगरानी रखता रहा कि वे पैसे कहां पर रखते हैं। फिर जब उसका दांव लगता तो वह वहां से पैसे चुरा कर ले जाता रहा। जब एक तांत्रिक ने नया ट्रंक लेकर उसके कुंडे में 'अभिमंत्रित किया हुआ' धागा बांधने के लिए तथा उसमें ताला लगाने की ताकीद कर दी तो एक महीने तक पैसे चुराने के उनकी पोते का दांव नहीं लगा।

हराम की कमाई हाथ में लगने के कारण उनका पोता पूरी तरह से एय्याश बन चुका था। वह अपने साथ अपने पांच-सात दोस्तों के ले जाता और बाजार में से कभी कुछ तो कभी कुछ खरीदता रहता। एक महीने तक तो पहले से उड़ाए गये पैसों से काम चलता रहा। इसी दौरान मौका मिलने पर उसने अपने पिता की जेब में से भी कुछ पैसे चुरा लिये थे। परंतु जब सारे ही पैसे खत्म हो गये तो अंत में उसने मौका मिलने पर दादा के घर में पड़ी एक हथौड़ी से उस ट्रंक का कुण्डा ही तोड़ दिया और उसमें रखे गये सारे पैसे चुरा लिये। फिर एक दिन उसने घर के मंदिर में रखी हुई गुल्लक को तोड़ कर उसमें रखे 'भगवान के' सारे पैसे भी चुरा लिए।

वास्तव में उनके पोते की आदतें पहले से ही बिगड़ी हुई थीं। वह अपने मां-बाप की जेब से भी मौका मिलने पर पैसे चुरा लेता रहा था। जब सुरजीत सिंह को उसने 40000 रुपये अल्मारी में रखते हुए देखा तो उसके मन में शैतानियत कूदने

लगी। मौका मिलते ही वह वहां से पैसे चुराता रहा और अपने आवारा दोस्तों के साथ मटर-गश्ती करता रहा। सुरजीत सिंह व उसकी पत्नी का दिमाग तो तांत्रिक की शक्तियों में, सिद्धियां में उलझा हुआ था और उनका पोता शैतान बन कर उनके घर से पैसों का सफाया करता रहा था।

अन्त में मैंने उन दोनों के सामने ही उनके पोते से कबूल करवाया कि उनके घर में से सारे के और साथ ही उसके अपने मां-बाप की जेब से गायब हुए सारे पैसे उसी ने उड़ाये थे और अपने आवारा दोस्तों के साथ फालतू के खर्चों में सारे के सारे उड़ा दिये थे।

उसके बाद मैंने उन्हें तांत्रिकों की वास्तविकता के बारे में समझाया और कहा कि तर्कशील सोसायटी ने ऐसे तांत्रिकों को करोड़ों रुपयों की चुनौती दे रखी है। कोई भी तांत्रिक-मांत्रिक उसे आज तक जीत नही सका है। अंत में मैंने उनको अंधविश्वासों को त्याग कर वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी।

अब एक वर्ष से ऊपर का समय हो चुका है । उसके बाद उनके घर में से कोई भी पैसा गुम नहीं हुआ और उनके सामने किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं आई।

वे आएंगे

श्मशान कम पड़ गये हैं
हस्पतालों में आग लग रही है
ना आक्सीजन, ना दवाई
वैक्सीन पर राजनीति
हर तरफ चीखो-पुकार

चिंता मत करो

पूंजीपति आएंगे चौरिटी करने
सरकारें आएंगी फरियाद सुनने
देवता आएंगे चमत्कार दिखाने
ऋषि मुनि आएंगे वरदान देने
मंदिर-मस्जिद आएंगे मन्नतें पूरी करने
चमत्कारी बाबा आएंगे आशीर्वाद देने
एक बार यह करोना महामारी
खत्म हो जाए बस!

फिर सब आएंगे
जैसे पहले आते थे

-जयपाल

बाबाओं के कारनामे

अव्यस्क लड़की के बलात्कार के जुर्म में मौलवी गिरफ्तार

स्टाफ रिपोर्टर

नई दिल्ली- एक 48 वर्षीय मौलवी को मस्जिद को अंदर एक 10 वर्षीय लड़की का यौन शोषण करने के आरोप में उत्तर पूवी दिल्ली के हर्ष विहार की एक मस्जिद में हिरासत में से लिया गया है।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि उन्हें रविवार को एक सूचना प्राप्त हुई जिसके उपरांत बलात्कार और प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फराम सैक्सुअल ओफेंसिस एक्ट की संबंधित धारा के तहत मामला दर्ज किया गया।

पुलिस ने कहा कि लड़की मस्जिद में आरोपी से कुरान सीखने जाया करती थी।

रविवार को उसने उसका यौन उत्पीड़न किया। घर आकर उस लड़की ने अपनी मां को इस घटना के बारे बताया जिसके बाद उसकी माता ने पुलिस को सूचना दी।

अधिकारी ने बताया कि आरोपी को सोमवार को गाजियाबाद के लोनी से गिरफ्तार लिया गया है और और कोर्ट में पेश किया गया जिसके बाद उसे 14 दिन की न्यायिक हिरास्त में भेज दिया गया।

द हिंदू (2-6-2021)

<u>नौजवान भारत सभा, पीपुल्स फोरम</u>
<u>जंगे आजादी में मुश्तरका जम्हूरी विरासत</u>

मौलाना हसरत मोहानी

– <u>हसरत मोहानी गणेश शंकर विद्यार्थी के शब्दों में</u>

(मौलाना फजलुल हसन हसरत मोहानी देश की उन पाक-हस्तियों में से एक हैं जिन्होंने देश की स्वाधीनता, कौमियत के भाव की तरक्की, अत्याचारों को मिटाने, अन्यायों के विरोध करने के लिए, जन्म-भर कठिनाइयों और विपत्तियों के साथ घोर से घोरतम संग्राम किया। उस समय, जब भारत की राष्ट्रीय-वेदी पर लोकमान्य तिलक अपना सर्वस्व न्यौछावर कर रहे थे, लोग उनका साथ देते डरते थे, – उस समय उस बीहड़ पथ में, लोकमान्य तिलक के साथ, मौलाना हसरत ने अपना कदम आगे बढ़ाया था, और देश और कौम पर अपनी जिंदगी कुर्बान कर दी थी। उस समय से उन्हें आजादी का सौदा है। उस जमाने से, उन्होंने इस रास्ते में तकलीफों पर तकलीफें उठाई। हाकिमों की आँखों में वे सदा खटकते रहे। कोई कसर न रखी गई उनको सताने में, उनको दबा डालने में। परंतु मौलाना भी अपने ढंग के निराले निकले। जितनी सख्ती की जाती, उतनी ही मर्दानगी से वे उसका सामना करते। उनके जीवन का यह खास ढंग रहा है। उनका साहस, उनकी ढ़ता, तपा हुआ सोना सिद्ध हुई है।

*<u>युवकों के लिए, उनके ये गुण, बड़े जबर्दस्त पथ-प्रदर्शक हैं।</u> दृढ़ राष्ट्रीय विचारों के कारण मौलाना सांप्रदायिक और जातीय बातों से सदा ऊपर रहे। इस कठिन समय में, जब हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे की गर्दन के नापने में अपना बल और पुरुषार्थ दिखा रहे हैं, मौलाना का हमारे बीच में आ जाना, बहुत संभव है, देश के लिए बहुत हितकर सिद्ध हो। महत्मा गाँधी के पश्चात् यदि कोई आदमी इस मामले को अपने हाथ में ले सकता है, तो वह मौलाना ही हैं।" **(हसरत मोहानी के तीसरी बार जेल से छूटने के बाद साप्ताहिक प्रताप के 18 अगस्त 1924 के अंक से उद्धृत)***

<u>प्रस्तुतः– जनवादी चेतना केन्द्र, जन दस्तावेज एवं संवाद केन्द्र हसरत मोहानी</u>

उन्नाव की हसनगंज तहसील के मोहान में एक जमींदार परिवार में जन्मे हसरत मोहानी (सैयद फजलुल हसन) के विचारों पर तीन समकालीन चिंतन पद्यतियों का प्रभाव देखा जा सकता है। लखनऊ स्थित फिरंगी महल, बरतानिया विरोधी सर्व इस्लामवादी विचारधारा और साम्यवादी चिंतन। अवध की गंगा–जमुनी संस्कृति में उनका मानस ढला था। वे अपने वक्त के नायाब शायर थे। "हसरत" उनका तखल्लुस था। सूफी विचार पद्यति, प्रेम और मानवता उनके चिंतन और शायरी के मजमून थे। उनकी रचनाओं में कृष्ण भक्ति तथा मथुरा के साथ उनका लगाव उन्हें अजीम शायर बनाते हैं। जोश मलीहाबादी, अकबर इलाहाबादी की तरह उनकी शायरी और नज्में गरीबों के दर्द और जंगे आजादी के ख्यालों से सराबोर थीं। फिरंगी महल के अब्दुल बारी "जमायते–उलेमा–ए–हिन्द" के संस्थापकों में से एक तथा हिंदू–मुस्लिम एकता के जबरदस्त हिमायती थे।

<u>इंकलाबी लेखन और पत्रकारिता</u>

हसरत मोहानी ने अलीगढ़ एमओयू कॉलेज (मुहम्मडन एंग्लो–ओरिएंटल कॉलेज) से ग्रेजुएशन किया था। बाद में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी आंदोलन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। छात्र जीवन के दौरान उनके द्वारा 1903 से शुरू ''उर्दू –ए – मुअल्ला" नामक साहित्यिक पत्रिका की शुरुआत की जो जल्द की बरतानिया साम्राज्यवाद के विरोध और हिंदू– मुस्लिम मुश्तरका जद्दोजहद का परचम बन गई। यह पत्रिका देश की जंगे आजादी

का महत्वूपर्ण दस्तावेज है। हसरत मोहानी ने खुलकर कांग्रेस के गरम दल का समर्थन और बंगाल विभाजन के बाद शुरू स्वदेशी आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।

जेल जीवन का सिलसिला

राजद्रोहात्मक लेखन के आरोप में अप्रेल, 1908 में उनकी पहली गिरफ्तारी हुई। अलीगढ़ और इलाहाबाद जेल में कठोर कारावास के दौरान उन्हें हाथ की चक्की से 40 किलो अनाज प्रतिदिन पीसना होता था। उनकी जेल डायरी ब्रिटिश जेल की यातनाओं की सजीव दास्तान हैं। रिहाई के बाद उन्होंने 'उर्दू -ए - मुअल्ला' का प्रकाशन दुबारा शुरू किया। इसके पहले अंक में अरबिंदो घोष के संपादन में निकलने वाली पत्रिका कर्मयोगी में प्रकाशित लेख का अनुवाद रिसाला स्वराज एवं मुस्लिम शीर्षक में मुस्लिम लीग के गठन के दौर में वायसराय से शिमला में मुस्लिम प्रतिनिधियों से मुलाकात पर टिप्पणी करते हुए कहा गया था कि जल्द की मुसलमान समझ जाएंगे कि बरतानिया सरकार जो मधुर वायदे कर रही है वे सब छलावा मात्र हैं। बरतानिया सरकार ने पत्रिका के खिलाफ दमनकारी प्रेस एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई करते हुए भारी जुर्माने लगाए गए। कानपुर में बरतानिया हुक्मरानों द्वारा मछली बाजार मस्जिद को ढहाए जाने का प्रतिरोध और इसे कुचलने के लिए शासकों द्वारा बेकसूर मुसलमानों पर फायरिंग के विरोध में उन्होंने जबरदस्त लेख लिखे। अंत में 1913 में उर्दू -ए - मुअल्ला को बंद करना पड़ा। कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य समझौता (दिसंबर, 1916) के लिए भी हसरत मोहानी की सक्रिय भूमिका रही।

इंकलाबी जीवन

हसरत मोहानी का संपर्क गदर पार्टी के साथ था। उर्दू -ए- मुअल्ला के शुरुआती अंक में हसरत मोहानी के नाम मौलवी बरकतुल्ला का एक पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसमें बरतानिया साम्राज्यवाद का विरोध और हिंदू-मुस्लिम मुश्तरका संघर्ष की रणीनीति की पेशकश की गई थी। बरकतउल्ला शेख़ जमालुद्दीन अफ्गानी से प्रभावित थे, जिन्होंने इस्लामी विश्व बिरादराना दर्शन को बरतानिया साम्राज्यवाद के विरोध और हिंदू-मुस्लिम मुश्तरका संघर्ष के साथ जोड़ कर भारत में क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय भूमिका अदा की थी। लाला हरदयाल और करतार सिंह सराभा के साथ बरकतउल्ला गदर पार्टी के मुख्य नेताओं में से थे। प्रथम विश्वयुद्ध के समय राजा महेंद्र प्रताप सिंह के नेतृत्व में गठित अस्थाई क्रांतिकारी भारत सरकार के महामंत्री थे। इसमें प्रमुख भूमिका दारुल उल उलुम देवबंद के मोलाना ओबेदुल्ल सिंधी की थी। हसरत मोहानी इस सरकार में उप-सेनापति (लेफ्टीनेंट जनरल) बनाए गए थे। इस क्रांतिकारी इतिहास को 'रेशम के रूमाल' पर लिखे पत्र संदेशों के नाम से जाना जाता है।

अप्रैल 1916 में हसरत मोहानी को अत्यधिक खतरनाक व्यक्ति करार देते हुए तीसरी बार गिरफ्तार किया गया। विश्वयुद्ध के समाप्त होने के बाद वे रिहा हुए। बरतानिया साम्राज्यवाद ने मांटेस्ग्यू-चौम्सफोर्ड सुधार और रौलेट एक्ट जैसे दमनकारी कानून पारित किए। हसरत मोहानी ने अपनी मशहूर नज्म 'कागज के फूल जिनमें खुशबू नहीं होती" के जरिए संवैधानिक सुधारों के रास्ते पर आजादी आंदोलन को गुमराह करने की बरतानिया साम्राज्यवादी साजिश को बेनकाब किया। वे खिलाफत आंदोलन के मुख्य संगठनकर्ताओं में से थे। फिरंगी महल के अब्दुल बारी के साथ मिलकर ईद-उल-अजहा पर गोकशी नहीं किए जाने के ऐलान में उनकी प्रमुख भूमिका थी।

अलीगढ़ से कानपुर

हसरत मोहानी ने 1920 में कानपुर को अपनी प्रमुख कार्यस्थली बनाया। क्रांतिकारियों के साथ उनकी निकटता थी। कांग्रेस के 1921 में अहमदाबाद सम्मेलन में उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पेश किया था। गांधीजी ने इसका विरोध किया परंतु सम्मेलन में शाहजहांपुर से युवा प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खान ने उनका प्रबल समर्थन किया था।

कम्युनिस्ट आंदोलन की ओर

कानपुर से उन्होंने उर्दू-ए - मुअल्ला का प्रकाशन और स्वेदशी भंडार के जरिए राजनीतिक गतिविधियों की शुरुआत की। साइमन कमीशन के बहिष्कार के बाद कांग्रेस फिर से संवैधानिक सुधारों के रास्ते पर लौटी और नेहरू रिपोर्ट के जरिए औपनिवेशिक स्वराज की मांग पेश की। हसरत मोहानी ने नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया। कानपुर में एनी बेसेंट के नेतृत्व में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था। उसके साथ ही भारतीय

कम्युनिस्ट पार्टी का भी सम्मेलन हुआ। भारत में यह कम्युनिस्ट पार्टी का प्रथम सम्मेलन था। मौलाना हसरत मोहानी इसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष थे और 1928 तक कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रहे। स्थापना सम्मेलन में उनका स्वागत भाषण अत्यंत महत्वपूर्ण था, इसमें उन्होंने आजादी के बाद सोवियत संघ के नमूने के समाजवादी व गणतंत्र की स्थापना का लक्ष्य पेश किया था। हसरत मोहानी ने कानपुर से 1929 में 'मुस्तकिल' नाम से समाचार पत्र की शुरुआत की। 1932 में उन्होंने जमीयत उल उलेमा के सम्मेलन की सदारत की, 1937 का आम चुनाव कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने संयुक्त रूप से लड़ा था। हसरत मोहानी को मुस्लिम लीग के टिकट से कांग्रेस के समर्थित उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़े थे। चुनाव में मुस्लिम आरक्षित क्षेत्र और साधारण क्षेत्र से प्रतिनिधियों का चयन हुआ था। मंत्रीमंडल के गठन के दौरान चुनाव पूर्व यह गठबंधन टूट गया। कांग्रेस को जिन प्रांतों में बहुमत हासिल था उसने मुस्लिम लीग के साथ मिलकर सरकार बनाने से इंकार कर दिया।

संविधान की पैरवी

हसरत मोहानी हालांकि मुस्लिम लीग के सदस्य थे परंतु उनकी सक्रियता कम्युनिस्ट पार्टी के साथ थी, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में उनका झुकाव सोवियत संघ के प्रति था। उन्होंने 1938-39 में काहिरा (मिस्र) और फिलीस्तीन का दौरा किया। मुस्लिम लीग ने 1940 में पाकिस्तान के पक्ष में प्रस्ताव पारित किया। उस समय यह प्रस्ताव एक संप्रभु राज्य के तहत स्वायत्त प्रदेश के रूप में था। हसरत मोहानी ने पूरी कोशिश यही रही कि देश का विभाजन नहीं हो। उर्दू ए मुअल्ला में प्रकाशित उनके लेखों में उन्होंने भारत को स्वायत्त प्रांतों की संघ के रूप में गठित करने का पक्ष लिया। वे भारत की संविधान सभा के सदस्य थे। उनका मत था कि यह संविधान 1935 के ब्रिटिश इंडिया एक्ट के प्रारूप को आधार बनाकर बनाया गया है और भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप नहीं है। उन्होंने आस्ट्रिया, कनाडा, अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन के संविधानों पर भारतीय संविधान के निर्माण पर विचार किए जाने पर टिप्पणी करते हुए कहा था संविधान सभा में पूछा था कि दुनिया के सबसे बेहतरीन संविधान सोवियत संघ के संविधान पर विचार नहीं किया गया? उनका जोर संघात्मक व्यवस्था तथा शक्तियों के विकेंद्रित पर था। देश के विभाजन के बाद उन्होंने पाकिस्तान जाने से इंकार कर दिया। वे कानपुर में रहे।

13 मई, 1951 को उनका इंतकाल हुआ। उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें फिरंगी महल के कब्रिस्तान में दफनाया गया।

FORM -IV

1- Place of Publication: KURUKSHETRA
2- Periodicity of its Publication: Monthly
3- Printer's Name:
Appu Art Press, Shahkot (Punjab)
Nationality : Indian
Address : Appu Art Press, Shahkot, Distt: Jalandhar (Punjab)
4. Publisher's Name : Balwant Singh
Nationality : Indian
Address: H. No. 1062, Adrash Nagar, Near Pujab Senior Secondary School, Pipli (Distt. Kurukshetra) Haryana.
5. Editor's Name: Balwant singh
Nationality: India
Address: H. No. 1062, Adrash Nagar, Near Pujab Senion Secondary School, Pipli (Distt. Kurukshetra)
6. Name and addresses of individuals who own the newspaper or partners or shareholders holding more than one percent of the capital.
I, Balwant Singh hereby declare the particulars givrm above are true to the best of my knowledtge and belief.

Date.... *Signature of Publisher*

पंजाबी का प्रसिद्ध साहित्यकार व गीतकार महिंदर साथी इन दिनों अलविदा कह गये।

महिंदर साथी के इनकलाबी गीत मशाल बन कर लोगों का रस्ता दिखाते रहेंगेः
उनके गीतों की बानगी देखियेः

अंधेरे की अदालत में
नहीं फरियाद का फायदा
तू कर संग्राम ऐ साथी
जब तक रात बाकी है

मशालें जला कर चलना
जब तक रात बाकी है
संभल कर हर कदम रखना
जब तक राह बाकी है

जब तक रहेंगे सजकर
इस महफिल के उल्लू तो
पपीहे को सुनेगा कौन
जब तक रात बाकी है

मिलेगी मनसूर को सूली
जहर सुकरात के हिस्से
रहेगा जुर्म सच कहना
जब तक रात बाकी है

छोड़ो बात ही पसीने की
लहू मजदूर का यारो
यह सस्ता रहेगा पानी से
जब तक रात बाकी है

बनेगा इश्क यह मेरा
जब तक बारूद का खाजा
और तेरे हुसन ने बिकेगा
जब तक रात बागी है

रगड़ माथा तू मंदिर में
या मस्जिद में तू कर सिजदा
नहीं मिट पायेंगे दुख तेरे
जब तक रात बाकी है

हकीकत तो है यह कि
मिरजे मारे गये बांध कर
मगर छपेगा मुकाबला
कि जब तक रात बाकी है

मेरे माथ रहेगा तरकश
बना गुस्से के तीरों का
नहीं मिटेगे ये तेवर
जब तक रात बाकी हैं

लड़ेंगे अंत तक 'साथी'
तेरे साथ ऐ अंधेरे
नहीं बैठेंगे चैन से ये
जब तक रात बाकी ह

(पंजाबी से बलदेव सिंह महरोक द्वारा अनुवाद)

पृष्ठ 38 का शेष (युगांडा में..)

सफर, कानून के महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थ-व्याख्या, हत्या और नरबली में फर्क आदि विविध पहलुओं पर मार्गदर्शन किया। संगठन के कानून विभाग की कार्यवाह एड. मनीषा महाजन द्वारा बनाया गया सभी कानूनी पहलुओं की जानकारी देने वाला एक नोट फोरम को प्रेषित किया गया था।

इस वर्ष 4 मई को बर्नार्ड द्वारा (दी प्रिवेंशन अँड प्रोहिबिशन ऑफ हयूमन सेक्रिफाइस) इस कानून का प्रारूप युगांडा सरकार को प्रस्तुत किया, जो 21 मई को पारित हुआ। यह कानून पारित हो जाने पर बर्नार्ड ने महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के प्रति आभार प्रकट किया है।

उल्लेखनीय है की महाराष्ट्र की तर्ज पर कर्नाटक राज्य में भी जादूटोना विरोधी कानून पारित हुआ है। उस समय भी इस संगठन ने सहायता की थी। अन्य राज्यों में भी यह कानून पारित करा लेने के लिए वहाँ के बुद्धिवादी संगठनों के साथ महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति द्वारा संपर्क किया जा रहा है। सारे देश के लिए भी ऐसा कानून लागू हो इस लिए महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति प्रयासरत है।

चीनीः एक मीठा ज़हर

-योधा सिंह

चौलेंज अंक 16 (1-15 अक्टूबर) में एक लेख प्रकाशित हुआ था, 'अगर बदला नहीं गया, तो पूंजीवाद मानवता को 2050 तक भुना देगा।'

आज बड़ी आबादी भुखमरी या भूख से होने वाली बीमारियों का शिकार हो रही है, लेकिन समस्या अब यह है कि पूंजीवाद उन लोगों को खा रहा है जो पेट भर कर खाने की क्षमत रखते हैं। जहरीले कीटनाशक जैसे सब्जियां, फल, अनाज, मसाले व सामान्य रसोई में काम आने वाले पदार्थ जैसे शहद, या कृत्रिम घी, कृत्रिम दूध दही, एंटीबायोटिक से तैयार अंडे, मांस आदि आज हमारे स्वास्थ्य के लिए जहर साबित हो रहे हैं। अगर आप बीमार हैं, तो नकली और अनावश्यक दवाओं व टीके आपको निगलने के लिए तैयार हैं। यह कहना अब बहुत बड़ी बात नहीं है कि यदि नहीं बदला गया, तो पूंजीवाद मानवता को जहर देगा।'

आज हम चीनी व्यवसाय के बारे में बात करने जा रहे हैं कि कैसे विज्ञान ने इस जहर को अपनी चपेट में ले लिया है और इसे लोगों के नियंत्रण में लाया है, शोध और शोध पत्रों को चुप करा दिया गया है और एक नकली शोध कार्य के समानांतर है। यह पूंजीवादी व्यवस्था लोगों को जहर देकर मार रही है। 17 वीं शताब्दी में प्रति व्यक्ति चीनी की खपत 2 किलोग्राम प्रति वर्ष थी, 18 वीं शताब्दी में यह बढ़कर 8 किलोग्राम प्रति वर्ष हो गई और 19 वीं शताब्दी में यह 45 किलोग्राम प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष थी। 2012 में, एक अमेरिकी ने एक दिन में लगभग 220 ग्राम चीनी खा ली, जिसका अर्थ है कि लगभग 100 किलोग्राम की वार्षिक खपत।

'खांड दी ललाखा' क्या है?

चीनी का मतलब सिर्फ साधारण घरों में इस्तेमाल होने वाली दानेदार चीनी नहीं बल्कि सभी तरह की मिठाइयाँ हैं जिन्हें विज्ञान की भाषा में कार्बोहाइड्रेट कहा जाता है। दो प्रकार के ग्लूकोज और फ्रुक्टोज हैं, और फ्रुक्टोज सबसे खतरनाक है। अधिकांश जंक फूड, फास्ट फूड डिब्बाबंद और बोतलबंद खाद्य पदार्थों में चीनी सबसे खतरनाक है क्योंकि ये उत्पाद एक लंबी प्रक्रिया में बनते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी बच्चों को 'उच्च्य फ्रुक्टोज तरल' के रूप में चीनी मिलती है। इनमें फ्रुक्टोज और ग्लूकोज होते हैं जो आपस में नहीं जुड़े होते हैं, इसलिए शरीर को इसे पचाने के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। फ्रुक्टोज सीधे गुर्दे में जाता है जहां इसे वसा में परिवर्तित किया जाता है। डॉ. जोसेफ मर्सोला के अनुसार, 'फ्रुक्टोज (चीनी) आपके पाचन तंत्र को बेवकूफ बनाता है। यह कैसा है हमारे शरीर में दो हार्मोन निर्धारित करते हैं कि हमें भूख लगती है या नहीं। पहला 'ग्रेलिन' है और दूसरा 'लेप्टिन' है। जब पेट खाली होता है, तो गृहिणी मस्तिष्क को संकेत भेजती है कि उसे भूख लगी है। जब पेट भरा होता है, तो वसा कोशिकाएं 'लेप्टिन' का स्राव करती हैं, जो मस्तिष्क को संकेत भेजता है कि मस्तिष्क भूखा नहीं है। ठीक से खाएँ। फ्रुक्टोज दो काम करता है। पहला है ग्रेलिन को बंद रखना और दूसरा लेप्टिन को काम करने से रोकना। नतीजतन, हम दिन भर खाते हैं, इसलिए शरीर इंसुलिन 'रक्त शर्करा को नियंत्रित करने वाला हार्मोन' के प्रति अधिक प्रतिरोधी हो जाता है, जिससे मोटापा और मधुमेह होता है। हालिया शोध के अनुसार, चीनी शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता को भी कम करती है। 10 चम्मच चीनी डब्ल्यूबीसी (रक्त कोशिकाओं जो रोग से लड़ती है) की संख्या को 38ः तक कम कर देती है।

क्या मधुमेह कोकीन से भी बदतर है?

डॉ. सर्गेई अहमद (बोर्डो, फ्रांस) ने चूहों पर चीनी और कोकेन पर अपने प्रयोगों में पाया कि चीनी कोकीन से ज्यादा तेज थी। शुगर किक कैसे करता है? चीनी खाने के बाद, मस्तिष्क डोपामाइन नामक एक रसायन जारी करता है, एक हार्मोन जो अच्छे मूड या खुश मूड से जुड़ा होता है। जब

डोपामाइन का उत्पादन चीनी खाने के लिए अनुकूल होने लगता है, तो यह स्वाभाविक रूप से नहीं बनता है, जिसका अर्थ है कि चीनी का आदी व्यक्ति चीनी छोड़ने के बाद चिंतित और अकेला महसूस करने लगता है।

क्या शुगर खाने से कैंसर होता है?

2017 में, 'मेडिकल न्यूज टुडे' पत्रिका में एक लेख प्रकाशित किया गया था, जिसके अनुसार चीनी से समृद्ध आहार खाने से स्तन कैंसर का खतरा बढ़ जाता है (अधिक जानकारी के लिए आप स्तन कोशिकाओं में इंसुलिन की क्रिया के तंत्र के बारे में पढ़ सकते हैं)। यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह शोध लगभग 50 साल पहले खोजा गया था, इसके शोध पत्र प्रकाशित या पढ़े गए थे, यह बहुत दूर की बात है, इसे उड़ान भरने की अनुमति नहीं थी। शोध पत्रिका प्लस बायोल जी में इस सप्ताह प्रकाशित एक लेख के अनुसार, कैंसर और चीनी के बीच लिंक की खोज पहली बार 1960 के दशक में हुई थी। 1960 के दशक में हृदय रोगियों की बढ़ती संख्या के साथ, यह सवाल उठता है कि असली अपराधी कौन था – चीनी या वसा? द न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में 1967 में प्रकाशित एक लेख ने मधुमेह और बेईमान मधुमेह पर वसा को दोषी ठहराया। लेकिन इस लेख के लेखक शुगर रिसर्च फाउंडेशन द्वारा जेम 50,000 का दान अभी भी सवालों के घेरे में है।

फिर 1968 में 'प्रोजेक्ट 259' आया, जिसका उद्देश्य शरीर में भोजन में विभिन्न पोषक तत्वों के प्रभाव के साथ-साथ शरीर में मौजूद सूक्ष्म जीवों पर उनके प्रभाव को देखना था। स्टैंटन ग्लेंगे, शोध पत्रिका 'प्लस बायोल जी' के वरिष्ठ लेखक रिपोर्ट परियोजना 259 के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी साझा करती है। प्रोजेक्ट 259 के दौरान, चूहों पर भोजन के लिए प्रयोग किए गए थे। कुछ चूहों को सामान्य आहार दिया गया और कुछ चूहों को चीनी से भरपूर आहार दिया गया। चीनी खाने वाले चूहों में कैंसर की दर 50प्रतिशत से अधिक थी। इस बीच, यह स्पष्ट हो गया कि मूत्राशय के कैंसर को बीटा-ग्लूकोरोनिडेस से सीधे जोड़ा गया था। आंकड़े यह भी बताते हैं कि बीटा-ग्लुकुरोनीडेज इनहिबिटर सामान्य खाने वाले चूहों के मूत्र में मौजूद थे, लेकिन इन पदार्थों में शर्करा युक्त चूहों में कमी पाई गई, जिससे कैंसर हो गया। पावर नामक एक वैज्ञानिक, जो इस पर काम कर रहा था, ने परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए और अधिक पैसा और समय मांगा, लेकिन एसआरएफ ने इनकार कर दिया। सरकार द्वारा इस परियोजना को बंद कर दिया गया था। सुगर एसोसिएशन (यूएसए) के अनुसार, परियोजना की लागत बजट से बाहर थी, जिसके कारण परियोजना बंद हो गई। अब हम समझ सकते हैं कि यह बहाना कितना प्रभावी है। प्रोफेसर ग्लेंगे के अनुसार, 'प्रोजेक्ट 259 आगे नहीं बढ़ सका क्योंकि इसकी प्रगति चीनी उद्योग के आर्थिक हितों के लिए हानिकारक थी।'

चीनी हमारे भोजन का हिस्सा कैसे बने?

चीनी पर उपरोक्त शोध सामने आने के बाद, उनके आर्थिक और राजनीतिक युद्धाभ्यास के साथ चीनी उद्योग के शक्तिशाली समूह ने शुरू से ही उन्हें दबा दिया और यह झूठ बनाया कि वसा सभी रोगों का मूल कारण है। इसके बाद 70 के दशक में झूठी रिपोर्टें, शोध, विज्ञान और मीडिया थे, जिसके कारण वसा रहित खाद्य पदार्थों की बाढ़ आ गई। वसा के निष्कर्षण के कारण, इसके स्वाद को बनाए रखने के लिए इसमें चीनी की मात्रा कई गुना अधिक थी। नतीजतन, उद्योग ने खाद्य और पेय कंपनियों, विशेष रूप से जंक और फास्ट फूड के लिए भारी मुनाफा कमाया है, और आम जनता को मोटापे, मधुमेह और अन्य बीमारियों से पीड़ित होना पड़ा है। पेप्सी, कोका-कोला, मैकड नल्ड्स और अनगिनत अन्य प्रसिद्ध ब्रांड दुनिया की एक बड़ी आबादी के दैनिक आहार का हिस्सा बन गए हैं। अब स्थिति यह है कि एक ओर चीनी उद्योग लोगों को बीमार बनाकर मुनाफा कमा रहा है और दूसरी ओर इस मीठे जहर की चर्बी को कम करने या अन्य बीमारियों का इलाज करने या अन्य बीमारियों का शिकार बनाने का कारोबार अरबों में फैल चुका है। इस तरह से न केवल लोगों के भोजन में यह मीठा जहर परोसा गया, बल्कि लोगों की खाने की आदतें और स्वाद भी उसी के अनुसार बनाए गए। नतीजा आज हमारे सामने है। डायबिटीज और मोटापे जैसी बीमारियाँ अब केवल अमेरिका या पश्चिमी देशों में

ही नहीं बल्कि भारत में भी आम हैं। भोजन में परोसा जा रहा यह मीठा जहर अमीर और गरीब की परवाह नहीं करता है। मुनाफाखोरी की लत इतनी भयावह है कि इसने चीनी उद्योग और इसके सहयोगियों को अपने बच्चों की प्लेटों पर मीठा जहर परोसने के लिए मजबूर कर दिया है।

सभी के लिए, आज की पूंजीवादी व्यवस्था के लिए, केवल लाभ आवश्यक है, चाहे वह उद्योग हो या कृषि। आज पूँजीवादी कृषि से जहर निकल रहा है, कुछ लोग समझा रहे हैं कि इसका मुख्य कारण उद्योग है, लेकिन जहर जहर है। इस शोषणकारी प्रणाली में, भूख, खराब आहार, गंदी हवा और पानी के कारण होने वाली मौतों के आंकड़े हैं। यह प्रणाली समाज में सभी प्रकार के विज्ञान की प्रगति के साथ जुड़ी हुई है। यह व्यवस्था हर क्षेत्र में विफल हो रही है। इस व्यवस्था को जल्द से जल्द बदला जाना चाहिए।

'परिवर्तनशील युवाओं की चुनौती' अंक 18 से साभार

राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता वर्तमान युग का कोढ़ है, उसी तरह जैसे मध्यकालीन युग का कोढ़ सांप्रदायिकता थी। नतीजा दोनों का एक हैं सांप्रदायिकता अपने घेरे के अंदर पूर्ण शांति और सुख का राज्य स्थापित कर देना चाहती थी, मगर उस घेरे के बाहर जो संसार था, उसको नोचने-खसोटने में उसे जरा भी मानसिक क्लेश न होता था। राष्ट्रीयता भी अपने परिमित क्षेत्र के अन्दर राम राज्य का आयोजन करती है। उस क्षेत्र के बाहर का संसार उसका शत्रु है। सारा संसार ऐसे ही राष्ट्रों या गिरोहों में बंटा हुआ है, और सभी एक-दूसरे को हिंसात्मक संदेह की दृष्टि से देखते हैं और जब तक इसका अन्त न हो, संसार में शांति का होना असम्भव है। जागरूक आत्माएं संसार में अन्तर्राष्टीयता का प्रचार करना चाहती हैं और कर रही हैं, लेकिन राष्ट्रीयता के बंधन में जकड़ा हुआ संसार उन्हें ड्रीमर या शेखचिल्ली समझकर उनकी उपेक्षा करता है। **-प्रेम चन्द**

स्मृति शेष

1. तर्कशील साथ दयानंद, चमारखेड़ा की माता जी का दिनांक 5-5-2021 को देहांत हो गया है।

2. तर्कशील साथी आत्मा सिंह के छोटे भाई जिनकी उम्र मात्र 45 वर्ष थी का दिल का दौरा पड़ने से 1 जून, 2021 को देहांत हो गया। वे पंजाब के चीमा कस्बे में रह कर अपनी वर्कशाप चला कर जीवन यापन करते थे।

3. प्रा. बलवंत सिंह, संपादक तर्कशील पथ के छोटे भाई हरजीत सिंह की पत्नी अमरजीत कौर का दिनांक 6-5-2021 को 53 वर्ष की आयु में ही निमोनिया व फेफड़ों में इंफेक्शन होने के कारण निधन हो गया।

4. समाज सेवी व अध्यापक सुखवीर जोगा का 4 जून, 2021 के दिन फेफडों की गंभीर बीमारी के कारण असामयिक देहांत हो गया। वे कई सालों से फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित थे। वे तर्कशील विचारों के थे और समर्पित समाज सेवी थे।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा उपरोक्त बिछड़ें साथियों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करती है।

-महासचिव, तर्कशील सोसायटी हरियाणा

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप न. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/ अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

रागणी

इक भारत इक इण्डिया

-रामेश्वर 'गुप्त

सियासी लोग तो खेल रहे सैं, बणा देश की गिण्डिया
एक देश म्हं हुए देश दो, इक भारत एक इण्डिया

भारत के म्हं भूखे नंगे, सैं डरे-डरे से चेहरे
सदा दया की भीख मांगते, हाथ कटोरे ले रे
किस्मत, राम, वाहेगुरु, अल्ला, के अंडे सै रे
पार उतरणा मुश्किल होग्या, टूटी कश्ती खे रे
डर तै उछलैं रात-रात भर, उड़ती जा री निंदिया

इण्डिया आले घाघ पुराणे, काबू म्हं नहीं आते
सबका लें यें खोस टुकड़ा, खीर-मलाई खाते
भारत आली लक्ष्मी नै, यें धक्के तै घर ल्याते
जो कोई कुछ कह दे तो, उस नै आंख दिखाते
म्हारी आली नहीं सुहाती, तन की पट्टी चिंदिया

भारत म्हं नब्बे रहते, इण्डिया वाले दस भारी
मुट्ठी भर 'इण्डिया' वाले सुविधा ठा रे सारी
तंगी के कारण भारत की, सांस उखड़ती जा री
'इण्डिया' वालों के हिस्से म्हं, कोठी, पीस्से, लारी
हेरा-फेरी इण्डिया के, माथे की बण गी बिंदिया

दास और दासी ना चाहिए, ना ही राजा और राणी
एक बराबर हों सारे, इसी लिख द्यो नई कहाणी
एक हाण्डी म्हां दो पेटां की, बात नहीं सैं स्याणी
'रामेश्वर' पै नई सीख ल्यो, अब छोड़ो बात पुराणी
'इण्डिया' की इंगलिश राणी, दासी हो गई हिन्दिया

आर्थिक सहयोग

बलदेव सिंह महरोक, कुरुक्षेत्र ने अपनी पोती का पहला जन्म दिन मनाने की खुशी में तर्कशील सोसायटी हरियाणा को 1000 रुपये (एक हज़ार रुपये) का अर्थिक सहयोग दिया है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा उनके इस सहयोग के लिए उनका हार्दिक आभार प्रकट करती है।

महासचिव,
तर्कशील सोसायटी हरियाणा

समाचार है कि...

धर्म का नशा अन्य सभी नशों से अधिक उन्मादी होता है । इस नशे से ग्रस्त व्यंक्ति के अंदर स्वयं तक को बलिदान कर देने की ताकत भर जाती है- किसी सुखद जन्नत की उम्मीद में। अपने शरीर पर बम बांधकर अपने आपको उड़ा सकता है। अपने परिवार तक को बलिदान कर सकता है। सभी रिश्तों को तिलांजलि दे सकता है।

यह कैसा नशा है जो प्रकृति ने मानव के अंदर भर दिया है?

हां, इनसान के अंदर की इसी कमजोरी का फायदा उठाकर जनता को उलझाये रखना और सत्ता पर काबिज रहना हर देश, हर काल में शासकों की नीति रही है।

धर्म और सत्ता के गठजोड़ को न समझ कर हम भारत के लोग पिछली अनेक सदियों से विभिन्न देशी और विदेशी शासकों की अधीनता स्वीकार करते चले आ रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् भी हमारे अपने सत्ताधारियों द्वारा धर्म और जाति के नाम पर जनता को उल्लू बनाना लगातार जारी है; कभी गऊ हत्या का डर दिखा कर, तो कभी धर्म को खतरा बता कर।

इन दिनों धर्मांतरण पर रोक लगाने का एक नया शगूफा सामने आ रहा है। बीते 27 मई को उत्तरप्रदेश के शाहजहांपुर के तिलहर की रहने वाली एक युवती रेणु गंगवार ने अपनी इच्छा से मुस्लिम धर्म ग्रहण किया तो उसे धमकिया मिलनी शुरू हो गई, और लगातार दबाव बनाया जाने लगा कि वह वापिस हिंदू धर्म ग्रहण करे अन्यथा परिणाम गंभीर होंगे। कुछ मीडिया वाले और धार्मिक संगठनों ने उसके परिवार को भी धमकिया दीं जो अब तक जारी हैं, बावजूद उसके कि वह बार-बार कह रही है कि उसने बिना किसी दबाव के अपनी मर्जी से धर्म परिवर्तन किया है। 26 जून को उसके पिता को पुलिस उठा कर ले गई। तब उसने उच्च न्यायालय से प्रार्थना की कि धर्मिक गुण्डा तत्वों से उसे सुरक्षा दी जाये। वह व्यस्क है और उसने धर्म परिवर्त अपनी मर्जी से किया है।

अब उच्च न्यायाल ने उसकी बात मान ली है और पुलिस को उसे सुरक्षा प्रदान करने के निर्देश दिये हैं।

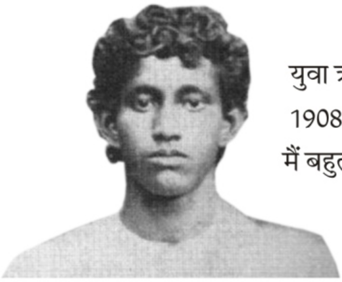
किसी धर्म में आस्था रखना या न रखना या किसी भी धर्म को बिल्कुल न मानना किसी व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता होती है। परंतु अब हम उस दौर में से गुज़र रहे हैं जब हमसे वह स्वतंत्रता छीनने का भी प्रयत्न किया जा रहा है। यहां तक कि इन तत्वों को दूसरे धर्म का साहित्य पढ़ने वालों पर भी आपत्ति रहती है। कुछ लोगों पर इसलिए देशद्रोह के मामले बना दिये गये क्योंकि उनके घर से दूसरे धर्म का साहित्य मिला। यानि आप अपनी मर्जी से भी कुछ नहीं पढ़ सकते। अपने ज्ञान वृद्धि के लिए दूसरे धर्म का साहित्य आप अपने घर में नहीं रख सकते।

जब आस्था और अनास्था की बात चल रही है तो नास्तिक लोगों को तो और भी कठिनाइयों का समाना करना पड़ता है। समाज की तरफ से भी और सत्ता की तरफ से भी।

वर्ष 2019 में तामिलनाडु की एम.ए.स्नेहा नाम की एक 35 वर्षीय महिला जो तामिलनाडु की तिरुपथूर में एडवोकेट है, का बचपन से ही किसी धर्म में विश्वास नहीं रहा। यहां तक कि उसका सारा परिवार भी नास्तिक है। यही नहीं जिस परिवार में उसने शादी की, वह परिवार भी पूरी तरह नास्तिक है। महिला ने कभी अपने किसी फार्म के जाति, धर्म कालम में 'कोई धर्म नहीं, कोई जाति नही' ही लिखा। परिणामत: उसके सभी प्रमाणपत्रों में जाति वह धर्म के कालम खाली हैं। सरकार से इस बारे कि 'उसका कोई धर्म या जाति नहीं' है, का प्रमाणपत्र हासिल करने के लिए इस जागरूक महिला को एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा। कई वर्षो तक सरकार के सामने तर्क पेश करने के पश्चात् आखिर उसे स्र्टीफिकेट दिया गया और ऐसा सर्टीफिकेट प्राप्त करने वाली देश की वह ऐसी पहली महिला बनी।

जी हां, अगर एक तरफ धर्म का नशा है तो दूसरी तरफ नास्तिक होने का भी एक अलग ही नशा है।

-बलदेव सिंह महरोक



शहीद खुदी राम बोस

युवा क्रांतिकारी देशभक्त खुदीराम बोस को 18 साल 8 महीने और 8 दिन की उम्र में 11 अगस्त 1908 को बिहार के मुजफ्फरपुर में फांसी दे दी गयी थी। फांसी के वक्त उनकी जुबान पर था कि मैं बहुत गरीब हूँ, भारत माँ को देने के लिए ... जान के अलावा मेरे पास कुछ भी नहीं है।

खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसंबर 1889 को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर में हुआ था। वह 9वीं कक्षा में ही स्वतंत्रता आंदोलन में कूद गए थे। 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में हुए आंदोलन में भी उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। खुदीराम बोस स्कूल के दिनों से ही राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेने लग गए थे। वे जलसे जुलूसों में शामिल होते थे और अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ नारे लगाते थे। उन्होंने 9वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। स्कूल छोड़ने के बाद खुदीराम रिवोल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने और वंदे मातरम् पैंफलेट वितरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 28 फरवरी 1906 को सिर्फ 17 साल की उम्र में उन्हें पहली बार गिरफ्तार किया गया था, लेकिन वह अग्रेज़ों को चकमा देकर जेल से भाग निकले थे। हालांकि, सिर्फ दो महीने के बाद उन्हें दोबारा पकड़ लिया गया था। 6 दिसंबर 1907 को बंगाल के नारायणगढ़ रेलवे स्टेशन पर किए गए बम विस्फोट की घटना में भी बोस शामिल थे।

कई देशभक्तों को कड़ी सजा देने वाले किंग्सफोर्ड को सबक सिखाने के लिए खुदीराम ने अपने साथी प्रफुल्लचंद चाकी के साथ मिलकर 30 अप्रैल 1908 को सेशन जज की गाड़ी पर बम फेंक दिया, लेकिन गाड़ी में सेशन जज की जगह उसकी परिचित दो यूरोपीय महिलाएं कैनेडी और उसकी बेटी सवार थीं. इस हमले में किंग्सफोर्ड की दोनों महिलाएं मारी गईं, जिसका खुदीराम और प्रफुल चंद चाकी को काफी अफसोस हुआ था। इस हमले के बाद खुदीराम अंग्रज़ों के निशाने पर आ गए एक बार अंग्रजों ने वैनी स्टेशन पर खुदीराम और प्रफुल चंद को घेर लिया। अपने को पुलिस से घिरा देख प्रफुल ने खुद को गोली मार ली, जबकि खुदीराम पकड़े गये। इसके बाद मुजफ्फरपुर जेल में महज़ 19 साल की उम्र में 11 अगस्त 1908 को उन्हें फांसी पर लटका दिया गया।

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

प्रो. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।